चन्दामामा

दीपावली विशेषांक

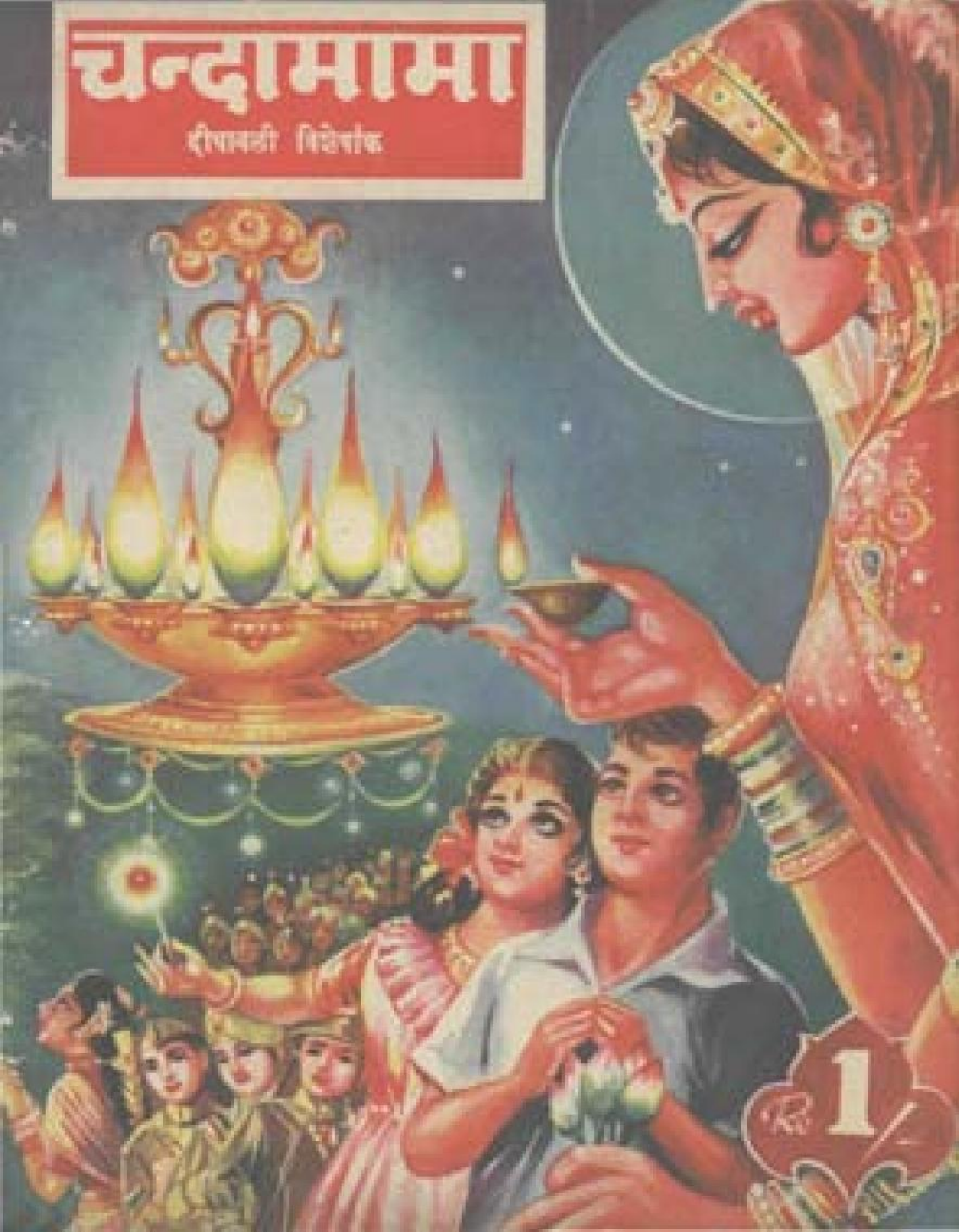

रु 1

For the first time in India the revolutionary electronic engraving machine in action

VARIO KLISCHO GRAPH

WHAT IT MEANS TO YOU

Block making time reduced from days to a few hours • Electronic control of gradation and detail sharpness • Electronic adjustment of colour correction

CHANDAMAMA PRESS - CHANDAMAMA BUILDINGS - MADRAS-26

दुधमुँहे
बच्चों के लिये
डाबर
की नई देन....

डाबर
जन्मघूँटी

डाबर
(डा० एस० के० बर्मन) प्राइवेट लि०,
कलकत्ता-२९

चन्दामामा

नवम्बर १९६५

★

विषय - सूची

सैंपादकीय	१	सीधी गईबयाला	४९
भारत का इतिहास	२	दाँव पर दाँव	५५
नेहरू की कथा	५	साहसी कन्या	५९
नवाबनन्दिनी (धारावाहिक)	९	उत्तरकाण्ड (रामायण)	६५
सर्वनाश	१७	साहसी (अईत कथा)	७३
स्त्री को क्या प्रिय है ?	२५	भद्रायु की कथा	८१
मनुष्य की सहायता	२७	संसार के आश्चर्य	८५
महा शक्तिशाली (रोचक कथा)	३३	फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता	८८

★

विक्स वेपोरब तुरन्त आराम पहुंचाता है...
आपका बच्चा आसानी से सांस ले सकता है...वह रात भर आराम से सो सकता है।

आपके बच्चे की सुख-सुविधा आप पर ही निर्भर है। इस लिए जब आपके बच्चे में सर्दी-ज़ुकाम के आरम्भिक लक्षण दिखाई दें, जैसे नाक का बहना, आंखों से पानी गिरना, गले का बैठ जाना, सांस लेने में तकलीफ़, तो विक्स वेपोरब मलिये।

विक्स वेपोरब आपके बच्चे के सर्दी-ज़ुकाम का सर्वोत्तम इलाज है क्योंकि यह सर्दी से प्रभावित उन सभी भागोंपर, जैसे नाक, छाती और गले में, जहां सर्दी की पीड़ा सबसे ज़्यादा होती है, असर करता है और आपके बच्चे की कोमल त्वचा को इससे तनिक भी क्षति नहीं पहुंचती।

बस विक्स वेपोरब मलिये और अपने बच्चे को कम्बल ओढ़ा कर आराम से बिस्तरपर सुला दीजिये। विक्स वेपोरब अपना काम करता रहेगा। जबकि आपका बच्चा रात भर चैन की नींद सोता रहेगा। सुबह तक सर्दी-ज़ुकाम की पीड़ा जाती रहेगी और आपका लाड़ला कुन्दा स्वस्थ और हंसता-खेलता उठेगा।

विक्स वेपोरब ३ साइज़ में

BAGS & PRINTS

VELECHERRI :: MADRAS-42

★

MANUFACTURERS OF ALL KINDS OF PAPER BAGS IN VARIOUS SIZES

★

Office: 16, STRINGERS STREET, MADRAS-1

Phone Case: 23919

अल्बो-सांग

सभी उम्र के लिए एक आदर्श टॉनिक

एसे स्वस्थ रखने के लिए आपको अल्बो-सांग की आदत चाहिये। क्यों कि अल्बो-सांग में ऐसे विशेष तत्व होते हैं जो बुच्चों और बड़ों के शरीर को स्वस्थ बनाते हैं। अल्बो-सांग आज ही खरीदें, हर रोज खरीदें और सदा हमेशा स्वस्थ बने रहें।

जे. एण्ड जे. डीशेन

देहरादून (यू. पी.)

बच्चों के लिए अनुपम भौज एवरेस्ट टाईनी टोट

चाहे बच्चों को अपनी पसंद की खाने या पीने की सामग्री, ठंडी या गरम, स्कूल ले जाने के लिए बनाया हुआ "टाईनी टोट" एवरेस्ट वैकुयम फ्लास्क की सभी वैशिष्ट्य एवं सामग्री से युक्त है।

अपने बच्चों के लिए खास बना हुआ "टाईनी टोट" क्या आज ही दिलाएंगे? उनकी अनूठी प्रतिभा के विकास में महत्वपूर्ण "टाईनी टोट" विशेष सहयोग देगा। आज के बच्चे कल के नागरिक हैं।

EVEREST

TINY TOT

विक्टरी फ्लास्क कम्पनी प्रा० लि०

बम्बई ★ कलकत्ता ★ दिल्ली ★ मद्रास

कर्तव्यही साधना है!

बराहलाल
देवक कहते हैं,
"कठिनाई आराम और सुख का नहीं,
किन्तु निरंतर परिश्रमोंका बनाता आनंद"।
भाई, इस की कर्तव्यके प्रति निष्ठा रखकर उसकी बराबर
आवश्यकों अहमन्यकी उपस्थिति करें और अधिक उत्पादन से
राष्ट्रको समृद्ध बनायें।

जे. बी. मंचरजी एण्ड कं.

मालिक और डिस्ट्रीब्यूटर्स

CJB-69 HM

नौजवानों की पसन्द है

फ़िलिप्स

नौजवान फ़िलिप्स को पसन्द करते हैं— कार्यकलाप शक्ति, फ़ैशनदार के डीलक्स, अनुरूपकारीन शक्ति... और फिर वे अनुकूलित शक्ति जिसके जिसी की कमी नहीं... विनोदशील शक्ति जिसके कारण विनिर्दिष्ट उत्पादन अधिकार की ओर बढ़ते हैं। आपको पता कि आप जैसे नौजवान... फ़िलिप्स को क्यों? के कुछ कारण हैं। फ़िलिप्स अनुकूल है (यह उस ढंग के उत्पादन से बना है)— कम्पनी ने इसकेवाल कॉलेज की मजबूती बनाए रखने के लिये बना है। फ़िलिप्स सुन्दर भी तो है। इसका डायनेमो, हेडिलाइट) आदि उसकी पेडुलम अडिजिंग का कार्यक्रम प्रतीक है। एक पेंच साइकिल, हर्ष इंडिकेटर से, जो इस पूरे के साथ-साथ नौजवानों के लिये खास तौर से उत्पादित किया गया है।

आप पसन्द करेंगे

फ़िलिप्स

टी. आई. साइकिल्स आफ इंडिया,
अम्बत्तूर, मद्रास-५३.

TIC/PH-27613A

"(मालिक: टयूब इन्वेस्टमेन्ट्स आफ इण्डिया लिमिटेड, मद्रास)"

R. K. INDUSTRIES

VELECHERRI :: MADRAS-42

★

Offers: POLYTHENE TUBES, BAGS, SHEETINGS, ETC.,

★

Office: 16, STRINGERS STREET, MADRAS-1

Phone Gare: 23526

YOUR GUIDE TO BEAUTY

National's (Regd.)

Kashmir

SNOW & TALCUM POWDER

Manufacturers: THE NATIONAL TRADING CO.,

BOMBAY-2 ★ MADRAS-32

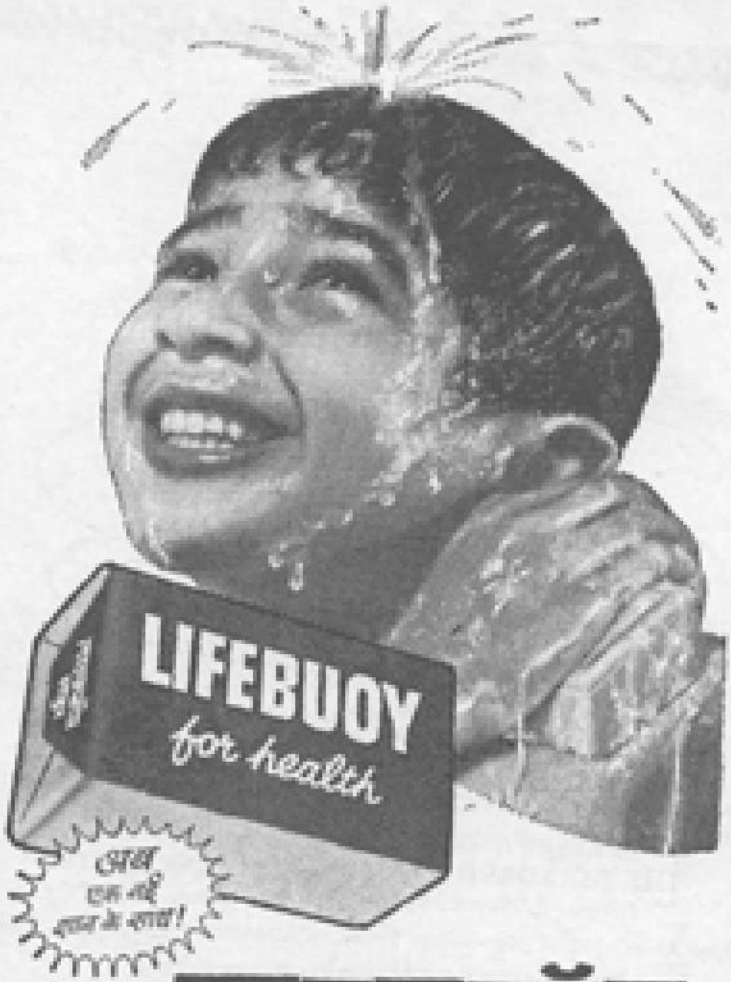

लाइफ़बॉय

है जहाँ तंदुरुस्ती है वहाँ

L 47-17 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

Please! DON'T RUN AROUND..

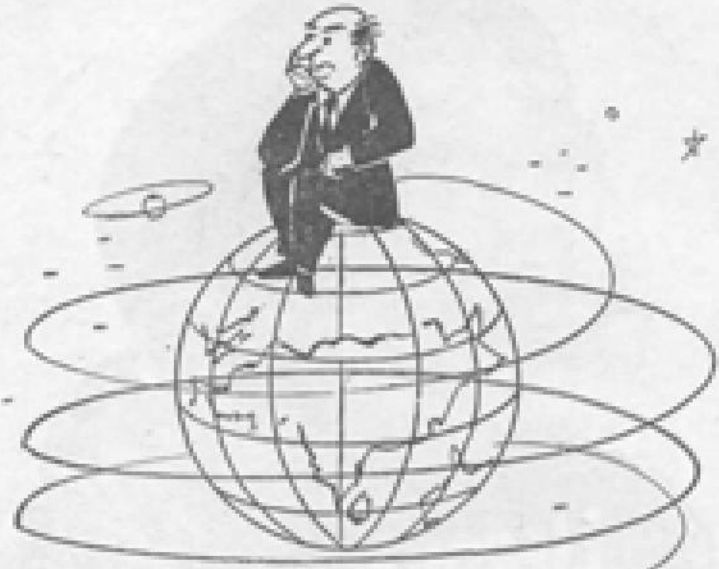

...the Planet...

COME STRAIGHT
TO

THE STANDARD PRINTING MACHINERY CO.,

Office: 9, Mount Road, MADRAS-2 *Phone:* 81845

Show Room: 12/81, Sambudoss Street, MADRAS-1. *Telephone:* 25096

Workshops: **THE STANDARD WORKSHOPS,**
39/1, Madhavaram High Road, Sembium, MADRAS-11 *Telephone:* 62903

THE STANDARD TYPE FOUNDRY PRIVATE LTD.,
DELHI ○ BOMBAY ○ CALCUTTA

For

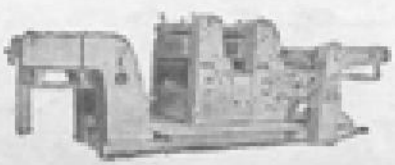

G.D.R. make Planeta Super Offset Printing Machines, available in various sizes...Also Reproduction Cameras... Aniline Printing Machines ... W E B Offset and Gravure, Platen Varnishing, Calendaring Machines.

सारे परिवार के स्वास्थ के लिये फॉसफोमिन

फॉसफोमिन विटामिन बी काम्प्लेक्स तथा मल्टिपल सिनक्रोफास्फेट से युक्त एक अद्भुत टॉनिक है जो आपके परिवारको बलवान, चुस्त और स्वस्थ रखेगा। फॉसफोमिन के केवल थकावट और कमजोरी का दावोनिदान नहीं रहेगा। फॉसफोमिन थकावटको मिटाता है। भूख बढ़ाता है। आत्मविश्वास बढ़ाता है। शरीर को बलवान बनाता है। हर उम्र के स्वास्थके विटामिन टॉनिक... फॉसफोमिन से आपके सारे परिवारका स्वास्थ बना रहेगा।

A century of experience builds faith

शहतुल्य निवास और स्वादिष्ट भोजन के लिए

न्यू माड़र्न होटल

शाकाहारी - बोर्डिन्ग - लाजिंग - रेस्टोरेंट

डायमण्ड रोड़, विश्वेश्वरपुरं, बेङ्गलोर - ४.

(सिल्वर जुबली के समीप)

कमरे सुन्दर रूप से सज्जित, दिन रात बहता ठंडा और गरम पानी

डिनर और टी पार्टी के लिए विशेष कमरे भी हैं।

फोन: ७२८४९ और २७६६०

यकृत के विकार ?

इसे दीजिये

जम्मी का लिवरक्योर

बच्चों के यकृत व
प्लीहा विकारों की मशहूर दवा

जम्मी वेंकटरमणय्या एंड सन्स, मद्रास - ४

शाखाएं : बम्बई - ४; कलकत्ता - ७; दिल्ली - ६; कानपुर - १;
लखनऊ; पटना - ४; आदि।

[V-16 (N) HIN

मां ने इसे उषा से सीया है।
वह कहती है उषा से सीना
कितना आसान है, मगर मुझे तो
मशीन छूने तक नहीं देती है,
कहती है जब मैं बड़ी हो जाऊंगी
तब वह मुझे एक उषा सिलाई
मशीन ले देंगी। मां कहती है
इसमें "बचत" भी होती है।
मुझे बचत-वचत का मालूम नहीं
मालूम, होगी कोई ऐसे-वैसे
की बात।

देखियो तो सही
मेरी नई
फ्रॉक!

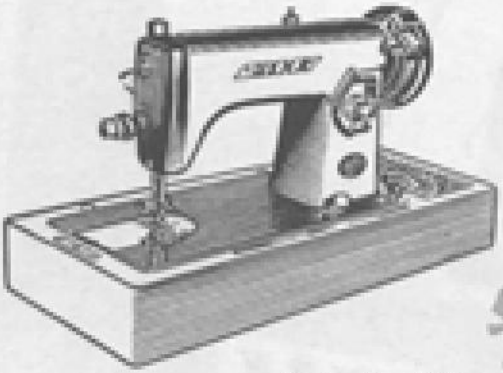

आराम की सिलाई मशीनें –

उषा

श्री सिलाई मशीन्स

(JV) उषानगर

ज्ञ इंडियन्स एण्ड सिंगर,
कलकत्ता-31.

स्पेक्ट्रम
रंगीन पेन्सिल

नक्शों के लिये, नक्शा बनाने, व चित्र बनाने के लिये, ये पेन्सिलें अत्यन्त अवश्यक हैं। तरह तरह के रंगों में ये प्राप्य हैं।

निर्माता:

दी मद्रास पेन्सिल फेक्टरी

मद्रास - २१

एल ॲण्ड सी हार्डमुथ (ग्रेट ब्रिटेन) लिमिटेड
कोहिनूर पेन्सिल फॅक्टरी, इंग्लण्ड की तांत्रिक सहकार प्राप्त।

दिलीप और साथी
शिकार में...
दिलीप देखा तुमने! वह तोता ठीक से नहीं उड़ पा रहा है।
अरे! बेचारे के पंख में चोट है! हम उसे पकड़ेंगे। चलो साथियो, चलो!
कैसे हो उसको, उस तरफ उड़ते देखा!
दिलीप, उसका पंख तो हल्का सा घायल हो है। हम उसे मारने को नहीं देंगे।
अच्छा दिलीप! तुम चाहते हो कि किस तरह तुम्हें वह दे दी है।
अच्छा हो कोई और ही पाए।
अच्छा है कि हमारा 'प्लेनेट' तार्क हमारे काम है।
हाँ वहीं वहीं! वहां वहां वह है।
हमारा प्यारा दिलीप!
देखा, वह रही चिड़िया —वहाँ पर। बेचारा छिप गया है।
हम उसे पाल सकते हैं।
दिलीप, हमारे 'प्लेनेट' तार्क में ही इसे बचाना।

ब्रिटेनिया
ग्लैक्सो

ब्रिटेनिया
बिस्कुट

चन्दामामा

संपादक: चक्रपाणी

हमारे देश को, जिसने गान्धी जी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता संग्राम भी अहिंसामय साधनों से चलाया था, स्वतन्त्रता प्राप्त करते ही, पाकिस्तान से लड़ने के लिए उतरना पड़ा। उस लड़ाई के खतम होने के बाद भी दोनों देशों में मैत्री और शान्तिपूर्ण सम्बन्ध न स्थापित हो सके। यही नहीं, फिर युद्ध की ज्वालाएँ भड़कने लगीं। इस अवाँछित युद्ध का भी एक वाँछनीय परिणाम हुआ। देश की जनता ने बिना किसी जाति और धर्म आदि भेद के असाधारण एकता प्रदर्शित की। हमारे सैनिक और वैमानिकों ने अद्वितीय शौर्य दिखाया। अच्छा ही है कि विजयदशमी और दीपावली के पहिले ही युद्ध समाप्त हो गया।

वर्ष: १७ नवम्बर १९६५ अंक: ३

शाहजहाँ १६५७ में जब बीमार पड़ा, तो उसके चारों लड़के काफी बड़े थे। दाराशिकोह (४३) शुजा (४१) औरंगजेब (३९) मुराद (३३) ये ही नहीं, उसकी दो लड़कियाँ थीं। बड़ी जहाँनारा दाराशिकोह की तरफ थी और दूसरी रोशनारा, औरंगजेब की ओर थी। पिता के सबसे अधिक निकट दारा था। शाहजहाँ चाहता था कि वह ही उसके बाद गद्दी पर आये। दारा धर्म आदि में उदार था। उसने वेदान्त, बाईबल, सूफी ग्रन्थ पढ़े थे। उसने ब्राह्मण पंडितों की सहायता से, अथर्ववेद और उपनिषदों का फारसी में अनुवाद भी किया था।

दूसरा शुजा, बेन्गाल का गवर्नर था। वह युद्ध में पराक्रमी तो था, पर इतना विलासी था कि वह नशे में रहता, और काम काज की परवाह न करता। चौथा मुराद गुजरात का गवर्नर था। वह निष्कपट, उदार, साहसी था, पर बड़ा निखट्टू था। नेतृत्व करने के योग्य न था।

तीसरा औरंगजेब ही सब तरह से सबसे अधिक समर्थ था। मेहनत करके काम करता। राजनीति और युद्धतन्त्र में प्रवीण था। असाधारण शासन प्रतिभा थी।

शाहजहाँ को जब बीमारी हुई, तो आगरा में केवल दारा ही था। यह खबर पाकर, उसके भाइयों ने सोचा कि उनका पिता सचमुच मर गया होगा, और उनका भाई, उनसे यह खबर छुपा रहा था। बेन्गाल की राजधानी, राजमहल में शुजा ने घोषित किया कि वह ही बादशाह था। वह अपने लड़के सुलेमान और लोगों को

लेकर दिल्ली के लिए निकल पड़ा। बनारस पहुँच जाने के बाद, फिर उसे वापिस बेनगाल जाना पड़ा।

१६५७ में ५ दिसम्बर को, मुराद ने अहमदाबाद में, अपने को बादशाह घोषित किया। मालवा में वह औरंगजेब से मिला। दोनों ने खुदा और कुरान की कसम खाकर एक समझौता किया। उसके अनुसार लूटे जानेवाले धन में एक हिस्सा मुराद का और दो हिस्से औरंगजेब के थे। गद्दी पाने के बाद, पंजाब, अफगानिस्तान, काश्मीर, सिन्धु, मुराद को मिलने थे।

ये दोनों अपनी अपनी सेनायें लेकर निकल पड़े। शाहजहाँ ने उनका मुकाबला करने के लिए जोधपुर के राजा जसवन्तसिंह और कासिम खान की सेना के साथ भेजा। दोनों पक्षों में धर्मात में (उज्जयिनी से १४ मील) १५ अप्रिल १६५८ युद्ध हुआ। उस युद्ध में औरंगजेब की बड़ी विजय हुई। जसवन्तसिंह जब भागकर जोधपुर पहुँचे, तो उसकी पत्नी ने किले के फाटक बन्द करवा दिये।

औरंगजेब और मुराद विजयी होकर, चम्बल नदी पार करके, आगरा से आठ मील पूर्व की ओर सामूगर मैदान में पहुँचे।

वहाँ दारा, ५० हजार सेना के साथ उनका मुकाबला करने आया। भयंकर युद्ध हुआ। उसने वह हाथी, जिस पर दारा सवार था, घायल हो गया। वह उस पर से उतरकर, घोड़े पर सवार हो गया। दारा के हाथी के अम्बारी को खाली देख, सैनिकों ने सोचा कि वह मर गया था और वे मैदान छोड़कर भागने लगे। आखिर दारा को भी आगरा की ओर भागना पड़ा। उसकी छावनी, जिसमें तोपें भी थीं, औरंगजेब को मिली। सामूगर युद्ध में यह साबित हो गया कि शाहजहाँ का वारिस औरंगजेब ही था।

उसने आगरा पर हमला किया। ८ जून को उसने किला अपने पक्ष में कर लिया। किले की हिफाजत के लिए जो कुछ किया गया था, वह पक्की साबित न हुआ। शाहजहाँ अपने लड़के का ही कैदी हो गया। चूँकि किलेवालों ने औरंगजेब का मुकाबला किया था, इसलिए किले में उसने बहुतों का पानी नहीं जाने दिया। शाहजहाँ को कुँये का खारा पानी पीना पड़ा। उसने लिखा—"अपने लड़के से हिन्दू अच्छे हैं। वे मृत माँ बाप का तर्पण करते रहते हैं। तू बड़ा मुसलमान है कि जिन्दे बाप को ही तूने पानी देना बन्द कर दिया है।"

शाहजहाँ को साधारण कैदी को प्राप्त सुविधायें भी नहीं प्राप्त थीं। वह मामूली कैदी की तरह रखा गया। अपने पिता के लिए जहाँनारा ने कई बार सिफारिश की, पर औरंगजेब के कान पर जूँ तक न रेंगी। होते होते शाहजहाँ उन परिस्थितियों का आदि हो गया। उसे वैराग्य-सा हो गया। वह हमेशा कुरान पढ़ता रहता। जहाँनारा अकेली ही उसके साथ रहती। जनवरी २२ १६६६ को ७४ वर्ष की उम्र में उसकी मृत्यु हो गई।

औरंगजेब की चाल तब तक मुराद जान चुका था, १३ जून १६५३ को जब औरंगजेब दिल्ली आ रहा था, रूप नगर के पास उसने भाई के खिलाफ बगावत की। औरंगजेब ने चालाकी से उसे पकड़ लिया। तीन साल तक उसने उसे अलग अलग जेलों में रखा। ४ दिसम्बर १६६१ को उसने उसे मौत की सजा दी। इस बीच यानि १६५८ जुलाई २१ को दिल्ली में औरंगजेब गद्दी पर आया।

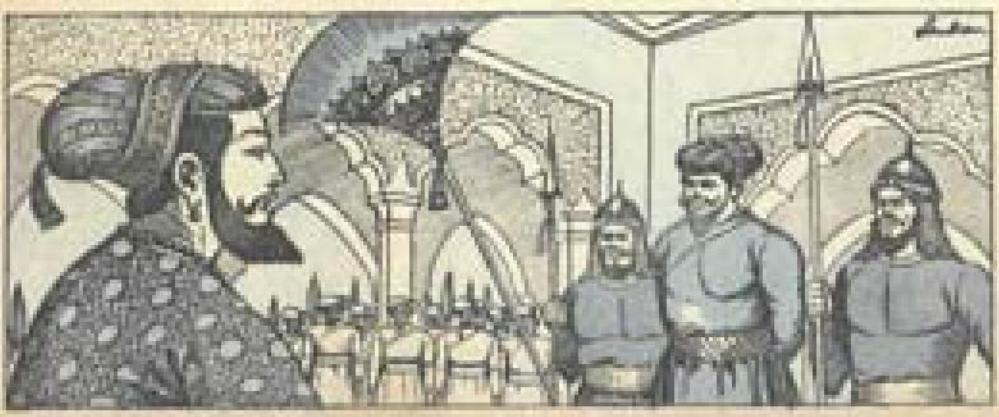

नेहरू की कथा

[१६]

मोतीलाल और जवाहरलाल नेहरू को अलमोड़ा जेल में रखा गया। वहाँ बैरेक्स थीं। राजनैतिक कैदियों को उनमें रखा गया था। मोतीलाल जवाहरलाल और सोलह आदमियों को एक बड़े अहाते के बीच के झोंपड़े में रखा गया।

जवाहर अपना अधिक समय बातचीत और वाद विवाद में बिताया करते। रोज अखबार पढ़ा करते और मालूम किया करते कि आन्दोलन कैसे चल रहा था। दिसम्बर के अन्तिम दिनों में अहमदाबाद में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। तीन महीने पहिले ही गान्धी जी ने छोटी-सी धोती पहिननी शुरू की थी। वे उसे पहिनकर ही उस अधिवेशन में शामिल हुए। अधिवेशन का अध्यक्ष आसन देशबन्धु दास को ग्रहण करना था, और वे जेल में थे। इस कारण हकीम अजमल खान अध्यक्ष बने। गान्धी जी ने अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित कराया कि सब कानूनों का उल्लंघन किया जाये, और जनता स्वयं सेवकों में शामिल होकर जेल जाये।

सरकार ने भी अन्धाधुन्ध लोगों को गिरफ्तार करना छोड़ दिया, और मुख्य लोगों को ही पकड़ने लगी। जनता में भी उत्साह कुछ कुछ कम होने लगा। पर आन्दोलन चल ही रहा था। जो जो मुख्य नेता समझे जाते थे, वे सब पकड़े जा चुके थे। परन्तु आन्दोलन के कारण गान्धीजी को सरकार पकड़ने का साहस

नहीं कर पा रही थी। वे अपना यह वचन तो नहीं निभा सके कि वे एक साल में भारत को स्वतन्त्र कर देंगे, पर उन्होंने जनता के मन को एक अपार की निश्चिन्तता दे दी।

जेल का जीवन चाचा की तरह चलता जाता था। जवाहर सवेरे अपनी कोठरी साफ करते, कपड़े धोते, फिर थोड़ी देर सूत काता करते। वे अपने और अपने पिता के कपड़े धोया करते। बेचड़ कैदियों को हिन्दी और उर्दू सिखाया करते। इस प्रकार कुछ समय बीतने के बाद सरकार ने पाबन्दी लगा दी कि एक बैरक वाले दूसरे बैरक में किसी को पढ़ाने न जाया करें। शारीरिक और मानसिक रूप से विश्राम लेने के लिए जवाहरलाल को जेल जीवन काम आया। शुरू शुरू में वे वहाँ की छोटी छोटी पाबन्दियों से खिझे तो, फिर वे उनके आदि हो गये।

रोज बहुत धीमे धीमे बीत रहे थे। इतने में बिजली की-सी एक घटना घटी।

गोरखपुर जिला के चौरी चौरा नामक ग्राम के पास ग्रामवासियों के जलूस में कुछ गड़बड़ी हुई। पोलीस ने आकर गोलीबारी की। गाँववाले बिगड़ उठे। बाईस पोलीसवाले पोलीस स्टेशन में जा छुपे। गाँववालों ने पोलीस स्टेशन को घेर लिया और उसमें आग लगा दी। पोलीस स्टेशन तो जला ही, साथ वे भी जल गये जो उसके अन्दर थे।

इस घटना के बारे में जानकर गान्धी जी बड़े चिन्तित हो उठे। उस समय वे बारडोली में बड़े पैमाने पर सत्याग्रह चला रहे थे। परन्तु उन्होंने यह सुनते ही १९२२ फरवरी में अपना सत्याग्रह बन्द कर दिया। उन्होंने सलाह दी कि लोग

सूत कातें, शराब छोड़ें, हिन्दू मुस्लिम में एकता को बढ़ायें, समाज में सुधार लाने के लिए रचनात्मक कार्य करें।

गान्धी जी के इस आकस्मिक निश्चय से मोतीलाल और जवाहरलाल बड़े बौखलाये। कहीं एक छोटे से गाँव में कोई हिंसाकाण्ड हो जाये, इसका यह तो मतलब नहीं है कि सारा देश उनके लिए सजा भुगते। अहिंसा ही यदि अस्त्र हो, तो वह साधन के रूप में अपर्याप्त है। चूँकि सरकार जब चाहे तब हिंसा भड़का सकती थी और इस तरह आन्दोलन एक कदम भी आगे न बढ़ सकेगा।

जेल में मोतीलाल और जवाहरलाल ने आपस में चिट्ठी पत्री की। २४ फरवरी में जब दिल्ली में कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई तो गान्धी जी ने ये चिट्ठियाँ पढ़ीं। उन्होंने अपना निर्णय नहीं बदला और उन्होंने कहा कि आत्मद्रोह की अपेक्षा बाहर होना कहीं अच्छा था। प्रतिनिधियों ने बाहे ही उनकी युक्ति का समर्थन न किया हो, पर उनके निर्णय का समर्थन किया। सरकार ने आखिर गान्धी जी को गिरफ्तार कर लिया।

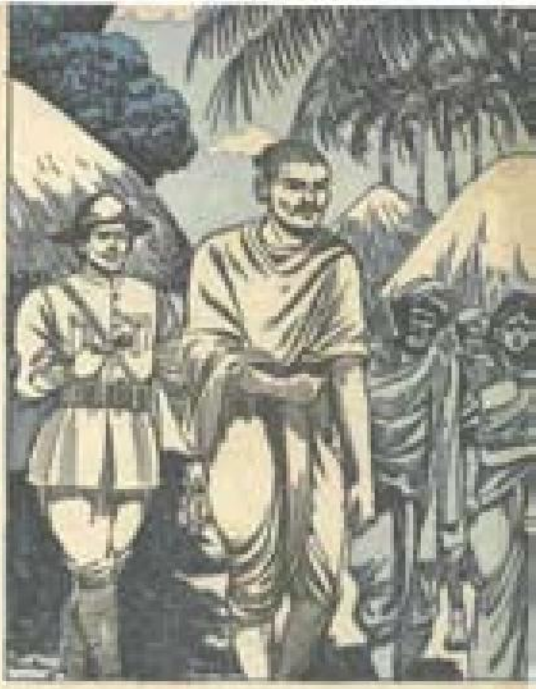

उस समय यह निर्धारित हुआ कि जवाहरलाल नेहरू का दण्ड अन्यायपूर्ण था और उनको रिहा कर दिया गया। वे कुछ दिन आनन्द भवन में अपनी माँ और पत्नी के पास रहे, फिर साबरमती आश्रम में गान्धी जी से मिलने गये। उनके वहाँ पहुँचने से पहिले ही गान्धी जी को गिरफ्तार करके साबरमती जेल भेज दिया गया था। जवाहरलाल ने उनको जेल में ही देखकर न देखा, उनकी सुनवाई भी उन्होंने सुनी, न्यायाधीश सर रोबर्ट सूल फील्ड ने उनको बड़ी सहृदयता और आदर के साथ देखा,

गान्धी जी ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया "भारत और इंग्लिस्तान दो भिन्न असामान्य परिस्थितियों में हैं, सत्याग्रह करके यह निश्चित करके मैंने दोनों की सेवा की है। अच्छे का समर्थन जितना आवश्यक है, उतना ही बुरे का असमर्थन भी आवश्यक है, यह मेरा विश्वास है।"

गान्धी जी को ६ साल की सजा देते हुए न्यायाधीश ने इस प्रकार कहा— "मैंने आप जैसे व्यक्ति की सुनवाई कभी न की। कभी ऐसा मौका मिलेगा भी न। यह भूलना मुश्किल है कि आप अपने देशवासियों की दृष्टि में बड़े देशभक्त हैं और नेता हैं। वे भी जो राजनीति में आपके साथ नहीं है, आपको एक आदर्श उच्च पुरुष ऋषि की तरह देखते हैं। यदि कभी परिस्थितियाँ ऐसी आईं जब कि आपका दण्ड कम किया जा सकेगा, तो मैं सबसे अधिक प्रसन्न होऊँगा।"

जेल से बाहर आ गये थे, पर जवाहरलाल को सुख न मिला। उनके सब बन्धु जेल में थे। बिना नेताओं के कांग्रेस का संगठन शिथिल हो गया था। उसे देखकर जवाहरलाल को एक बात सूझी। गान्धी जी के आन्दोलन का रोकना चौरी चौरा की घटना एक कारण न था। देश की परिस्थिति आँकने में गान्धी जी बड़े समर्थ थे। देश की बात तो अलग, कांग्रेस की यह स्थिति भी कि उसने निष्क्रिय हो न था। कोई भी उसमें घुसकर उसका अपने स्वार्थ के लिए उपयोग कर सकता था। इन परिस्थितियों को देखकर, लगता था जैसे गान्धी जी ने ऐन समय पर ही आन्दोलन बन्द कर दिया हो।

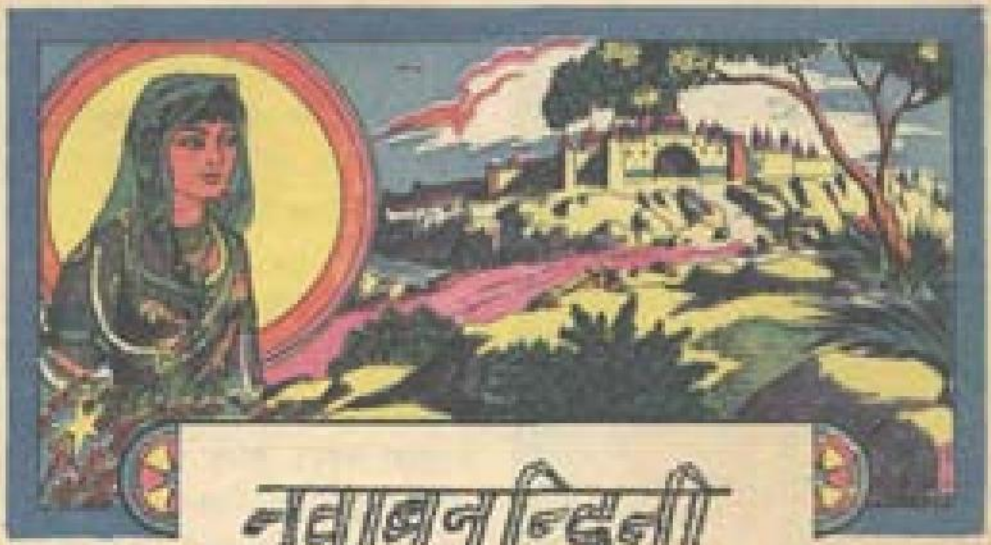

नवाबनन्दिनी

[३]

युवराजसिंह द्वारा दामलेश्वर भेजे गये सैनिक को मन्धारण के रास्ते में गजपति दिग्गज दिखाई दिया। उसने कहा— "भगवान महादेव हुजूर के स्वास्थ्य की रक्षा करें।" दिग्गज की भाषा और रहन से चकित होकर सैनिक अपने घोड़े को धीमे-धीमे चलाता उससे बातें करने लगा। सैनिक के प्रश्नों के जवाब में दिग्गज ने कहा कि वह पहिले हिन्दु था, फिर मुसलमान और फिर दुबारा हिन्दु होने के लिए जो कुछ किया जाना चाहिए था वह किया जा चुका था, फिर भी गुरु के कहे बगैर जाति के बारे में सन्देह का निवारण न होगा, किले में रहनेवाली अपनी उसकी बड़ी जान पहिचान की थी।

वे बातें करते करते मन्धारण किले के पास पहुँचे। सैनिक ने दिग्गज से कहा—"क्या तुम किले में बताओगे कि युवराज जगतसिंह कैद कर लिए गये हैं!"

"कैद! किस लिए! किसके कैदी!" दिग्गज ने पूछा।

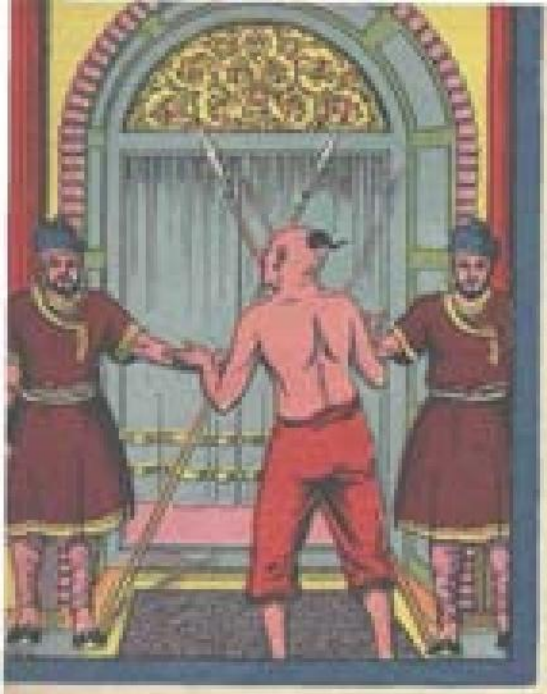

"यह तो मैं नहीं कह सकता कि क्यों कैद हैं। परन्तु उन्हें कैद हमने ही किया है। यह करने के लिए हमें मानसिंह ने ही आज्ञा दी थी।" सैनिक ने कहा।

दिग्गज को डर लगा। पहिले भी जब वीरेन्द्रसिंह कैद कर लिया गया था, तो किले में रहनेवाले सब कैद कर लिये गये थे। बड़ी गड़बड़ी हुई थी, जब शत्रु सैनिकों ने जगतसिंह को पकड़ा है। जिस सैनिक को उसने देखा था, वह पहिला सैनिक था और बाद में आवेंगे और किले के सब लोगों को पकड़ लेंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं। इसलिए इस सैनिक को छोड़कर जाकर, सबको पहिले कह देना अच्छा है—यह सोचकर दिग्गज ने सैनिक से कहा—"मैं यह किले में बता दूँगा। तुम जाकर अपना और काम देखो।" वह सैनिक चला गया।

दिग्गज भागा भागा किले में गया। असमानी से यह कहने के लिए उसने अन्तःपुर में घुसना चाहा। परन्तु पहरेदारों ने उसे अन्दर न जाने दिया। दिग्गज ने कहा कि वह यहीं का था, अभिरामस्वामी का शिष्य था। वह असमानी को अच्छी तरह जानता था।

"तो तुम यहीं रहो। यदि कोई दिखाई दिया, तो अन्दर खबर भिजवा दूँगा।" पहरेदार ने कहा।

विमला अन्तःपुर के सबसे ऊँची मंजिल से खिड़की के पीछे खड़ी खड़ी पहरेदार और दिग्गज की बातचीत सुन रही थी। विमला के पास असमानी आई।

"राजमंत्री दिग्गज पहरेदार से झगड़ सा रहा है। जाकर उसे बुला लाओ।" विमला ने असमानी से कहा।

असमानी नीचे जाकर एक अन्धेरे कमरे में गई। दिग्गज को बुलवा लाने के लिए लक्ष्मणी नाम की दासी को द्वार के पास

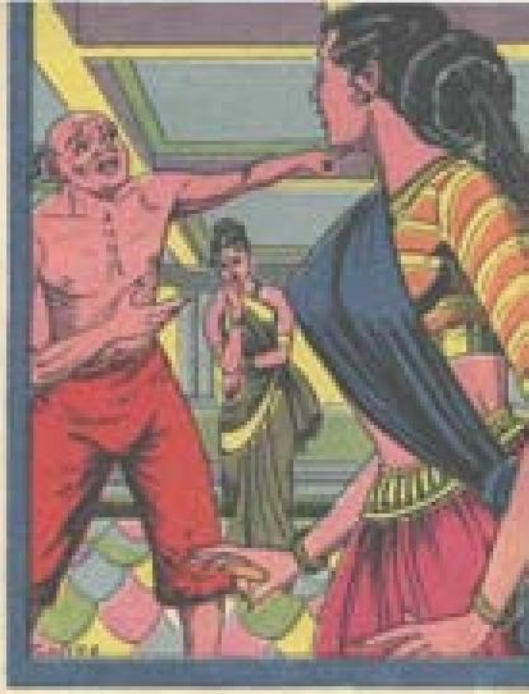

भेजा। लक्ष्मणी ने आकर पूछा—"क्यों, रसिक राजा मैं याद हूँ?"

दिग्गज ने कभी उसे न देखा था, इसलिए उसने घबराकर कहा—"तुम्हें कई बार देखा है। अच्छी तरह जानता हूँ। पर कौन हो याद नहीं आ रहा है।"

लक्ष्मणी ने उस बिचारे को थोड़ी देर तंग किया। फिर जसमानी के पास ले गई।

"क्यों, रसिक राजा अब तक कहाँ थे? क्या कर रहे थे?" जसमानी ने पूछा।

"यह सब बाद में बताऊँगा। पहिले तुरत मेरे साथ आओ। यहाँ रहना बड़ा खतरनाक है।" दिग्गज ने कहा।

"यह खतरा क्या है?"

"पुखराज को पकड़कर ले गये हैं।"

"कौन?"

"मानसिंह के आदमी।"

"कहाँ?"

"रास्ते में आते समय। अब जो किले में हैं, वे सब पकड़ लिए जायेंगे। मैं तुम्हारे बारे में चिन्तित हूँ। तुरत आओ। कहीं भाग जायें।"

यह खबर तुरत विक्रम को पहुँचानी है। इसलिए जसमानी ने दिग्गज से कहा—"तुम ठीक कह रहे हो। भाग निकलें। तुम आगे चलो। अन्धेरा होते ही सामान लेकर चले आयेंगे।"

"तब तक! देरी करोगी, तो और खतरा है।"

"तुम आगन आकर लोगों से कहो कि मानसिंह के आदमी दो घंटे में आ जायेंगे। मैं ठीक समय पर तुम से आ मिलूँगी।"

जसमानी के यह कहते ही दिग्गज ने काँपते हुए कहा—"ऐसी ही बात है, तो मैं अभी जा रहा हूँ।" वह भागने लगा।

जल्दी ही विग्गव की लाई हुई खबर सारे किले में फैल गई। विग्गव की बातें किसी को पूरी तरह समझ में नहीं आईं, इसलिए अभिरामस्वामी ने ठीक ठीक बात मालूम करने के लिए एक आदमी को घोड़े पर पटना भेजा।

अन्धेरा होने के बाद बिम्बा और अम्मानी मिलकर अभिरामस्वामी के कुटीर के पास आये। अभिरामस्वामी मृग चर्म पर बैठा हुआ था। स्त्रियाँ उसके सामने फर्श पर बैठी थीं।

"अब क्या किया जाये?" बिम्बा ने पूछा।

"मालूम है, एक बार यही तुमने यह बात हमसे पूछी थी! जब मैंने कहा था कि मानसिंह यह विवाह नहीं मानेगा, तब तुमने कहा था कि पुरुराव स्वतन्त्र है। देखा, उस स्वतन्त्रता का क्या परिणाम हुआ! पुरुराव को कभी भी कोई स्वतन्त्रता न थी। वह बिना पिता की इच्छा के कोई काम नहीं कर सकता। वह मानसिंह का लड़का ही नहीं, उसका नौकर भी है।" अभिरामस्वामी ने कहा।

"यह बात अब न मालूम हुई है! अगर तब भी मालूम हो जाती, तो हम

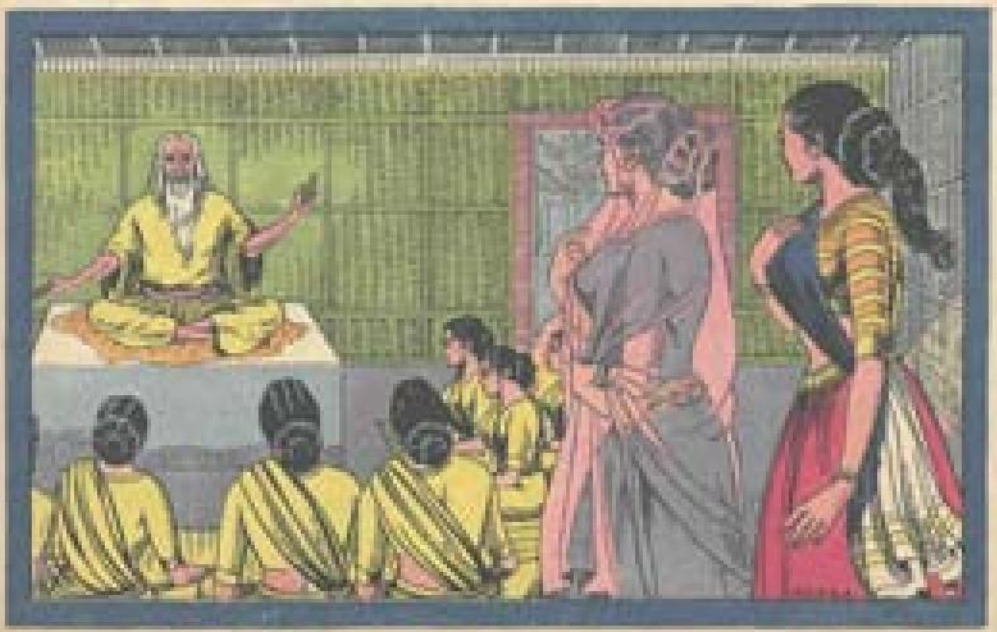

वह प्रेम प्रवाह कैसे रोक पाते! तिलोत्तमा के बारे में आप नहीं जानते। मैं जानती हूँ।"

"मुझे कुछ भी जानने की जरूरत नहीं है। एक बार देखने मात्र से प्रगाढ़ प्रेम पैदा हो जाता है, यह मैं कभी विश्वास नहीं कर सकता। मोह बड़ा जबर्दस्त है। मगर उसको यदि शुरू में ही कुचल दिया गया, तो कोई खराबी नहीं है। यह तुम जानती हो न!"

"मैंने तिलोत्तमा के सुख आनन्द के लिए ही ऐसा किया है। मैं तिलोत्तमा के लिए ही जीवित हूँ। तिलोत्तमा ही मेरी प्राण है। उसके कष्ट हटे और अब वह सुख पाने लगी, तो फिर यह झंझट आ पड़ी। मैं अपना दुख किसके सामने रोऊँ! यदि मुझे बताया गया कि मेरी ऐसी कौन-सी गलती थी, जिस कारण उस पर यह आपत्ति आ पड़ी है, तो मैं प्रायश्चित करूँगी।"

अभिरामस्वामी ने कहा कि जो जो काम उसने किये थे, वे सब गलत थे। सिमका जानती थी कि वीरेन्द्रसिंह की लड़की के लिए मानसिंह के लड़के के

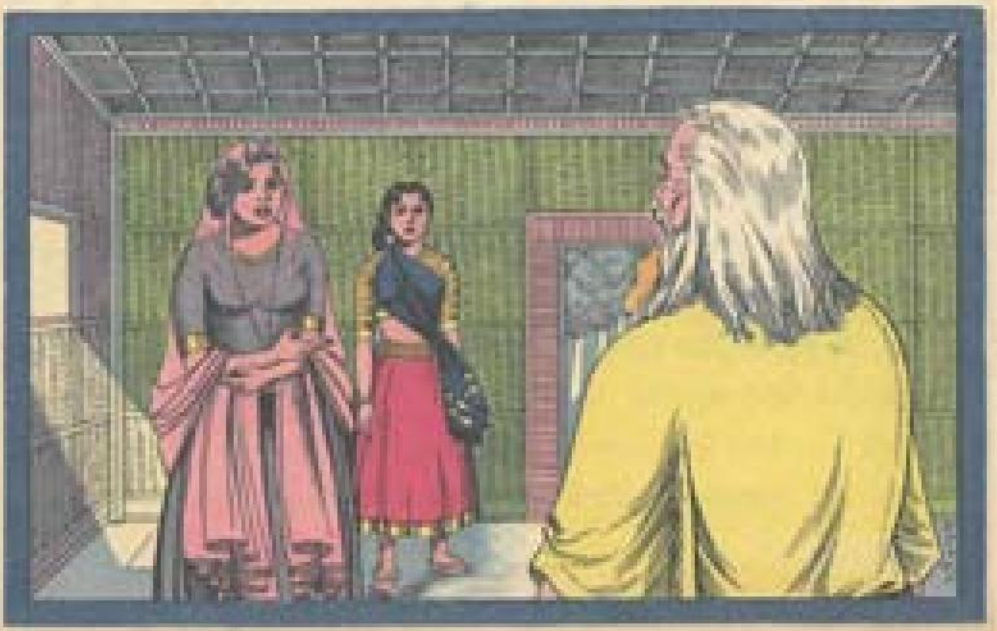

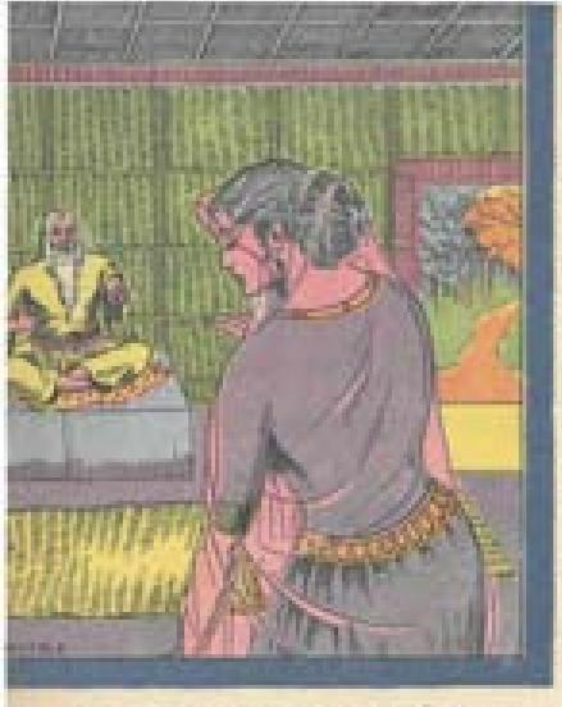

साथ प्रेम करना ठीक नहीं था, वह विमला अच्छी तरह जानती थी, इसलिए तिलोत्तमा के मन में जो प्रेम अंकुरित हुआ था, उसे तुरंत हटा देना चाहिए था। उसने वैसा नहीं किया। शैलेश्वर मन्दिर से जब जगतसिंह तिलोत्तमा को देखकर चला गया था तब तिलोत्तमा कौन थी, वह न जानता था। यदि वह बात वहीं छोड़ दी जाती, तो कुछ न होता। तब विमला ने पन्द्रह दिन बाद जगतसिंह को वहाँ फिर जाने के लिए कहा और वचन दिया कि वह तिलोत्तमा के बारे में सब कुछ बता देगी। यह गलती थी। उसके बाद अभिरामस्वामी के न कहने पर भी वह दूसरी बार जगतसिंह से मिली और उसने तिलोत्तमा के बारे में बताया। तिलोत्तमा को दिखाने का जो तुमने वचन दिया था वह एक और गलती थी। वह भले ही बीरेन्द्रसिंह की पत्नी हो, पर उसको मुगल सेनापति का कुरचान दुर्ग में लाने का अधिकार न था। इसके बाद यदि किला पठानों के हाथ लगा और उसके बाद जो भी कुछ हुआ, उसकी जिम्मेदारी विमला पर थी।

"सोचो, तुमने जो कुछ किया है, उसमें एक काम भी तो ठीक नहीं है।" अभिरामस्वामी ने आखिर कहा।

विमला ने अपने पिता अभिरामस्वामी के पैरों पर पड़कर कहा—"समझ गई। मैंने सब गलत काम ही किये हैं। अब कोई उपाय सोचकर, हमारी रक्षा कीजिये।"

"मैं यही सोच रहा हूँ। जब तक मेरा भेजा हुआ आदमी वापिस नहीं आ जाता, तब तक कुछ नहीं किया जा सकता। यह जानने पर ही कि मानसिंह अपने लड़के पर क्यों क्रुद्ध है, तभी कुछ

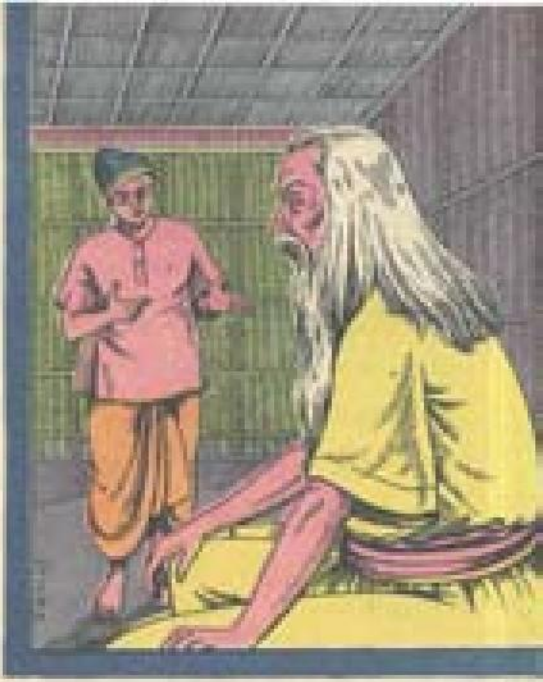

उपाय किया जा सकता है।" अभिरामस्वामी ने कहा।

"वह आदमी कब तक वापिस आयेगा?"

"कल आ सकता है। पटना तक ही जाकर वापिस आना हो, तो आठ दस दिन भी लग सकते हैं।"

"आठ दस दिन! तब तक तिलोत्तमा कैसे जीवित रह सकेगी।"

"तुम उसको ढाढस बँधाओ। कल सवेरे मैं भी आकर उससे बात करूँगा।" अभिरामस्वामी ने कहा।

"मानसिंह क्या अपने लड़के पर दया नहीं करेगा?" विमला ने पूछा।

"आत्माभिमान हो, तो लड़का है तो क्या! नहीं है तो क्या!"

"आखिर क्या होगा!"

"जी हो, अच्छा है, तुम्हें ये बातें मालूम ही न हों।"

"शायद मानसिंह को आप पर गौरव है। आपने यदि जाकर कहा, तो अवश्य फायदा होगा।"

"मैं नहीं सोचता कि कोई फायदा होगा। यदि मैंने दखल दिया, तो परिस्थिति और भी उलझ सकती है। बहुत देर हो गई है, अब तुम जाकर कल सवेरे आओ।" यह कहकर अभिरामस्वामी ने विमला और अम्मानी को भेज दिया।

पटना गया हुआ आदमी सब समाचार इकट्ठे करके चला आया। जब यह मालूम हुआ कि युवराज को आजीवन कैद हुई है, तो किले में सब बड़े हताश हुए।

अभिरामस्वामी ने कुछ निश्चय करके कहा कि वह तीर्थ यात्रा पर जा रहा है और वहाँ से निकल पड़ा। पर विमला जान गई कि वह किस काम पर जा रहा था।

तिलोत्तमा बिल्कुल निराश थी। उसे न नींद थी, न आराम, न खाना पीना, न नहाती थी, न गहने पहिनती थी। दुःख में रहती। नंगे फर्श पर पड़ी रहती। युवराज दस दिन से कैद में था और उसकी पत्नी तिलोत्तमा उससे भी अधिक कठिन स्थिति में थी। वह स्वप्न-सा सुख देखते देखते यूँ काफूर हो गया। अब जो उसे दुःख हो रहा था उसका कोई अन्त न था। उसका पति फिर उसे कभी न दिखाई देगा।

इस प्रकार परिस्थिति कभी कभी मनुष्यों का मन बिल्कुल बदल देती है। उस तिलोत्तमा में, जो हमेशा परिस्थितियों के सामने झुकी रही थी, प्रतीकार की बुद्धि उबलने लगी। चाहे वह कितना भी रोवे, उससे उसके पति का बिल्कुल लाभ न होगा। यदि कुछ करना ही है, तो ऐसे काम करो, जिससे उसके काम हटें।

तिलोत्तमा झट उठी और पूछा—"कौन है वहाँ! उसकी आवाज सुनकर एक दासी आयी। उससे एक कलम और कागज मँगवाकर उसने अवधा को एक पत्र लिखवाया। उसमें उसने यह लिखकर कि उसका पति जगतसिंह, मानसिंह के दण्ड के कारण आजीवन कैद भुगत रहा था, यह सोचकर कि इस संसार में युवराज का कल्याण सोचनेवालों में तुम सबसे आगे हो, मैं तुमको यह पत्र लिख रही हूँ। तुम इसके बारे में क्या करोगी, क्या कर सकोगी, मुझे नहीं मालूम है।" फिर तिलोत्तमा ने उस पत्र को तागे से बाँधा। उस पर मुद्रा लगाई। उसे लेकर वह अपने कमरे से चली गई। [अभी है]

सर्वनाश

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतार कर, कन्धे पर डाल हमेशा की तरह, श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित वेताल ने कहा—"राजा, तुम ये सारे कष्ट एक स्त्री के लिए तो नहीं उठा रहे हो! क्योंकि स्त्री के कारण बड़ों बड़ों पर भी बड़े बड़े कष्ट आते हैं। उदाहरणार्थ कञ्चन प्रभा के कारण कुण्डक देश का कैसे सर्वनाश हो गया था, मैं बताऊँगा। तुम्हें थकान न मालूम होगी। सुनो।" उसने पूँ पहानी शुरू की।

रत्नकुण्डक नाम का राजा कुण्डक देश पर राज्य किया करता था। वह मामूली राजा नहीं, सम्राट था। बारह राज्य उसके आधीन थे। रत्नकुण्डक का बल, उसके

वेताल कथाएँ

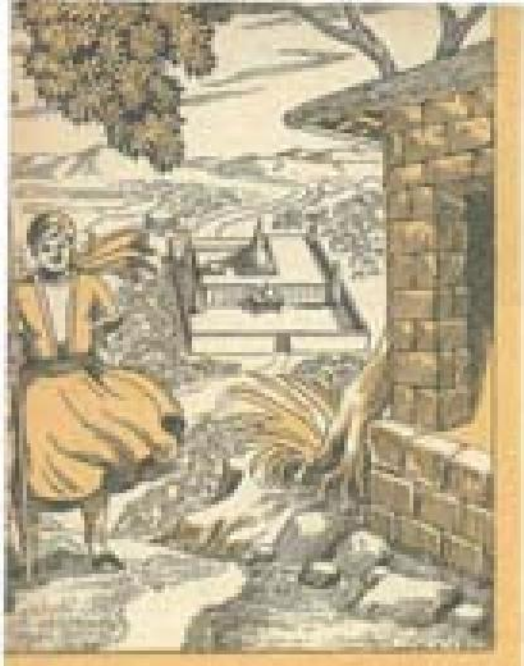

पास बारह सेनापतियों का होना ही था। वे सब बड़े बड़े योद्धा थे। राजा उनको मन्त्रियों से भी अधिक मानता था। वे भी राजा के लिए अपने प्राण तक न्योछावर करने को तैयार थे।

एक बार जब राजा दरबार में थे, तो खबर मिली कि राजकवि के एक लड़की हुई थी। तुरत दरबारियों ने राज-ज्योतिषी से कहा कि उस लड़की की कुण्डली बनाकर, उसकी जन्मपत्री सुनाये। ज्योतिषी ने कुछ गिन-गिनाकर कहा—"यह लड़की, निस्सन्देह त्रिलोक सुन्दरी होगी। पर इसके कारण राज्य को बड़ी अपरंपार हानि होगी। जहाँ जहाँ यह कदम रखेगी, वहाँ वहाँ बड़े बड़े उपद्रव और उत्पात मचेंगे।"

यह सुनते ही सेनापतियों ने कहा—"देश के लिए, जब इतने लोग अपने प्राण अर्पित कर रहे हैं, तो क्यों इस छोटी-सी लड़की के प्राणों की परवाह की जाय! उसे तुरत मरवा डालिये।"

राजकुमार ने उन्हें रोकते हुए कहा—"बच्ची को मरवाओ मत। उसे निर्जन वन में डालो दोनो, जब वह सयानी हो जायेगी, तो मैं उसे अपनी पत्नी बना लूँगा। तब तक न वह दुनियाँ का मुँह देखे न दुनियाँ ही उसका मुँह देखे।"

राजा ने एक निर्जन घाटी में एक घर बनवाया। तीन स्त्रियों के संरक्षण में उस बच्ची के पालन पोषण का इन्तज़ाम किया। उस घर के चारों ओर के पहाड़ों पर सैनिकों को दिन रात पहरा देने के लिए नियुक्त किया। उनका यह काम था कि राजा के सिवाय, वहाँ कोई न जाये और बारह मील वहाँ से दूर रहें।

राजा ने उसका रंग देखकर, उसका नाम काँचन प्रभा रखा। काँचन प्रभा

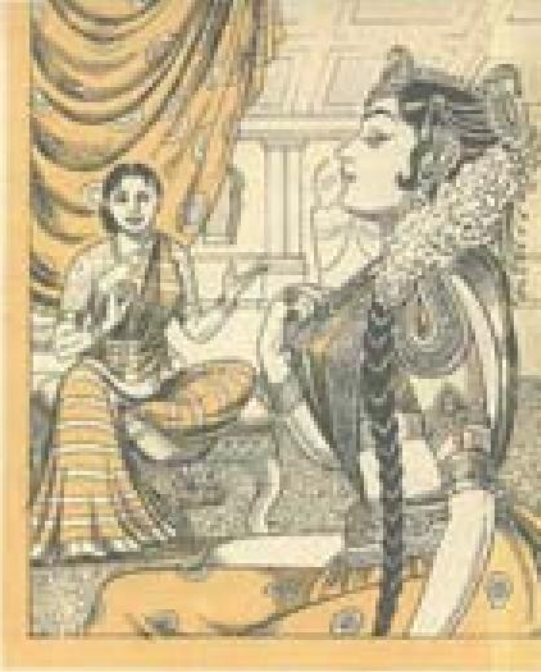

बड़ी बड़ी होती रही और कांचन से सयानी हो गई। जो कुछ भी लौकिक ज्ञान उसको था वह उसने उन तीन स्त्रियों से ही प्राप्त किया था, जिन्होंने उसे पाला पोसा था। उनमें से एक ने उसको पढ़ना लिखना सिखाया। उसे कई कहानियाँ सुनाईं। उससे ही कांचन प्रभा ने प्राचीन प्रेम कथायें सुनीं और वह जान गई कि वह स्वयं प्रसिद्ध सौन्दर्यवतियों में थी।

"मैं हमेशा उस बूढ़े राजा को ही देखती रहती हूँ। क्या जग में कहीं सुन्दर पुरुष नहीं है!" कांचन प्रभा ने अपने गुरु से पूछा। वह भी जानती थी कि राजा शीघ्र ही उससे विवाह करनेवाला था, इसलिए उसे कांचन प्रभा पर तरस आया।

"सुन्दर पुरुष क्यों नहीं है! राजा जिस रास्ते से आता जाता है, उसके द्वार पर एक युवक है। वह बहुत सुन्दर है। उस जैसे को पति बनाने के लिए कोई भी कन्या हजारों देवी देवताओं की पूजा करेगी।" गुरु मां ने कहा।

कांचन प्रभा को रोमान्च हुआ। जैसे भी हो, उसने इस वीर युवक को एक बार देखना चाहा। एक दिन शाम को, जब राजा के जाने का समय गुजर चुका था, वह एक मोटा-सा शाल ओढ़कर, घाटी के द्वार की ओर निकल पड़ी।

घाटी के द्वार का पहरेदार युवक, साधारण सैनिक न था। उसका नाम केदार था। उसके दोनों भाई, राजा के यहाँ सेनापति थे। बीड़ा रूप में, अभी तक वह उनके बिलकुल तो बड़ा नहीं हुआ था, पर मौका मिलने पर वह भी अपना पराक्रम दिखाने के लिए तैयार था। उसकी उम्र भी बहुत छोटी थी। सिर्फ वह बीस वर्ष का था।

केदार ने उस घुसमुह से, किसी को कुछ ओढ़-लपेटकर, अपनी ओर आता देखा। यह सोच कि उन तीन स्त्रियों में से यह कोई एक होगी, कांचन प्रभा से मिलने आया। जब दोनों पास आये, तो कांचन प्रभा ने अपनी ओढ़नी हटा दी और अपना असाधारण सौन्दर्य दिखाती खड़ी हो गई।

दोनों पखवाड़े से काफी देर खड़े रहे। आखिर केदार ने कहा—"क्या मेरे साथ आओगी? हम विवाह करके, कोई और देश चले जायेंगे।"

कांचन प्रभा को तब राजा का भय था। पर उसने सोचा यदि वह युवक उसका पति हो गया, तो उसको भगवान से भी डरने की कोई जरूरत न थी। उसे यह साहस हुआ। "जहाँ चाहो मुझे ले जाओ। मैं तुम्हारे साथ आऊँगी।"

धीमे धीमे अन्धेरा हो गया। केदार कांचन प्रभा को साथ लेकर, अपने बड़े भाइयों के पास गया। वह जो करने जा रहा था, उसके बारे में उसने उनको भी बताया। उन्होंने कोई आपत्ति नहीं की। "यदि तुम दोनों विवाह करना चाहते हो,

तो इस राज्य में तुम्हारे प्राण नहीं बचेंगे। ऐसा भी नहीं लगता कि तुम किसी और राज्य में आराम से रह सकोगे! तुम्हारी रक्षा के लिए हम साथ आयेंगे। सवेरा होने से पहिले यदि हम अपने राज्य की सीमा पार कर गये, तो उतना खतरा शायद नहीं होगा।" केदार के भाइयों ने कहा।

उनके कष्टों का यहीं प्रारम्भ था। वे कई देश घूमे। यदि किसी राजा के यहाँ काम मिलता, उसकी खबर जल्दी ही रत्नकुण्डल को पहुँचती। वह उस राजा को खबरदार करता। फिर उनको उस राज्य में पानी तक नहीं मिलता। आखिर उनको आसपास के किसी भी राज्य में कोई आश्रय न मिला। इसलिए वे जंगल में रहे। वे फल फूल खाया करते, नहीं तो शिकार पर निर्वाह करते। वे गुफाओं में रहते या पेड़ों की चोटियों पर। इस जिन्दगी से भी ऊब गये। उन्होंने जंगल छोड़-छाड़कर, किसी देश में जाकर, जैसे तैसे जिन्दगी बसर करने की सोची। तब एक और दिक्कत पेश आई। वहाँ के बाशिन्दों ने काँचन प्रभा को उड़ा लेना

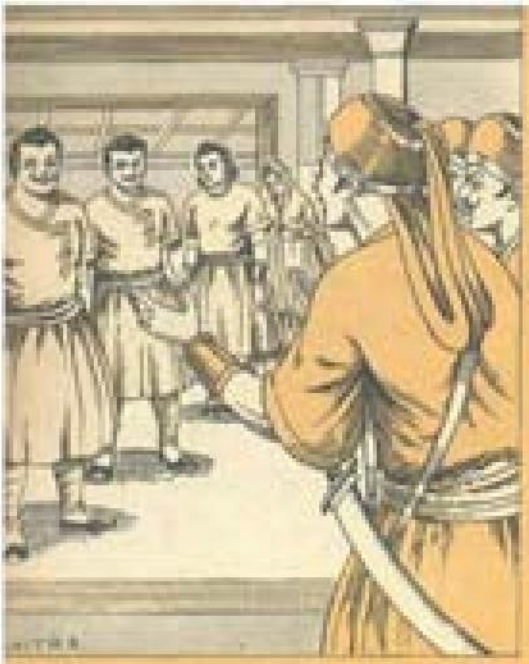

चाहा। जब कई ने गुप्तचरों की, तो केदार और उसके भाइयों को उन्हें मारना भी पड़ा। कहीं उनको हत्या के लिए सजा न मिले, इस डर से, उनको और दूर देश जाना पड़ा।

इतने में रत्नकुण्डल ने एक घोषणा करवायी। उसने केदार और उसके भाइयों के अपराध माफ कर दिये और उनको अपने देश में रहने की अनुमति दी। यह घोषणा सुनकर बाकी सेनापतियों को बहुत खुशी हुई। केदार के भाई उनसे अलग हो गये थे, इसका उन्हें बहुत दुःख था, पर तब तक वे कुछ कह न पाये थे। राजा की उदारता ने उनको बहुत ही प्रभावित किया।

राजा की आज्ञा पर, तीन सेनापति केदार और उसके भाइयों को खोजते निकले। आखिर उनसे उनका पता मालूम हो गया। उन्होंने उनसे कहा—"राजा ने तुम्हें माफ कर दिया है। आ जाइये।"

"इनकी बातों का विश्वास न करो, जरूर इसमें कोई धोखा है।" कांचनप्रभा ने उनसे कहा।

"हम धोखेबाज नहीं हैं। न राजा के गुप्तचर ही हैं। हमारी बातों का विश्वास कर सकती हो। यदि तुम्हारी जान पर रत्ती भर आपत्ति भी आई, तो हम अपनी जान दे देंगे।" सेनापतियों ने कहा।

"वे गलत स्थान में हैं। राजा की चाल वे नहीं समझते।" कांचनप्रभा ने कहा।

उसका रुख देखकर केदार के भाइयों को गुस्सा आ गया। वे वचन देकर, वचन पर प्राण न्योछावर करनेवाले लोग थे। "हमें क्यों व्यर्थ डराती हो! शायद तुम सोच रही हो कि हम मौत से डरनेवाले

हैं। हम अशिक्षित होकर नहीं मरना चाहते, पर साथी योद्धाओं की मदद करने के लिए हम मरने में आगा-पीछा नहीं करते।" उन्होंने कांचनमना से कहा।

सब अपने देश वापिस चले आये और जो कुछ कांचनमना ने कहा था वही हुआ। केदार और उसके भाइयों को अलग करने के लिए राजा ने एक चाल चली। जब उनके वापिस आने का समय हुआ, तो उसने सेनापतियों को दावत दी। जब सब उस दावत में शामिल होने के लिए गये हुए थे, तो कुछ हथियारबन्द सिपाहियों ने आकर उस घर पर हमला किया, जिसमें केदार उसके भाई और कांचनमना रह रहे थे। उनमें से कई को उन भाइयों ने मार दिया और बाकी को भगा दिया।

इसके कुछ देर बाद ही राजा के यहां से एक कर्मचारी आया—"राजा को यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि आप पर हमला किया गया। वे आप से क्षमा चाहते हैं। वे आपको बुला रहे हैं।"

उस कर्मचारी की बात पर तीनों भाई घर से बाहर आये। सैनिकों ने तुरत उनको बांध लिया और उनको राजा के पास ले गये।

"इन तीनों का सिर काट दो।" राजा ने आज्ञा दी। किसी को मालूम भी न हुआ और मौत की सजा दे दी गई। यह खबर मिलते ही, सेनापतियों में से आधों ने आकर, वन्य भूमि में, उनके शव देखे। उनके साथ कांचनमना भी गई। केदार के शव को देखते ही, उसका दिल फट गया और वह वहीं मर गई।

राजा के इस काम के विरोध में कई सेनापतियों ने विद्रोह किया। कई और

ने कहा कि राजा का कोई भी काम गलत नहीं होता, धोखे का जवाब धोखा ही था। वे दो भागों में बँट गये। उनके साथ सेना भी बँट गई। उन दोनों में भयंकर आपसी युद्ध हुआ। सर्वनाश हो गया। उस युद्ध में राजा के प्राण भी गये।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"इस सर्वनाश का कौन कारण था! इस मारामारी में किस किसका कितना कितना भाग है। इन प्रश्नों का तुमने जान बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"पूरी तरह गलती राजा की है। कांचनप्रभा के पैदा होते ही ज्योतिषियों ने बताया था, कि ऐसा होगा। राजा ने उनका विश्वास भी किया। पर इस बात से कि देश की हानि होगी सेनापति तो चिन्तित हुए, पर राजा चिन्तित न हुआ। इसलिए उसने लड़की को मरवा देने की सलाह न मानी। यही नहीं, उस ज्योतिषी की बात पर, उसने उस अत्यन्त सुन्दर लड़की को, अपनी पत्नी भी बनाना चाहा था। जब वह उसे न मिली, तो उसने उनको यहीं और शरण भी न मिलने दी। जब सामन्त राजाओं के देशों से भी वे चले गये, तो उसने एक चाल चलकर उनको बुलवाया। दण्ड के नाम उसने उनकी हत्या करवा दी। कोई ऐसा काम राजा ने नहीं किया, जिससे सर्वनाश बचता। इसलिए सारा पाप उसका ही है।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

स्त्री को क्या प्रिय है ?

एक राजा एक दिन अपनी रानी के साथ उद्यान में विहार कर रहा था। "महाराज! बताइये, स्त्री को सब से अधिक क्या प्रिय है!" राजा ने इधर उधर फूलों को देखकर कहा—"फूल"

"नहीं" रानी ने कहा।

सब से अधिक प्रिय पति है, बच्चे हैं, आभूषण हैं, साड़ी है। राजा ने कई और चीजें गिनाईं। रानी ने कहा कि उनमें से कोई भी चीज न थी।

रानी के प्रश्न का उत्तर जानने के लिए राजा बड़ा उतावला हो गया। उसने तुरत घोषणा करवाई कि जो कोई रानी को यह बतायेगा कि स्त्री को सब से अधिक प्रिय वस्तु कौन-सी है उसे हजार बराह ईनाम में दिये जायेंगे।

अगले दिन लोगों के झुण्ड के झुण्ड आये और उन्होंने कहा कि वे रानी के प्रश्न का उत्तर देंगे। राजा ने कहा कि यदि रानी को उत्तर ठीक न लगा, तो उनको कोड़े लगवाये जायेंगे। किसी ने भी कोई जवाब न दिया, सब बालिस चले गये। राजा ने क्रुद्ध होकर एक और घोषणा करवायी। अगले दिन सवेरे राजा एक कमूतर छोड़ेंगे। वह जिस घर पर बैठेगा, उस घर में से किसी एक को जाकर, रानी के प्रश्न का उत्तर देना होगा और यदि वह उत्तर रानी को नहीं जंचा, तो उसका सिर कटवा दिया जायेगा।

पहिली घोषणा सुनकर, लोग जितना पहिले खुश हुए थे, उतना ही दूसरी घोषणा सुनकर चिंता में पड़ गये। उनको डर था

कि रोज राजा कबूतर छोड़कर एक एक को मरवायेगा।

अगले दिन कबूतर उड़ता उड़ता दूर एक गाँव में एक मछियारे के घर पर बैठा। कबूतर के साथ गये हुए सैनिक जब उस घर में घुसे, तो मछियारा नहीं था और उसका लड़का जाल बुन रहा था। सैनिक उसको पकड़कर राजा के पास ले गये। राजा ने उससे सारी बात सुनाई। रानी का शब्द भी सुनवाया। कहा कि उसे इसका उत्तर देना होगा, नहीं तो उसका सिर कटवा दिया जायेगा।

"पन्द्रह दिन का समय दीजिये। मैं इसका उत्तर दे दूँगा।" मछियारे के लड़के ने कहा। राजा इसके लिए मान गया।

वह सारा समय घूम घूमकर पैर घिसता रहा। उसने कई स्त्रियों से पूछा—"स्त्री को सब से अधिक क्या प्रिय है? कई ने कहा गहने। कई ने कहा बच्चे। कई बूढ़ियों ने बताया कि पोते नाते नातिनें।" कुछ भी हो, किसी ने एक उत्तर न दिया। सब उत्तर सभी जानते थे। क्या उस उत्तर के लिए राजा इतना चिन्तित होगा! समय की समाप्ति पर अगले दिन उसे

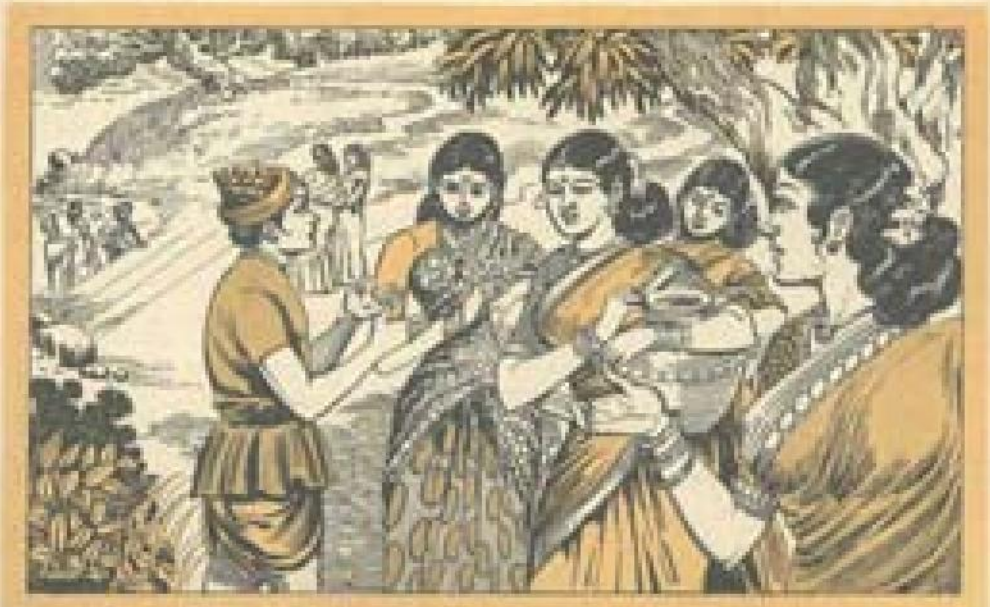

बार दिया जायेगा, इस सोच में वह एक तालाब के किनारे बैठा था कि एक बुढ़िया ने उसे देखकर पूछा—"क्यों बेटा, इतने चिन्तित क्यों हो?"

उसने बुढ़िया को साफ साफ बता दिया कि उस पर क्या आपत्ति आनेवाली थी।

"मैंने भी सुना है कि राजा इस बारे में बड़ी माथापच्ची कर रहे हैं। यह सब देख, रानी के प्रश्न का उत्तर मिल ही गया है न!" बुढ़िया ने कहा।

"क्यों नानी, क्या जवाब है!" उसने पूछा।

"और क्या बेटा! पति पर अधिकार। यह देखो, रानी राजा को, नाक पकड़कर इधर उधर घुमाकर, कैसे खुश हो रही है!" यह कहकर बुढ़िया लाठी टेकती टेकती चली गई।

अगले दिन सैनिक मछियारे के लड़के को दरबार में ले गये।

राजा ने उसे देखते ही पूछा—"स्त्री को अत्यन्त प्रिय क्या है?"

"पति पर अधिकार।" मछियारे के लड़के ने कहा।

राजा ने चकित होकर कहा—"मुझे विश्वास नहीं होता।"

"रानी के एक छोटे प्रश्न ने आपको कितना चिन्तित कर दिया, यह जानकर भी आप विश्वास नहीं करते!" मछियारे के लड़के ने कहा।

"क्या इसका उत्तर ठीक है!" राजा ने रानी से पूछा। उसने बिना कुछ कहे सिर झुका दिया। यह जानकर कि उसका उत्तर ठीक था, राजा ने उसको दो हजार बराह ईनाम देकर भेज दिया।

मनुष्य की सहायता

कभी मलय के किनारे, एक बड़ा योद्धा रहा करता था। उसके असाधारण पराक्रम और साहसिक कार्यों के बारे में कई कहानियाँ कही सुनी जाती थीं। एक दिन वह समुद्र तट पर टहल रहा था, तो उसे एक महाकाय समुद्र में से उसकी ओर चलता दिखाई दिया। जब वह महाकाय तट पर आ गया, तो उससे योद्धा ने पूछा—"कौन हो तुम! समुद्र पार करके क्यों इस तरफ आ रहे हो!"

"मैं महाकाय द्वीप से आ रहा हूँ। हमारे राजा ने बड़े योद्धा के पास एक खबर भिजवायी है।" उस महाकाय ने कहा।

"इस समय वह बड़ा योद्धा शिकार के लिए गया हुआ है। अगर तुमने बताया कि खबर क्या है, तो मैं उसके आते ही उसे खबर पहुँचा दूँगा।" योद्धा ने कहा।

"महारानी का प्रसव काल समीप है। पहिले कभी उनके दो लड़के हुए थे। पर प्रसव के समय, उनको कोई चोर उठा ले गया था। इस बार जो लड़का हो, हमारे राजा चाहते हैं कि उसकी रक्षा बड़ा योद्धा करे। जब पहिले बच्चे हुए थे, तब राजा ने किले के बाहर अन्दर, बहुत-से हथियार बन्द सिपाही तैनात किये थे। फिर भी न मालूम चोर कहाँ से आये और बच्चों को उठा ले गये। वे कौन हैं और कहाँ से आये और बच्चों का क्या हुआ, कुछ भी न मालूम हुआ।" महाकाय ने कहा।

"अच्छा, जब योद्धा आयेगा, मैं उससे यह बात कह दूँगा।" योद्धा ने कहा।

महाकाय समुद्र में चला गया। अगले दिन जब बड़ा बोद्धा उसी जगह टहल रहा था, तो उसको आठ बौने खेलते कूदते दिखाई दिये। उसने उनसे पूछा—"तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रहे हो?"

"हम बौने हैं। हममें से हर कोई, कोई न कोई काम करता है। मुझे पत्थर कहते हैं, कहीं अगर मैं बैठ गया, तो मुझे कोई नहीं हटा सकता।" बौनों में से एक ने कहा।

"अच्छा, बैठो तो, देखें।" बड़े बोद्धा ने कहा। पत्थर ज़मीन पर बैठ गया। बड़ा बोद्धा उसे न एक हाथ से हटा सका, न दोनों हाथों से ही। चकित होकर, उसने औरों की शक्ति के बारे में भी पूछा।

एक का नाम दिव्यकर्णी था। समुद्र के परे भी अगर कोई बात करे, तो उसे वह सुन सकता था। दूसरा दूर स्पर्शी था। समुद्र के परे अगर चींटी भी काटे, तो वह उसे जान सकता था। चौथा महाज्ञानी था। उसे संसार में जो कुछ हो रहा था, वह सब मालूम था। पाँचवाँ जबुहस्ती था। वह मुरगी के बिना जाने, उसके सेंक आनेवाले अंडे को उठाकर ला सकता था। छठा आरोहक था। वह उन दीवारों पर चढ़ सकता था, जिन पर मक्खियाँ तक नहीं जा सकती थीं। सातवाँ तीरन्दाज़ था। वह यदि सैकड़ों पक्षी आकाश में उड़ रहे हों, तो उनमें से, जिसको वह चाहता उसे बाण से मार सकता था। आठवाँ दारुवका था। यदि उसके हाथ में एक लाठी दे दी गई, तो कोई ऐसा काम न था, जिसे वह न कर सके।

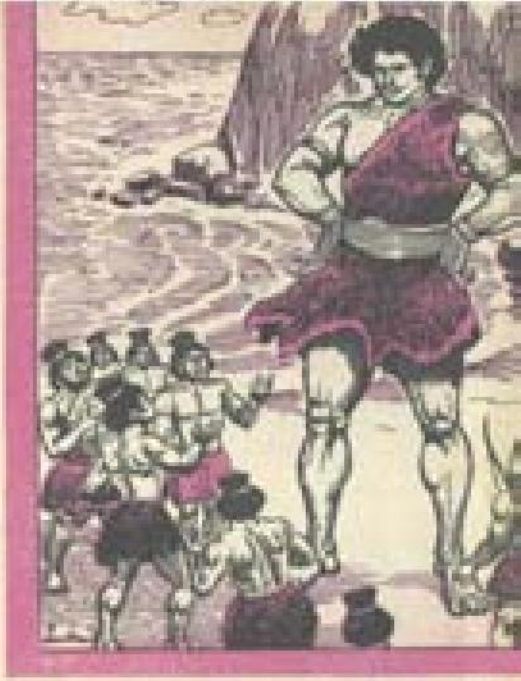

"अच्छा, यदि जहाज़ तैयार करना हो, तो तुम्हें कितना समय लगेगा?" बड़े बोद्धा ने पूछा।

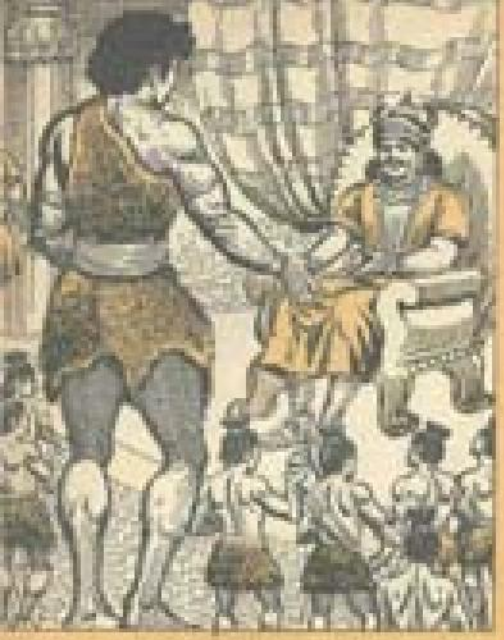

"तुम्हारे एक बार पैर के बल घूमने से पहिले।" दारुब्रह्म ने कहा।

बड़ा घोड़ा जहाँ खड़ा था, वहाँ वह एक बार घूमा। जब उसकी पीठ समुद्र की ओर थी, तो दारु ब्रह्म ने एक तिनके को, समुद्र के पानी पर फेंका। बड़े घोड़ा ने जब मुड़कर समुद्र की ओर देखा, तो वहाँ एक बड़ा जहाज तैयार था।

"मैं महाकाय द्वीप जा रहा हूँ। तुम मेरे साथ आकर मेरी सहायता करोगे? बड़े घोड़ा ने उन बैलों से पूछा।

"सहायता करेंगे।" उन्होंने कहा।

बड़ा घोड़ा और आठों बैलें जहाज पर सवार होकर, जल्दी ही महाकाय द्वीप पहुँचे। महाकाय का राजा बड़े घोड़ा को आया जानकर बड़ा खुश हुआ। उसने उसकी और उसके साथियों की खूब आवभगत की। उसने बड़े घोड़ा से कहा—"आप ठीक समय पर आये हैं। आज ही रानी का प्रसव हुआ है। पहिले जो उसके बच्चे हुए थे वे उसी दिन रात को गायब हो गये जिस दिन वे पैदा हुए थे। शायद आज रात को इस लड़के को भी कोई उठा ले जाये।"

"आप न डरिये। मैं और मेरे साथी आज रात आपके बच्चे की रक्षा करेंगे। यदि मैं रक्षा न कर सकूँ, तो आप मेरा सिर कटवा दीजिये।" बड़े घोड़ा ने कहा।

राजमहल में तिजोरी-सा एक कमरा उन्होंने देखा, उसमें बच्चे को और आया को रखकर, बड़ा घोड़ा और उसके साथी पहरा देने लगे। महाराजा ने बड़े घोड़ा से कहा—"तुमने यह कहकर गलती की, कि यदि तुम बच्चे की रक्षा न कर सके, तो तुम अपना सिर दे दोगे। इस बच्चे की आज हम रक्षा न कर सकेंगे।"

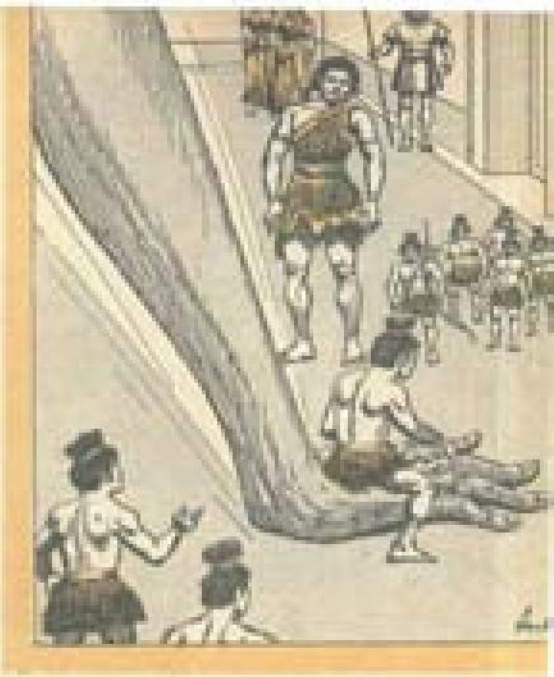

"तुम इतना जानते हो, यह बताओ। इस लड़के को कौन उठाकर ले जायेगा?" बड़े बोद्धा ने पूछा।

"चोर इस राजा की बहिन ही है। जो बच्चे चुराये हुए थे, वह ही उन्हें उठा ले गई थी। माई बहिन में बड़ी शक्ति है। बहिन मन्त्र वगैरह जानती है। अदृश्य रूप में वह किले में आयी, चिमनी में से हाथ बढ़ाकर वह बच्चों को उठा ले गई।" महाज्ञानी ने कहा। यह सुनते ही पत्थर चिमनी के निचले भाग में बैठ गया। "यदि उसने चिमनी के नीचे हाथ रखा, तो उसे फिर न उठा सकेगी।"

सब अपनी अपनी जगह बैठे थे। आधी रात के बाद दिव्यकर्णी ने कहा—"महाराज महाराजा की बहिन अपने किले से निकल रही है। चुराये हुए बच्चों को, प्यार से देखने के लिए अपने नौकरों से कह रही है। वह अब अपने घर की छत से ऊपर निकल रही है। उसके पर में न दरवाजे हैं, न खिड़कियाँ ही। उसके किले की दीवारें काँच की तरह चिकनी हैं।" थोड़ी देर बाद दिव्यकर्णी ने कहा—"आ गई है। पहरेदारों को मालूम भी नहीं हुआ और वह किले में चली आई।"

फिर एक काला हाथ चिमनी में से नीचे खिसकने लगा। उसे देखते ही, पत्थर ने उसे पकड़ लिया। हाथ ने पीछे हटने की कोशिश की। पर कोई चारा नहीं हुआ। आखिर हाथ टूट गया, पत्थर ने उस हाथ को कमरे में घसीटा। बोद्धा और बाकी बौने उस हाथ को आश्चर्य से देखने लगे। वे सब वह हाथ देखने में लगे थे कि उस राक्षसी ने अपना दूसरा हाथ कमरे में सरकाया। झटके में से लड़के को उठाकर ले गई।

भाइयों ने जब झूले की ओर देखा, तो वे चिल्लाई—"अरे....बचा...."

"अच्छा है कि हम अभी खिसक जायें और अपने जहाज पर सवार होकर भाग निकलें। नहीं तो सवेरा होते ही यह राजा हमारे सिर कटवा देगा।" बौनों ने कहा।

"भागना क्यों! चलो इस राक्षसी के पीछे चलें और राजा के तीनों बच्चे ले आयें।" बड़े बोद्धा ने कहा।

सब किले के बाहर चले आये और अपने जहाज में, राक्षसी की जगह पहुँचे। आरोहक ने लपुहत्ती को अपने कन्धे पर बिठाकर, किले की दीवार पर चढ़ कर, उसे धरती तरफ उतार दिया। लपुहत्ती ने, महाकाय महाराजा के बच्चों को बारी बारी से दिया। उन तीनों बच्चों को साथ लेकर, वे महाकाय द्वीप वापिस आये।

वे अभी पहुँचे न थे कि राक्षसी जान गई कि वे बच्चे ले जा रहे थे, वह उनके जहाज का पीछा करने लगी। वह कितनी दूर थी, दूर खड़ी बराबर बताता जाता था। तीरन्दाज तो उसकी इन्तज़ार में था ही, वह ज्योंहि उसकी नज़र में आई, उसने बाण छोड़ा और उसके मार्ग की आँख को फोड़ दिया। वह चीख मारकर समुद्र में गिर गई।

सवेरा होते ही, महाराजा प्रलय वक्ष की ओर भागा भागा आया। अपने तीनों बच्चों को देखकर, वह आश्चर्य में मूर्छित होते होते बचा। उसने एक सप्ताह तक अपने अतिथियों की खूब खातिरदारी की। उनके जहाज को उपहारों से भर दिया। फिर बड़े बोद्धा और उसके बौने साथियों को जाने दिया।

एक समय उज्जयिनी का राजा चादित्यसेन तेजस्वती नाम की वेश्या कन्या पर इतना मुग्ध हुआ कि उसने उससे विवाह कर लिया और उसको अपनी मुख्य रानी बना लिया। उनके एक लड़की हुई, जिसका उन्होंने चन्द्रकला नाम रखा।

चादित्यसेन एक क्षण भी अपनी पत्नी को छोड़ नहीं पाता था। उसे जब एक सामन्त के विद्रोह का दमन करने को जाना पड़ा, तो उसने तेजस्वती को एक हाथी पर सवार किया और स्वयं एक घोड़े पर सवार होकर साथ चलने लगा। कुछ दूर जाने के बाद न मालूम क्यों राजा का घोड़ा बिदक उठा और वह तेजी से आगे की ओर भागने लगा। राजा उसे रोक न सका। सैनिकों ने बहुत तेजी से घोड़े भगाये, पर वे राजा के घोड़े को पकड़ न पाये। क्या करते! वे रानी के साथ पीछे मुड़कर उज्जयिनी नगर चले गये।

चादित्यसेन का घोड़ा भागते भागते वहीं घने जंगल के बीच में रुका। जब वह कुछ वश में आया, तो राजा ने उसे घुमाया और अन्धेरा होते होते, उज्जयिनी पहुँच गया। परन्तु नगर के द्वार बन्द थे। इसलिए वह श्मशान के पास के ब्राह्मण मठ में रात काटने के लिए गया। परन्तु मठ के ब्राह्मणों ने राजा को पहिचाना नहीं और उसे अन्दर न आने दिया।

तब उस मठ में सुदर्शन नामक एक ब्राह्मण युवक ने दूसरों को डाँटा फटकारा। उसने दासियों द्वारा राजा की सेवा सुश्रूषा करवायी, उसके लिए भोजन तैयार करवाया,

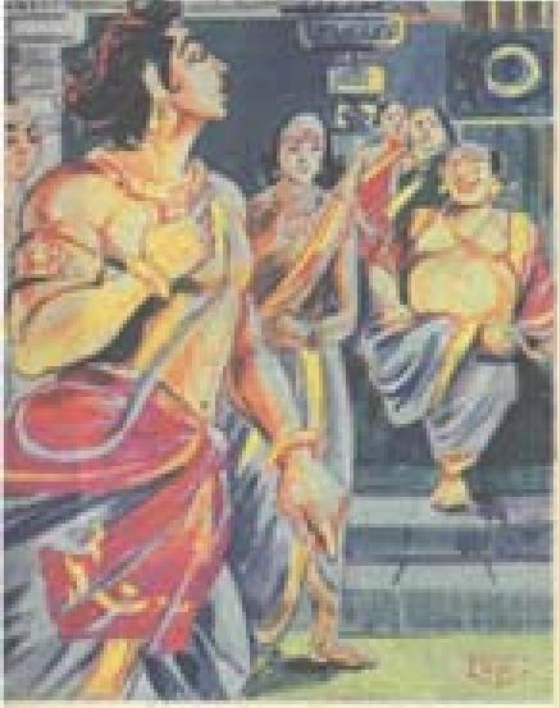

उसके घोड़े को दाना डलवाया। उसका अच्छा अतिथ्य सत्कार किया। राजा जब रात को सोकर उठा, तो घोड़ा जीन के साथ तैयार था। राजा इस सेवा पर बड़ा सन्तुष्ट हुआ। उज्जयिनी पहुँचकर उसने सुदर्शन और मठ के अन्य ब्राह्मणों को बुलवाया। सुदर्शन को हजार गाँव, धान, वाहन आदि, दिये और उसे अपने मन्त्रिवर्ग में पुरोहित नियुक्त किया। सुदर्शन ने वे गाँव और ब्राह्मणों में बाँट दिये। उनके साथ वह समान रूप से उनके दान का उपयोग करता रहा।

परन्तु ब्राह्मणों में धन का गर्व आ गया। आपस में लड़ लड़ाकर उन्होंने गाँवों की बुरी गति कर दी। किन्तु सुदर्शन उनके झगड़ों से दूर था। सचमुच वह शक्तिशाली था। अग्नि की आराधना करके उसका साक्षात्कार करके उसने वर पाया हुआ था कि स्मरण मात्र से आभेय सहस्र उसके हाथ में आ जाये।

एक बार ब्राह्मणों के झगड़े बहुत बढ़ गये। तब चक्रधर नाम के ब्राह्मण ने आकर कहा—"तुम बड़े मूर्ख ब्राह्मण होते हो। तुम अपने में से एक को नायक बनाओ और जैसा वह कहे, वैसा करो।"

मूर्ख ब्राह्मणों ने फिर झगड़ना शुरू किया। उनमें से हर कोई नायक होना चाहता था।

तब चक्रधर ने उनसे कहा—"श्मशान में तीन आदमियों को फाँसी दी गई है। तुम में से जो कोई रात को जाकर उनकी नाक काट लायेगा, वह सचमुच साहसी है। तुम उसे नायक चुन लो।"

इसके लिए और तो कोई न माना, पर सुदर्शन ने यह काम अपने ऊपर ले लिया। उसने आभेय सहस्र अपने हाथ में लिया। श्मशान में गया। फाँसी लगे हुए शवों की

नाक काट ली। जलते हुए घर से उन्हें बाँधकर निकल गया।

रास्ते में उसने एक सन्यासी को शव के ऊपर जप करते हुए बैठा देखा। सुदर्शन एक जगह छुपकर इसलिए बैठ गया कि देखें क्या होता है। देखते देखते शव के मुख से लपटें निकलने लगीं। उसकी नाभी में से सरसों के दाने निकले। सन्यासी ने उन दानों को लेकर शव की हथेली को छुआ। तुरत बेताल द्वारा आक्रान्त वह शव उठ खड़ा हुआ। सन्यासी उस पर जा चढ़ा। शव चलता पास के काली के मन्दिर में गया। वहाँ सन्यासी के उतरते ही वह शव गिर गया। सन्यासी ने देवी की पूजा की और कहा कि यदि उसने उसका माँगा वर न दिया, तो वह उस पर बलि हो जायेगा।

तब किसी का स्वर सुनाई पड़ा—"चारित्रसेन महाराजा की लड़की लाकर मुझे बलि दो, तुम्हारी इच्छा पूरी होगी।"

तुरत सन्यासी ने शव को बगबगा कर उठाया, उस पर बैठकर निकल पड़ा। बेताल द्वारा आक्रान्त वह शव आकाश में उड़ चला।

सुदर्शन को सन्यासी पर बड़ा गुस्सा आया। मेरे जीते जी देखें, यह राजकुमारी को कैसे बलि देता है—यह यह सोचकर वहीं खड़ा हो गया। थोड़ी देर में सन्यासी, राजकुमारी चन्द्रकला को लेकर आकाश में से मन्दिर में उतरा। इससे पहिले कि सन्यासी उसकी बलि देता, सुदर्शन मन्दिर में जा घुसा। तलवार से सन्यासी का सिर काट दिया।

वह सोच ही रहा था कि कैसे राजकुमारी को राजमहल पहुँचाये जाये कि उसे ये वाणी सुनाई दी—"उस सन्यासी को जो दाने मिले हैं, उनके कारण तुम्हें एक रात के लिए आकाश गमन की शक्ति मिलेगी।"

सुदर्शन यह सुनकर बड़ा सन्तुष्ट हुआ। सन्यासी की पोटली खोलकर दाने लेकर राजकुमारी को उठाकर वह बाहर आया। तब उसे फिर एक स्वर सुनाई पड़ा—"महावीर! एक महीने बाद यहीं आना।"

सुदर्शन ने उस स्वर से कहा—"अच्छा, वैसा ही करेंगा।" फिर राजकुमारी को लेकर आकाश में उड़ा और राजमहल में उतरा। उसने राजकुमारी

से पूछा—"मुझे जगी जाने दो। सवेरा होने पर ये दाने काम नहीं करेंगे। प्रातःकाल मुझे यहाँ कोई देखेगा, तो क्या क्या सोचा जायेगा!"

परन्तु चन्द्रकला ने उसे जाने न दिया। सुदर्शन ने उसको बहुत डरा देखकर सोचा कि यहीं रहा जाये। परन्तु उसे जल्दी ही नींद आ गई। राजकुमारी ने सवेरे तक आँखें बन्द न कीं। सवेरे होने के बाद उसको गहरी नींद सोता देख, उसने उसे उठाना ठीक न समझा।

सवेरे दासियाँ आयीं। उन्होंने राजकुमारी के अन्तःपुर में सुदर्शन को सोता देख, राजा से शिकायत की। राजा ने बवराकर उसे बुलवाया। उसने जो कुछ सुना था, राजा को वह सुनाया। फिर उसने शवों की नाकें, जिन्हें वह काट लाया था और सन्यासी के सरसों के दाने राजा को दिखाये। उसकी बातों को चक्कर ने आकर सिद्ध किया। श्मशान में नाक रहित शवों ने भी यह साबित किया। काली के मन्दिर में पड़े उस शव ने भी इसका समर्थन किया, जिसका उपयोग स्वामी ने किया था। इन सबके बाद राजा ने खुश होकर

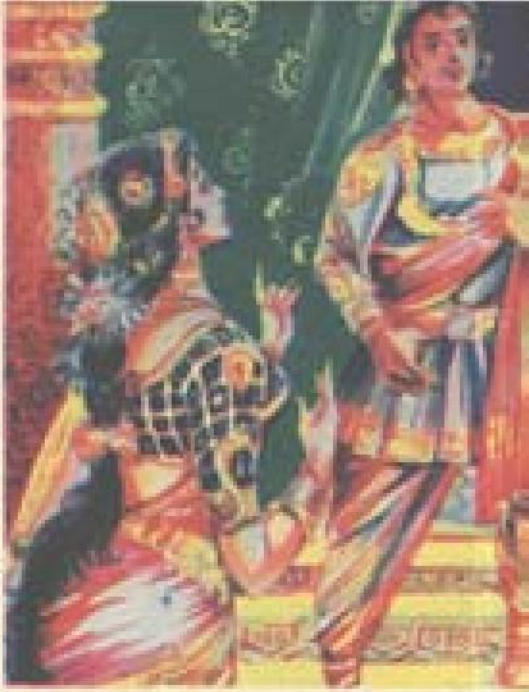

अपनी लड़की का उसके साथ विवाह किया। राज परम्परा के अनुसार उसको अपने घर में ही रख लिया।

कुछ दिन बीत गये। एक दिन राजकुमारी ने सुदर्शन से पूछा, जैसे कुछ याद आ गया हो, "उस दिन काली के मन्दिर में आपने एक महीना खत्म होने से पहिले ही जाने को कहा था। आज महीना खत्म हो गया है।"

"हाँ, तुमने खूब याद दिलाया।" कहकर, सुदर्शन पत्नी के सो जाने के बाद, आधीरात के समय तलवार लेकर काली के

मन्दिर की ओर गया। वहाँ उसे एक दिव्य भवन दिखाई दिया। उसमें एक देवता की थी। उसने उसे प्रेम से बुलाकर बिठाकर कहा—"मैं विद्याधर कन्या हूँ। मेरा नाम पद्मा है। तुम्हारे शक्ति-साहस ने मुझे आकर्षित किया है। अदृश्य होकर मैंने ही तुम्हें बुलाया था। मेरे प्रभाव के कारण ही तुम्हारी पत्नी ने तुम्हें वह बात याद दिलाई है। मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रही हूँ। मुझ से विवाह करो।"

सुदर्शन मान गया। उन्होंने गान्धर्व विवाह कर लिया। वह उसके साथ महल में रहने लगा। इस तरह कुछ दिन रहने के बाद पद्मा के पास उसकी एक सहेली आयी। उन्होंने कहा—"तुम मानव के संग रह रही हो, इसलिए विद्याधर क्रुद्ध हैं। वे तुम्हारा बुरा करने आ रहे हैं। तुम यहाँ से भली जाओ। पूर्वी समुद्र के पार कावेंटक नगर को पार करके क्षीरोद नदी के पार, उदय पर्वत के सिद्ध क्षेत्र में जाओ, वहाँ विद्याधर नहीं आ सकते। तुम्हें अपने विष की चिन्ता न करो। वह समर्थ है। वह जैसे भी हो, तुम्हारे पास पहुँच जायेगा।" पद्मा घबरा गई और उसने सहेली के

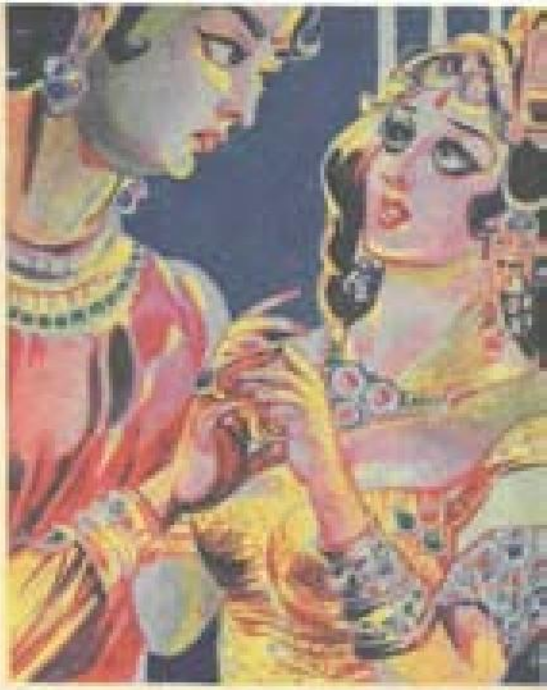

कहे अनुसार करने का निश्चय किया। उसने सुदर्शन को तंग न करना चाहा। जैसी जैसी बात थी, उसने वैसी वैसी कह सुना दी। उसे अपनी अंगूठी दी और अदृश्य हो गई। उसके साथ दिव्य भवन भी अदृश्य हो गया। सुदर्शन जान गया कि वह यक्षि के मन्दिर में था। सब स्वप्न की तरह था। फिर भी उसने उदय पर्वत जाने का निश्चय कर लिया। सवेरे होने पर उसे कोई न कोई पहिचान लेगा और राजा को सौंप देगा। राजा उसे अपने घर से बाहर जाने नहीं देगा।

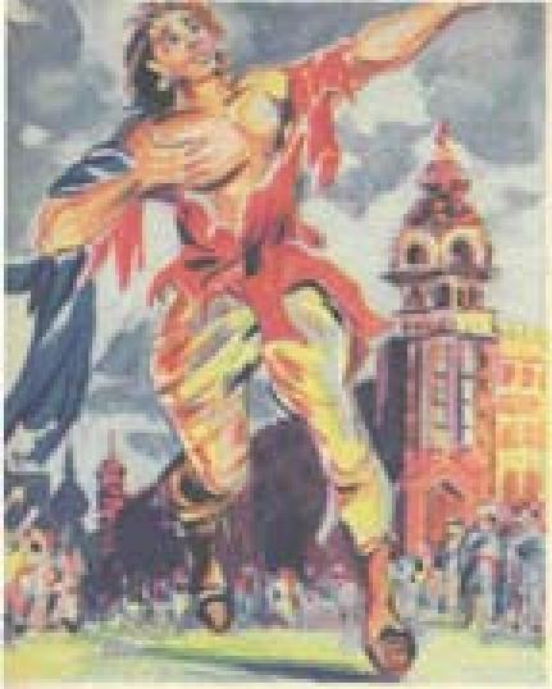

इसलिए सुदर्शन ने एक चाल सोची। उसने अपने सारे कपड़े फाड़ दिये। शरीर पर धूल पोत ली। "मद्दा....मद्दा" चिल्लाता निकल पड़ा। कई दिनों से लोग चिन्तित थे कि सुदर्शन कहाँ चला गया था, इसलिए वे चिल्लाये, "अरे....वह है सुदर्शन।" राजा को भी उसके बारे में पता लग गया। वह स्वयं आकर उसको लिवा ले गया, जो कोई कुछ पूछता, वह कहता, "मद्दा" सबको ऐसा लगा जैसे उसको पागलपन चढ़ गया हो। फिर उसको पकड़ गया, तो कहीं ऐसा न हो कि वह कहीं मर मरा जाये, इसलिए उसको स्वतन्त्र छोड़ दिया गया। वह घूमता घूमता मद्दा के लिए पूर्व की ओर निकल गया।

जाते जाते पौन्द्रवर्धन नगर आया। रात में ठहरने के लिए एक बूढ़ी ब्राह्मणी के घर गया। उस बुढ़िया से उसने एक बड़ी अजीब बात सुनी। उस नगर के राजा के बहुत दिनों बाद एक लड़की हुई थी। राजा ने उसका एक राजकुमार के साथ विवाह कर दिया। विवाह के दिन रात को जब दुल्हा कमरे में घुसा, तो वह मर गया। जब उसका विवाह फिर एक और राजा से किया गया, तो उसकी भी वही हालत हुई। यह जानने के लिए कि देखें यह कब तक होता है राजा ने नगर के ब्राह्मणों और ज्योतिषों से यह दिया है कि वे बारी बारी से एक एक को भेजें और राजा उसकी, अपनी लड़की से शादी करता जा रहा है और जो कोई उससे विवाह करता है, वह मर जाता है। उस दिन रात को, उस ब्राह्मणी के लड़के की बारी थी। वह बड़ी दुःखी थी।

यह सुन सुदर्शन ने कहा—"माँ, तुम दुःखी न हो। तुम्हारे लड़के के

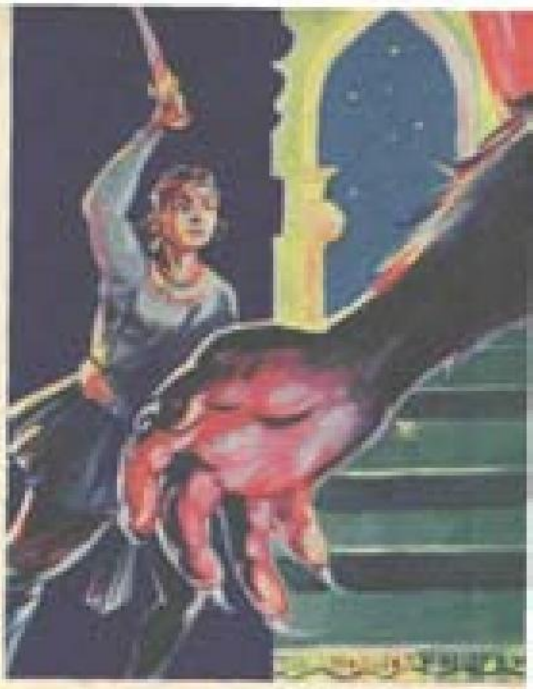

बदले, आज रात को मैं राजकुमारी के कमरे में आऊँगा।" सैनिक जब बुढ़िया के लड़के के लिए आये, तो सुदर्शन उनके साथ गया। वह शयन पक्ष में, आवेश लड़ग लेकर गया और वह देखने के लिए जागता रहा कि कौन दुल्हनों को मार रहा था। थोड़ी देर में कमरे के दरवाजे पर एक भयंकर राक्षस प्रकट हुआ। उसने अपना हाथ कमरे में फैलाया। सुदर्शन ने उसका हाथ एक चोट से काट दिया। राक्षस भाग गया।

राजा बड़ा सन्तुष्ट हुआ। उसने अगले दिन, अपनी लड़की का सुदर्शन से विवाह किया। सुदर्शन ने, अपनी नई पत्नी के साथ कुछ समय बिताया। फिर एक दिन रात को, जब वह सो रही थी, तो वह उठकर निकल पड़ा। जाते जाते वह पूर्वी समुद्र के किनारे के ताम्रलिप्ति नगर में पहुँचा। वहाँ उसे स्कन्ददास नाम का सामुद्रिक व्यापारी दिखाई दिया। वह माल लेकर, समुद्र पार जा रहा था। सुदर्शन भी उसके जहाज पर सवार हो गया। चलते चलते ऐसा लगा, जैसे जहाज किसी चीज से अटककर खड़ा हो गया हो। समुद्र को रक्त नैवेद्य देने पर भी वह न हिला। स्कन्ददास घबरा गया। "जो कोई इस जहाज को हिला देगा मैं उसको अपने धन में से आधा दूँगा। मैं अपनी लड़की की शादी भी उससे कर दूँगा।"

यह सुनकर सुदर्शन ने कहा—"मुझे रस्सी बाँधकर समुद्र में उतारिये। मैं जहाज की तह में क्या लगा है देखकर उसे हटा दूँगा।"

उसको रस्सी बाँधकर समुद्र में उतारा गया। सुदर्शन जब जहाज के नीचे गया,

तो उसने देखा कि पानी में एक महाकाय सो रहा था। जहाज उसकी पिंडली को छूकर रुक गया था। जब सुदर्शन ने आग्नेय अस्त्र से उस महाकाय की पिंडली काट दी, तो जहाज हिला। यदि जहाज में उसे वापिस आने दिया, तो सोमी स्कन्दरास ने सोचा कि उसको उसे अपनी आधी सम्पत्ति देनी होगी इसलिए उसने रस्सियाँ काट दीं। सुदर्शन को समुद्र में छोड़कर वह अपना जहाज ले गया।

सुदर्शन, जिस पिंडली को काटा था, उसी की नाव बनाकर, समुद्र पार कर गया। सात दिन बाद कार्कोटक नगर पहुँचा। वहाँ परदेशियों के लिए एक मठ था। उसे वहाँ के राजा चार्वर्मा ने बनवाया था। मठ के अधिकारी ने सुदर्शन के स्नान, खान-पान की व्यवस्था की। उसे वस्त्र भी दिये। जब वह मठ में था, तो शाम के समय उसे यह घोषणा सुनाई पड़ी—कल सवेरे जो कोई क्षत्रिय या ब्राह्मण राजकुमारी से विवाह करना चाहे, उसे रात को उसके अन्तःपुर में सोना होगा।

इसके बारे में जब उसने औरों से पूछा, तो उन्होंने कहा—"राजकुमारी का

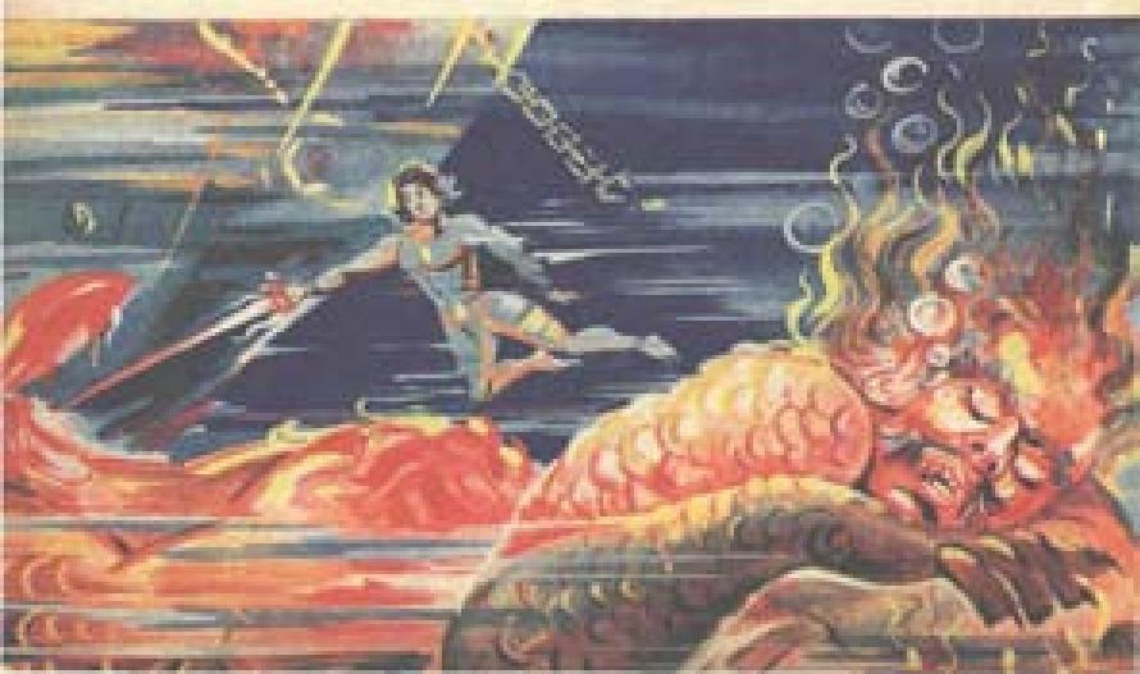

अन्तःपुर! वह तो मृत्यु का मुख है। जो कोई उसमें गया है, जीवित बाहर नहीं आया है।"

यह सुनकर, सुदर्शन को और भी बोध आ गया। वह राजमहल की ओर गया। आर्यवर्मा ने स्वयं उसका आदर सत्कार किया। उस दिन रात को सुदर्शन राजकुमारी के कमरे में गया। आवेश सहित हाथ में तलवार बैठ गया कि देखें क्या होता है! इतने में दरवाजे पर एक बड़ा राक्षस दिखाई दिया। उस राक्षस का दाहिना हाथ न था, उसने अपना बायाँ हाथ बढ़ाया। सुदर्शन जान गया कि पौन्ड्रवर्धन नगर में उसने ही इसका एक हाथ काटा था। अगर उसने अब दूसरा हाथ काट दिया, तो वह भाग जायेगा। इसलिए सुदर्शन ने उसको मार देना चाहा। उसने उसके केश पकड़ लिये। वह मारने ही वाला था कि राक्षस चिल्लाया—"मुझे न मारो। मेरी रक्षा करो।"

"तुम्हारा नाम क्या है! क्यों ऐसे क्रन्दन कर रहे हो!" सुदर्शन ने पूछा।

"मेरा नाम चमदंष्ट्र है। मेरी दो लड़कियाँ हैं। एक यहाँ है और दूसरी

दौन्दुकर्षन में थी। मैं नहीं चाहता कि दस्योक इनसे विवाह करें। इसलिए शंकर की आज्ञा पाकर मैं उनको मार देता हूं। दौन्दुकर्षन में एक ने मेरा हाथ काट दिया था और यहां तुम मुझे मारना चाहते थे। शंकर की आज्ञा समाप्त हो गई है।" राक्षस ने कहा।

सुदर्शन ने हँसकर कहा—"दौन्दुकर्षन में मैंने ही तेरा हाथ काटा था।"

"तो तुम मनुष्य नहीं हो। देवता हो। तुम्हारे लिए ही शायद शंकर ने मुझे आज्ञा दी थी, तो हम मित्र हैं। अब तुम मुझे याद करोगे। मैं तुम्हारी मदद के लिए आ जाऊंगा।" कहकर कमंदर, सुदर्शन से विदा लेकर चला गया। राजकुमारी ने सुदर्शन के पराक्रम की प्रशंसा की। उसने उसके साथ रात काट दी। अगले दिन राजा ने दोनों का विवाह कर दिया।

सुदर्शन ने नई पत्नी के साथ कुछ दिन गुजारे। एक दिन जब वह सो रही थी, तो नदी को खोजता वह निकल पड़ा। जब वह नगर के बाहर गया, तो उसने कमंदर को याद किया। वह आया। उसको नमस्कार करके खड़ा हो गया।

उसने सुदर्शन से कहा—"महा माम की विषाधरी उदयाद्रि पर सिद्ध क्षेत्र में है। मुझे वहाँ जाना है। क्या ले जाओगे?"

राक्षस मान गया। उसने सुदर्शन को अपने कन्धों पर चढ़ा लिया। सवेरे होते होते उसने साठ योजन का फासला तय कर लिया। सीतोदा नदी पूर्व की ओर के उदयपर्वत के पास पहुँचा और उसने उससे यह कहकर विदा ली कि सिद्धों के निवास स्थल उस पर्वत पर उसे जाने का अधिकार न था।

उस पर्वत पर मानव भी नहीं जा सकते थे। इसलिए सुदर्शन एक बावड़ी के पास बैठ गया। उसने देखा कि उस इलाके में स्त्रियों के दल विचर थे। उसके देखते देखते वहाँ अनेक देवता स्त्रियाँ कलश लेकर आईं और पानी भरकर ले गईं।

"यह पानी तुम किसके लिए ले जा रही हो?" उसने उनसे पूछा।

"महा माम की विषाधरी यहाँ रह रही है। उसके स्नान के लिए हम पानी ले जा रही हैं।" उन्होंने जवाब दिया। उनमें से एक ने कहा—"जरा यह कलश

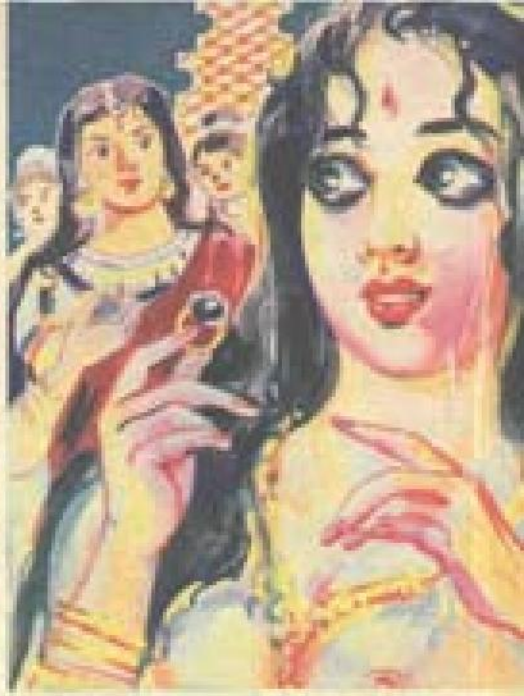

तो उठा दो।" सुदर्शन ने कलश उठाया और धीरे से वह अंगूठी भी उसने उसमें डाल दी, जो मद्रा ने उसे कभी दी थी। स्त्रियाँ चली गईं।

मद्रा को जब वह स्नान करा रही थी, तो एक कलश में से एक अंगूठी उस पर गिरी। वह जान गई कि वह अंगूठी वही थी, जो उसने अपने प्रिय को दी थी। उसने उनसे पूछा—"क्या वापड़ी के पास कोई नया आदमी दिखाई दिया था?" उन्होंने कहा कि उसने कलश उठाने में उनकी खूब मदद भी की थी।

"तो उसे अच्छी तरह स्नान कराकर, अलंकृत करके लाओ।" मद्रा ने उनसे कहा। थोड़ी देर में वे स्त्रियाँ उसको अलंकृत करके वहाँ ले आईं। मद्रा ने खुशी के आँसू बहाते उसका आलिंगन किया। सुदर्शन ने बताया उसके पास पहुँचने के लिए उसको कैसे कैसे कष्ट उठाने पड़े थे। मद्रा ने प्रेम से कहा—"न मुझे दासियाँ चाहिए, न सिद्ध ही। तुम ही मेरे नाथ हो।"

"तो क्या तुम अपने सुख, विलास छोड़ कर, मेरे साथ उजड़िनी जाओगी!" सुदर्शन ने कहा। मद्रा ने कहा, "जरूर" उसने अपने विद्याधरत्व को और सब विद्याओं को छोड़ दिया।

सुदर्शन ने वह रात उदय पर्वत पर काटी। अगले दिन उसने राक्षस को याद किया। उसके आते ही वह और मद्रा उसके कन्धों पर सवार हो गये और कार्कोटक नगर पहुँचे। वहाँ के लोग राक्षस को देखकर डर गये। सुदर्शन अग्निवर्मा की लड़की को साथ लेकर, सबसे व्यापारी स्कन्ददास के नगर गया। उसके किये हुए भोले के बदले उसने उसके धन

और लड़की को लेकर, तीनों स्त्रियों के साथ स्वर्ण राक्षस पर सवार होकर समुद्र पार कर पौन्ड्रवर्धन पहुँचा। उसके ससुर और सखी उसके लिए बहुत दिनों से चिन्तित थे। बहुत कोशिश करने पर भी वे उसका पता न जान सके थे। इसलिए वे उसे देखकर बड़े खुश हुए। उन्होंने ठहरने के लिए उसे बहुत मनाया। पर उसने न सुना। पौन्ड्रवर्धन की राजकुमारी को भी लेकर, वह राक्षस वाहन पर उज्जयिनी पहुँचा।

चार स्त्रियाँ और सुदर्शन को दोनों राक्षस को देखकर उज्जयिनी के नागरिक डरे और चकराये। आदित्यसेन अपने दामाद के आगमन के बारे में जानकर उसकी प्रतीक्षा करने लगा। राजा को देखते ही सुदर्शन ने राक्षस के कन्धों पर से उतरकर राजा को प्रणाम किया। राजा बड़ा खुश हुआ। सुदर्शन ने राक्षस के कन्धों पर से अपनी सब पत्नियों को उतारा और उनको भेंट दिया।

फिर सब मिलकर राजमहल में गये। चन्द्रकला निराशा के कारण कि वह अपने पति को फिर न देख सकेगी, सूखकर काँटा हो गई थी। वह अपने पति को देखकर फूले अंग न समायी।

"यह राक्षस तुम्हें कहाँ मिला! इतनी सारी पत्नियाँ कहाँ से ले आये!" जब ससुर ने पूछा, तो सुदर्शन ने सारी कथा शुरू से सुना दी। उसकी अद्भुत शक्ति पर राजा बड़ा आनन्दित हुआ। अपने दामाद की शक्ति के अनुसार उसे आधा राज्य दे दिया और उसका राज्याभिषेक उत्सव उसने बड़े वैभव के साथ मनाया।

नीची गर्दनवाला

पचालाल एकबार किसी काम पर पहाड़ पर गया और जब वापिस आ रहा था, तो दुपहर हो गई। कहीं बैठकर उसने भोजन करने की ठानी। वह एक बाग के पास आया। उस बाग के पीछे एक धनी का मकान था। बाग में एक आदमी, जो लकड़ी फाड़ रहा था, थक थकाकर लेटा हुआ था, और पाँच छः वर्ष का एक लड़का उसे उठाकर कह रहा था। "माँ ने पैसे लाने के लिए कहा है। मुझे भूख लग रही है।"

"अरे क्या करूँ! जब तक मैं सब लकड़ी न फाड़ दूँगा, तब तक इस घर का मालिक पैसे न देगा। कहीं पैसे माँग लूँगा तो कुछ खरीदकर खा लेना मैं इन लकड़ियों को काटकर, पैसे लाकर तुम्हारी माँ को मौंड बनाकर खिला दूँगा।" पिता ने कहा।

"किससे माँगूँ! कौन देगा!" कहता वह लड़का रोया। इतने में लकड़ी काटनेवाले को पचालाल दिखाई दिया। उसने पचालाल के पास आकर कहा—"अगर आपके पास खाना दो आने हो, तो दीजिये। लड़के को बड़ी भूख लग रही है।"

पचालाल ने एक पेड़ के नीचे खाने की अपनी पोटली खोली। उसने लकड़ी काटनेवाले और उसके लड़के को भी खाने के लिए कहा। जब तीनों ने मिलकर खा लिया, तो पचालाल ने पूछ पाछकर, लकड़ी काटनेवाले की हालत जान ली।

थोड़ी दूरी पर, लकड़ी काटनेवाला का झोपड़ा था। उसने उसकी पत्नी बीमार पड़ी

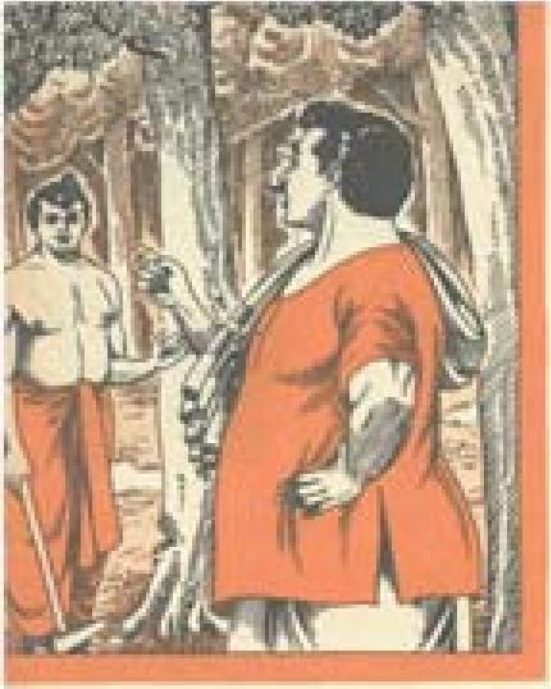

थी। उस घर का मालिक बिना लकड़ी काटे उसको एक पैसा न देगा। शायद उस पैसे से ही, उसे अपनी पत्नी की दवादारू और खाने पीने का इन्तज़ाम करना था। जो कुछ रोज़ कमाता उसी दिन खर्च हो जाता था।

पक्षाराज ने अपनी अंटी खोलकर देखी, उसमें जो कुछ रेजगारी थी, वह खर्च हो चुकी थी, एक सोने के मुहर बाकी रह गई थी। पक्षाराज ने बिना किसी सोच के उस सोने की मुहर को लकड़ी काटनेवाले के हाथ में रखा। "इसे ले जाओ अपनी पत्नी का इलाज करवाओ।"

"परन्तु बिना इन लकड़ियों को काटे कैसे जाऊँ!" लकड़ी काटनेवाले ने पूछा।

"जब तक तुम नहीं आ जाते, तब तक मैं लकड़ियों को काटता रहूँगा। लकड़ी काटने की मेरी आदत है। यदि मालिक ने कुछ पूछा, तो मैं उससे कह लूँगा।" पक्षाराज ने कहा।

लकड़ी काटनेवाला कुछ झिझकता झिझकता सोने की मुहर लेकर, लड़के को साथ लेकर चल पड़ा। पक्षाराज कुड़ता उतारकर, एक तरफ रखकर, लकड़ियाँ काटने लगा। थोड़ी देर बाद घर का मालिक बाहर आया। किसी अनजाने को लकड़ी काटता देख, उसने पक्षाराज से पूछा—"तुम कौन हो! वह कहाँ है!"

"मैं उसका रिश्तेदार ही हूँ। उसकी पत्नी बीमार है, उसे देख आकर वह शायद वह आ जायेगा। उसके आने तक मैं ये लकड़ियाँ काटता रहूँगा।" पक्षाराज ने कहा।

"अच्छा, तो काटो, अच्छी तरह काटना। समझे! हाँ, अभी कहे देता हूँ कि तुम्हें जरूर से मजदूरी नहीं मिलेगी।" रईस ने कहा।

"मैं भला क्यों जंगल से मजदूरी माँगूँगा!" पन्नालाल ने कहा।

रईस कुछ दूर गया और लकड़ी काटते हुए पन्नालाल को ध्यान से देखने लगा। देखने में पन्नालाल लकड़ी काटनेवाला नहीं मालूम होता था, पर वह उस लकड़हारे से अच्छी तरह लकड़ी काट रहा था। वह सोच ही रहा था कि कल भी उसे लकड़ी काटने के लिए बुलाया जाये कि इतने में लकड़ी काटनेवाला आ गया और उसने पन्नालाल से कुल्हाड़ी माँगी। "अरे, इतनी जल्दी आ गये!" पन्नालाल ने पूछा।

"आप दानी हों तो क्या! मुझे दरिद्र को लेने का भाग्य भी तो होना चाहिए। आपकी दी हुई सोने की मुहर मैं अंटी में बाँधकर गया था न! न जाने वह कब कहाँ गिर-गिरा गई!" लकड़ी काटनेवाले ने कहा।

सोने की मुहर के बारे में सुनते ही रईस ने उनके पास आकर पूछा—"सोने की मुहर! कहाँ से आई!"

"मैंने दी थी और इसने उसे वहीं फेंक फाँक दी।" पन्नालाल ने कहा।

"मैं भी तो यही पूछ रहा हूँ कि सोने की मुहर तुम्हारे पास कहाँ से आई!

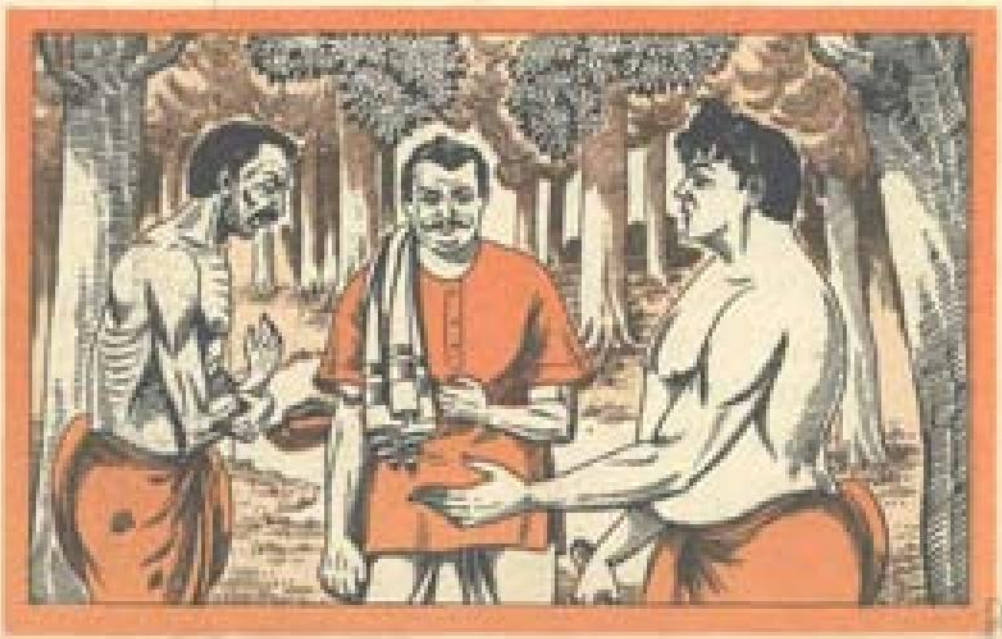

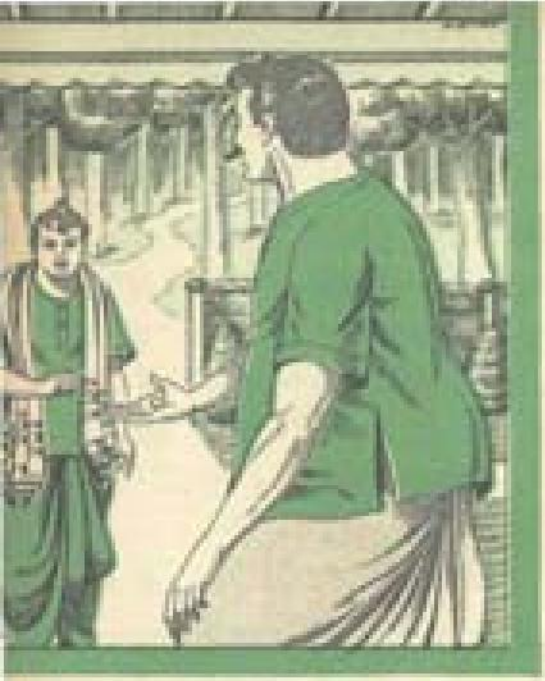

आज सवेरे मैं इस मुहरें, मंडी में बेचकर आया था, जब गाँठ खोली तो एक नहीं थी। वह तुम्हें मिल गई है और तुम यूँ दिखा रहे हो, जैसे एक ने दी हो और दूसरे ने खोयी हो। उसे जहाँ भी रखा हो, लाकर दो, नहीं तो मैं दोनों की खबर लूँगा।" घर के मालिक ने कहा।

पखावाज और लकड़ी काटनेवाले ने बहुत कहा पर रईस ने न सुनी। आखिर पखावाज ने कहा—"यदि आपकी मुहर खो गई है, तो यहाँ कहाँ होगी, आपने ठीक तरह खोजा नहीं होगा। आप चूँकि व्यर्थ मुझे दोष दे रहे हैं इसलिए मैं उसे ढूँढ़े देता हूँ। मैं यह बदनामी नहीं सह सकता।"

वह सोने की मुहर खोजने लगा। धनी ने लकड़ी काटनेवाले से कहा—"अरे, देख क्या रहे हो! तुम अपना काम करो।" और वह पखावाज को गौर से देखने लगा। धनी को वह विचित्र-सा लगा। क्या वह उस मुहर को खोजता रहेगा, जो खोई नहीं गई है, या अन्त में वह अपनी एक मुहर देकर यह कहेगा कि वह मिल गई है।

शाम तक खोजने के बाद, उसे मुहर मिल गई। उसने उसे लाकर रईस को देते हुए कहा—"यह लीजिये, अपनी सोने की मुहर। अगर अच्छी तरह खोजा जाये, तो नहीं मिलेगी! अच्छा हुआ वह मिल गई, नहीं तो मैं बिल्कुल चोर ठहराया जाता।"

इस बीच जलपहारे का काम हो गया। धनी ने अपनी पत्नी को बुलाया और लकड़ी काटनेवाले को उसकी मजदूरी दिलवा दी। लकड़ी काटनेवाला तुरत पखावाज के साथ चल पड़ा। धनिक बड़ा खुश था कि उसने

बातों बातों में एक मुहर चाकी थी। इतने में उसका छोटा लड़का, जो घर के सामने खेल रहा था, चिल्लाता घर की ओर भागा। कुछ लड़कों ने कंकड़ पर पत्थर फेंका और वह चिल्ला कर, धनी के लड़के की ओर दौड़ा। उसे देख वह डर कर भागा और नीचे गिर पड़ा।

वह देख धनी अपनी थोड़ी सम्पत्ति, एक छकड़े में लड़के के पास आया। घर में से "अरे, अरे" कहती लड़के की माँ भी आई। दोनों उसे अन्दर ले जाकर, उसके घावों की मरहम पट्टी करने लगे।

यह सब जब हो रहा था, तो पक्षाघात और लकड़ी काटनेवाला बहुत दूर जा चुके थे। वे जानते भी न थे कि क्या हुआ था। रास्ते में लकड़ी काटनेवाले ने पक्षाघात से कहा—"हुजूर, आपने इतनी कोशिश करके, सोने की मुहर खोज-खाज कर उसे दी। परन्तु वह आपकी ही है। मैंने उसे खो दिया था और आपने उसे खोजकर उसे दे दिया।

"यह कैसे कहा जा सकता है! न मालूम तुम्हारी मुहर कहाँ गिरी होगी और न मालूम किसको मिली होगी। या वही

होगी, वहाँ गिरी थी, कौन कह सकता है!" पन्नालाल ने कहा।

चूँकि तब अन्धेरा होने लगा था, इसलिए पन्नालाल ने वह रात, उस लकड़ी काटनेवाले के घर ही काट देना चाही। उसे यही खेद था कि वह लकड़ी काटनेवाली की किसी तरह मदद नहीं कर पाया था। उसकी खोयी हुई मुहर, जब तक वापिस न मिल जावे, तब तक उसे सन्तोष न होगा।

अब अगले दिन लकड़ी काटने के लिए लकड़ी काटनेवाले धनी के बाग की ओर गया, तो वह भी साथ गया। पन्नालाल की नजर जमीन पर ही गड़ी थी, बाग से जो रास्ता धनी के घर जाता था, उसे वहाँ एक मुहर दिखाई दी। पन्नालाल ने उसे उठाकर खुशी-खुशी कहा "देखा! तुमने बूँदि धनी को बुरा बताया था। देखो यह है वह मुहर, जो तुमने खोदी थी। तुम इसे ले दोगे, इसलिए मैं इसे भुनवाकर, तुम्हारी पत्नी को देकर, अपने रास्ता चला जाऊँगा।"

लकड़ी काटनेवाले ने लकड़ी काटते देखा कि धनी सारी जमीन छान-सा रहा था। जब उसके लड़के की मरहम पट्टी के बाद, उसने बूँदी वाली हुई मुहर के बारे में बहुत सोचा, पर उसे कुछ न मालूम हुआ कि वह कहाँ थी, कहाँ गिर गई थी! उस भगदौड़ में, वह बाग में कहीं गिर गई होगी। कई महीनों तक सिर नीचा किये वह उस मुहर को ही खोजता रहा, इसलिए उसकी गर्दन ही झुक गई और उसे नीचा देखकर चलने की आदत हो गई।

दाँव पर दाँव

मुराक देश के राजा शत्रुघ्न ने पिता के बाद, गद्दी पर जाने पर भी, विवाह न किया। कई राजा उसे अपनी लड़की देना चाहते थे, पर एक लड़की भी उसे अच्छी न लगी। शत्रुघ्न को शादी करता न देख, उसके सम्बन्धी, मित्र, वगैरह बड़े चिन्तित थे। इतने में शत्रुघ्न को मालूम हुआ कि कुन्तल की राजकुमारी शोभनाम्बी अत्यन्त सुन्दर थी और उससे विवाह करने के लिए कई लालायित थे। यह जानकर सौ सैनिकों को साथ लेकर कुन्तल देश गया। उसने अपने सैनिकों को राजधानी के आस पास के जंगल में छोड़ दिया। सामान्य वेष में वह नगर में गया। राजमहल के बगीचे में, शोभनाम्बी को देखकर उसने उससे विवाह करने का निश्चय किया। उसने चौका वाकर शोभनाम्बी को देखा, उसे बताया कि वह कौन था। उसके सामने उसने अपनी इच्छा भी जाहिर की।

शोभनाम्बी ने उससे कहा—"मैंने बहुत पहिले ही, आप के बारे में सुनकर, आपको मैंने अपना वर बना लिया था। मैंने बहुत प्रतीक्षा की, पर आपने मेरे पिता को सूचना भी न दी कि आप मुझ से विवाह करना चाहते थे। इस बीच जो राजा मुझ से विवाह करने आये, मैंने उन सब को इनकार कर दिया। आखिर मेरे पिता ने तंग आकर, मैं मानूँ या न मानूँ, मेरा विवाह पास के राजा वज्रवर्मा के साथ करने का निश्चय कर लिया। वज्रवर्मा मुझ से शादी करने के लिए जिद पर हैं। यही नहीं, वह हमारी सीमा पर

सन्तोषकुमार

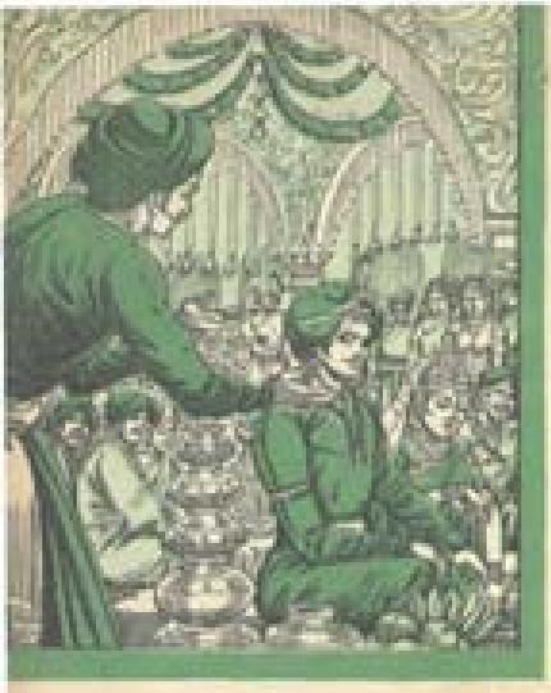

बलवान राजा है। मैंने अपने पिता से कहा कि जल्दी न करें। मुझे एक वर्ष समय दीजिये, मैंने कहा। वे इसके लिए मान गये। इस समय के समाप्त होने से पहिले ही आप आ गये। अब आप देरी न कीजिये। मेरे पिता जी से पूछिये। जब वे मुझ से पूछेंगे, तो मैं कह दूँगी कि मैं आप से शादी करने के लिए तैयार हूँ।"

शत्रुघ्न यह सुनकर बड़ा सन्तुष्ट हुआ। अगले दिन वह अपने आदमियों के साथ, कुन्तल राजा के पास गया और उससे कहा कि वह शोभनाङ्गी से विवाह करना चाहता था। राजा ने शोभनाङ्गी से पूछा, तो उसने भी अपनी स्वीकृति दे दी।

राजा ने भरे दरबार में शत्रुघ्न का परिचय कराया और यह प्रकट किया कि वह अपनी लड़की का उसके साथ विवाह करनेवाला था। शीघ्र ही विवाह का मुहूर्त निश्चित कर दिया गया।

विवाह से पहिले, दावतें और मनोरंजन की ओर ज़ोर से व्यवस्था की गई। उसमें शत्रुघ्न के लोग, राजा के सम्बन्धी और नगर के प्रमुखों ने भाग लिया। ऊपर आसनों पर राजा और वर बधू बैठे थे। जब सब मनोरंजन में व्यस्त थे, तब एक युवक भागा भागा आया। उसने शत्रुघ्न को सम्बोधित करके कहा—"प्रभु! एक बात....."

सब से अधिक ओज शत्रुघ्न में ही था। उसने कहा—"कहो, क्या चाहते हो?"

"राजकुमारी शोभनाङ्गी और ये मनोरंजन सामग्री मुझे दे दीजिये। वचन देकर न मुकरिये।" उस युवक ने कहा।

शत्रुघ्न को काठ मार गया। उसके मुख से बात न निकली।

वह युवक वज्रवर्मा था। उसे शोभनाङ्गी ने पहिचान लिया था। पर वह शत्रुघ्न को

वचन देने से न रोक सकी। परन्तु अब उसने शत्रुञ्जय को सारी बात समझा दी और वह भी बता दिया कि क्या कहे।

बलवर्मा ने सब के सुनते हुए ज़ोर से कहा—"क्यों नहीं बात करते? कहिये कि वचन देकर मुकर गये हैं।"

शत्रुञ्जय ने इस बीच शोभनाङ्गी की सलाह सुन ली थी। उसने बलवर्मा से कहा—"शोभनाङ्गी के साथ मेरी सगाई हो गई है, इसलिए उसे देने का अधिकार मुझे है। पर ये डाकते और मनोरंजन मेरे नहीं हैं। इसलिए उन्हें देने का अधिकार मुझे नहीं है।"

शोभनाङ्गी ने अपने पिता से बलवर्मा को बहलाया—"यदि आप अगले साल इसी समय आयें, तो मैं अपनी लड़की के विवाह की व्यवस्था करके, डाकत और मनोरंजन का भी इन्तज़ाम करूँगा।"

इस घटना के कारण शत्रुञ्जय का विवाह रद्द हो गया। वह शोभनाङ्गी से और उसके पिता से, जो कुछ आगे करना था, उसके बारे में बताकर, अपने लोगों के साथ वापिस चला गया।

एक वर्ष बीत गया। शोभनाङ्गी और बलवर्मा के विवाह का दिन आया। उस

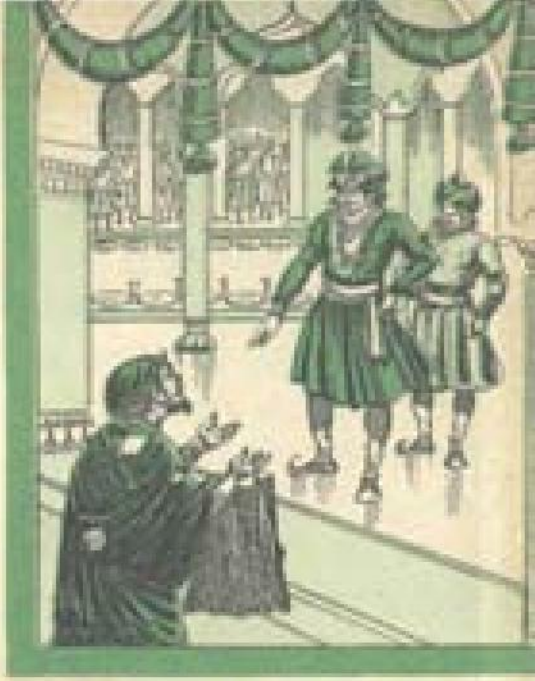

विवाह के सम्बन्ध में जो डाकत हुई, उसमें शत्रुञ्जय अपने सौ सैनिकों के साथ हाज़िर हुआ। परन्तु सबने वेष बदल रखे थे। शत्रुञ्जय फटे कपड़े पहिनकर बूढ़े का भेस बदलकर दूर भिखारियों में खड़ा था। उसके हाथ में एक झोला था। मनोरंजन के बाद, जब डाकत का समय आ गया, तो उसने बलवर्मा के पास जाकर कहा—"प्रभु एक बात।"

"मेरे परिवार और मेरी होनेवाली पत्नी के अलावा जो भी माँगोगे, उसे दूँगा।" बलवर्मा ने कहा।

"हम गरीबों को भला उससे क्या काम! इस झोले में खाना भरवा दीजिए। हम बांट कर खा लेंगे।" शकुन ने कहा। शकुन तहाँवाला झोला लाया था, वह देखने में तो छोटा था, पर तहें खुलती खुलती, बहुत बड़ा हो जाता था, यह बलवर्मा न जानता था। मीजर का लाकर खाना उसमें डालते जाते थे और शकुन तहें खोलकर उनको खाली जगह दिखाता जाता था। उसने जब बीच की तह खोली, तो बलवर्मा पकड़ा गया। यदि वह भर दिया जाता, तो अतिथियों के खाने के लिए कुछ न बचता। बलवर्मा को पकड़ाता देख, शकुन ने कहा—"हुजूर, मुझे कोई जिद नहीं है कि आप अपना वचन पूरा ही करें।" यदि आपने इस झोले की सब चीजों को पैर से कुचलकर कहा—"यह काफी है, झोला भर गया है। तो मैं सन्तुष्ट हो जाऊँगा।"

बलवर्मा खुश हुआ। उसने झोले में पैर रखकर खाने की चीजों को कुचलकर कहा—"अब काफी है, थैला भर गया है।" उसी समय शकुन ने थैले की तहें पूरी तरह खोल दीं और बलवर्मा को उसमें बन्द करके बाँध दिया।

शकुन के सीटी बजाते ही उसके सैनिक भागे भागे आये और उन्होंने बलवर्मा के लोगों को पकड़ लिया। शकुन ने अपना कूबड़ का भेस उतार दिया और यह घोषित किया कि वह शोभनाम्गी से विवाह करने को तैयार था। उसे रोकनेवाला कोई न था। दोनों का विवाह निर्विघ्न हो गया।

विवाह होने के बाद, शकुन ने बलवर्मा और उसके साथियों को छोड़ दिया और उन्हें भेज दिया। फिर बलवर्मा का मुँह कभी आसपास न दिखाई दिया।

साहसी कन्या

एक गाँव में एक बड़ा परिवार रहा करता था। उसमें बहुत-से लड़के और लड़कियाँ थीं। पिता चाहे कितनी भी मेहनत करे, परन्तु बच्चों को खाना और कपड़ा दे नहीं पाता था। माँ हमेशा फटे कपड़े सीती रहती थी। आखिर हालत इतनी बिगड़ गई कि माँ बाप ने अपनी बड़ी तीन लड़कियों को घर से बाहर भेजते हुए कहा—"अब तुम अपना काम देखो और अपने पेट भरो।" घर तो पहिले ही नरक था, इसलिए उन लड़कियों को घर से जाना खास अखरा नहीं। वे जंगल पार करके, अपने देश जाने के लिए निकल पड़ीं। वे दिन-भर जंगल में से चलती रहीं। जब सूरज पश्चिमी तरफ पहुँचा, तो अन्धेरा हो गया। जंगल से लगा, उनको एक घर दिखाई दिया। जब उन्होंने घर में झाँककर देखा तो उनको एक स्त्री दिखाई दी। उन्होंने उससे कुछ खाने को देने के लिए कहा।

"तुम यहाँ क्यों आये! मेरा पति राक्षस है। तुम्हें देखते ही, वह तुम्हें खा लेगा।" उस स्त्री ने कहा।

"हमें कोई डर नहीं है। भूख के कारण मर रहे हैं।" लड़कियों ने कहा।

राक्षस की पत्नी ने कुछ सोचकर कहा—"अच्छा तो अन्दर आओ। मैं तुम्हें भोजन दूँगी।" खाना खाकर, उनमें कुछ बल आया। वे बाहर जाकर कहीं सोने की सोच रही थीं कि घर के बाहर ज़ोर से किसी का आना सुनाई दिया। राक्षस की पत्नी ने झट उन तीनों लड़कियों

को छुपा दिया। राक्षस ने अन्दर आते ही कहा—"नर गन्ध आ रही है।"

"तुम्हें हमेशा नर गन्ध ही आती रहती है। पहिले खाना खाओ। तुम्हें एक अच्छी खबर सुनाऊँगी।" उसकी पत्नी ने कहा। राक्षस के खाना खाने के बाद, उसने तीनों लड़कियों को राक्षस के सामने लाकर कहा—"ये अच्छी लड़कियाँ हैं। इन्हें भोजन दे दिया है। रात हमारी लड़कियों के साथ सो रहेंगी।"

राक्षस के भी तीन लड़कियाँ थीं। उनके साथ वे भी सो गईं। सब के सोने के बाद, राक्षस ने अपनी लड़कियों के गले में, रस्सियों के हार डाल दिये और तीनों बहिनों के गले में ताने के हार डालकर वीणा लेकर चला गया। सब से छोटी बहिन, मल्लिका यह सब आहट सुनकर जाग गई। सब के सोने के बाद, वह बड़ी मुश्किल से जागी रही। राक्षस की लड़कियों के गले के हार उसने अपने गले में और अपनी बहिनों के गले में डाल दीं और अपने गले के हारों को राक्षस की लड़कियों के गले में डाल दिया।

आधी रात के समय, राक्षस आया। उसने सब के गले टटोले। तागेवाली लड़कियों को, बाहर की लड़कियाँ समझकर, उनको बिस्तर से उठाकर, कंधे पे डालकर, गदा से उनके सिर तोड़कर उन्हें मारकर ज़ोर से हँसकर चला गया।

मल्लिका की दोनों बहिनें घबराती उठीं। मल्लिका ने उनको चुप रहने के लिए कहा, उनको साथ लेकर वह झट निकल गई।

सवेरा होते होते, जंगल के पार, एक राजा के घर पहुँची। मल्लिका साहस करके राजा के पास गई। उसने कहा—"हम तीनों गरीब बहिनें हैं। अभी अभी एक

भयंकर राक्षस से जान बचाकर आई हैं। आपके राज्य में, ऐसे राक्षसों का होना बड़ा खतरनाक है।"

"कहना आसान है। पर उसके पास कुछ मन्त्र हैं। उसके पास एक तलवार है। यदि उसे कोई ने आया, तो उसका बल आधा हो जायेगा।" राजा ने कहा।

"मैं कोशिश करूँगी, यदि मैंने राक्षस की तलवार लाकर दी, तो आप क्या देंगे?" मल्लिका ने कहा।

"तुम्हारी बड़ी बहिन की शादी, मैं अपने बड़े लड़के से कर दूँगा। ठीक है न?" राजा ने कहा। मल्लिका इसके लिए मान गई। राजा ने उन तीनों बहिनों के लिए अपने महल में ही भोजन की व्यवस्था की।

रात को मल्लिका अकेली राक्षस के घर की ओर गई। उसने देखा कि तलवार उसके पलंग के पास ही पड़ी थी। जब वह खाना खा रहा था, तो वह उसके पलंग के नीचे घुसकर बैठ गई। खाकर राक्षस पलंग पर आया और झट खर्राटे मारने लगा।

मल्लिका पलंग के नीचे से तलवार निकालकर धीमे धीमे कदम रखती, बाहर आई। पर दुर्भाग्यवश वह जब बाहर

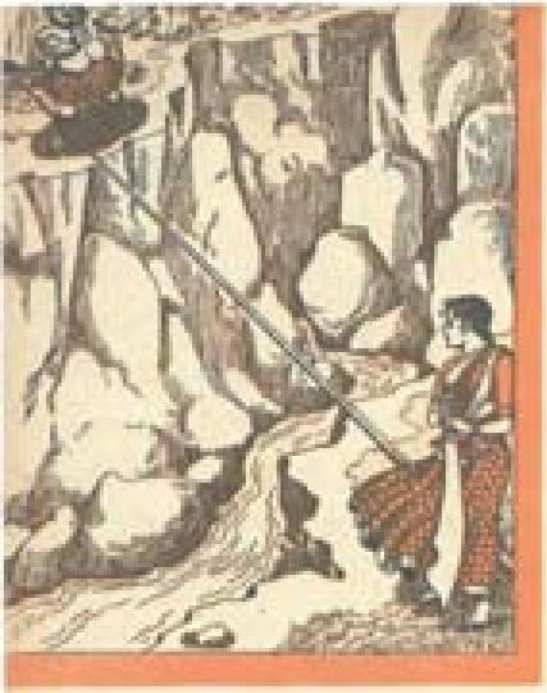

निकल रही थी, तो तलवार हवा में लहराते हुए और ललकारते हुए। वह आहट सुनकर राक्षस उठा। मल्लिका को तलवार लेकर, भागते आता देख, उसका पीछा करने लगा। इससे पहिले कि वह उस तक पहुँच सका, वह हरिण की तरह भागती भागती, ताड़ का पुल पार करके परली तरफ चली गई। उस पर एक ही ताड़ था, राक्षस के उस पर पैर रखते ही वह टूट जाता और वह गिरकर मर जाता। इसलिए वह दान्त पीसता वहीं रहा था—"इस बार तुम आये तो तुम्हारे प्राण लेकर रहूँगा।"

"फिर आऊँगी, फिर आऊँगी, देखूँगी कि क्या करते हो!" कहती मल्लिका राजा के घर चली गई।

राक्षस की तलवार पाकर राजा बड़ा सन्तुष्ट हुआ। उसने अपने वचन के अनुसार, अपने बड़े लड़के का विवाह मल्लिका की बड़ी बहिन से कर दिया। फिर उसने मल्लिका से कहा—"मल्लिका, उस राक्षस के पास एक चमड़े की थैली है। यदि उसे भी ले आये, तो तुम्हारी दूसरी बहिन की मैं अपने दूसरे लड़के से शादी कर दूँगा।"

साहसी मल्लिका इसके लिए भी मान गई। वह रात के समय राक्षस के घर गई। वह जब खाना खा रहा था, तो उसने उसका पलंग डटोलकर देखा, राजा ने जिस थैली के बारे में बताया था, वह उसके तकिये के नीचे ही थी। लेकिन इससे पहिले कि वह उसे लेकर भाग जाती, उसे राक्षस के आने की ध्वनि सुनाई दी। वह उसके पलंग के नीचे छुप गई।

राक्षस का पलंग पर लेटना था कि वह नाक बजाने लगा। थोड़ी देर बाद, मल्लिका पलंग के नीचे से निकली और उसके तकिये के नीचे से उसने आसानी से

बेली निकाल ली। पर जब वह दरवाजे की ओर जा रही थी, तो उसका पैर एक हँडे से लगा। उसके लुढ़क जाने के कारण आवाज हुई। राक्षस ने उठकर मल्लिका का पीछा किया। पर इस बार भी उसके पकड़ने से पहिले मल्लिका ताड़ के पुल के पास चली आई। इसलिए वह राक्षस उसका कुछ न बिगाड़ सका।

मल्लिका की लाई हुई बेली लेकर राजा ने अपने दूसरे लड़के की उसकी मँझली बहिन से शादी कर दी।

शादी का जोर शोर खतम होते ही, राजा ने मल्लिका से कहा—"मल्लिका, राक्षस के हाथ की अंगुली में एक अंगूठी है। यदि तुम उसे भी ले आईं, तो इस राक्षस का आतंक खतम हो जायेगा। उसको खाना बड़ा खतरनाक है। यदि तुम उसे ले आओ, तो मैं तुम्हारी शादी, अपने तीसरे लड़के से कर दूँगा।"

"यदि इस अंगूठी के ले आने से राक्षस का आतंक अता रहेगा, तो वह काम कितना भी खतरनाक हो, मैं आगा पीछा नहीं करूँगी। मैं जाकर उसकी अंगूठी ले आऊँगी।" मल्लिका ने कहा।

वह फिर एक बार रात के समय गई, और राक्षस के पलंग के नीचे छुपकर बैठ गई। राक्षस खाना खाकर आया और उस पर लेटकर सोने लगा। पलंग से जो उसका हाथ लटक रहा था, उसमें अंगूठी थी। उसने बड़ी सावधानी से, उस अंगूठी को निकाल लिया। पर जब वह उसके हाथ में गिर रही थी, तो वह उठा और उसने उसे पकड़ लिया। "आहा....तो पकड़ी गई...." वह चिल्लाया।

"हाँ....जी।" मल्लिका ने दबी आवाज में कहा।

"मैंने कहा था न कि इस बार आओगी, तो जान ले लूँगा।" राक्षस ने कहा।

"जी, कहा तो था।" मल्लिका ने और धीमी आवाज में कहा।

"तुम बड़ी समझदार हो, एक बात पूछता हूँ। अगर तुमने ही मुझे पकड़ा होता, तो तुम क्या करते?" राक्षस ने पूछा।

"आपको एक बड़े बोरे में डालकर, उसमें ही एक कुत्ते, एक बिल्ली, एक बैंची और एक सुआ, रस्सी डालकर बोरा बन्द करके, जंगल में जाती और बड़ी से बड़ी डहनी तोड़कर लाती। उसका डंडा बनाकर तब तक बोरे को पीटती, जब तक तुम बेहोश न हो जाते।" मल्लिका ने कहा।

"तो, तुम यह करती! तो मैं भी तुम्हारे लिए वही करूँगा।" कहकर राक्षस एक बोरा लाया, उसमें एक कुत्ते और बिल्ली और बैंची और सुआ और रस्सी का टुकड़ा रखकर, बोरे का मुख बन्द कर दिया और एक लकड़ी लाने के लिए जंगल में गया।

मल्लिका, बैंची से बोरे को काटकर बाहर निकल आई। राक्षस की अंगूठी लेकर अपने रास्ते चली गई। थोड़ी देर में, राक्षस एक पेड़ तोड़ लाया और उससे खाली बोरे को पीटने लगा।

मल्लिका ज्योंहि अंगूठी लाई ज्योंहि राजा ने उसकी अपने तीसरे लड़के से शादी कर दी।

लड़कियाँ चली गईं। तलवार फेंक और अब अंगूठी के चले जाने के बाद, राक्षस बिल्कुल ही मुरदा-सा हो गया। इसके बाद उसने किसी को तंग न किया। उसका क्या हुआ, यह भी कोई न जानता था।

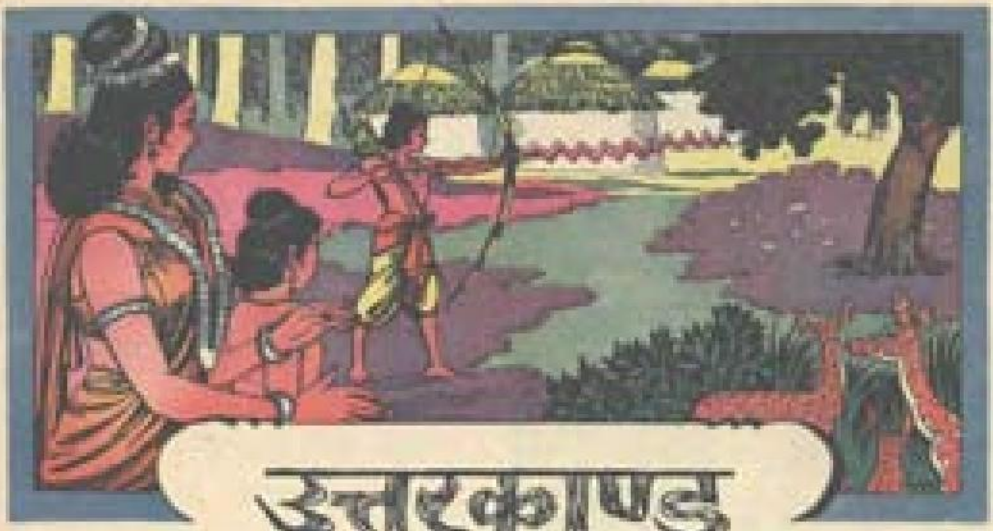

उत्तरकाण्ड

पाताल में सुमाली को मालूम हो गया कि उसके तीन पोतों ने ब्रह्मा से वर माँग कर लिए थे। मय के दूत चले जाने के बाद वह अपने मन्त्री मारीच, प्रहस्त, विरूपाक्ष, महोदर आदि को साथ लेकर, बड़े ज़ोर शोर के साथ रावण के पास गया। उसका आलिंगन करके उसने कहा—"बेटा, बहुत दिनों बाद आज मेरी इच्छा पूरी हुई है। हम जिस विष्णु के भय से लंका छोड़कर चले गये थे उस विष्णु का भय अब नहीं रहा, चूँकि अब तुमने ब्रह्मा से अच्छे वर पा लिए हैं। वस्तुतः लंका हम राक्षसों की ही है। उसे तुम्हारे सौतेले भाई कुबेर ने हथियाया हुआ है। मौका देखकर अच्छी बातों से नहीं तो धौंस धाँस देकर, या ज़बर्दस्ती तुम अपने भाई से लंका ले लो। तुम ही लंका के राजा बनो। यदि तुमने यह किया, तो तुम निर्वासित राक्षसों का उद्धार कर रहे होगे।"

सब सुनकर रावण ने कहा—"यह क्या बाबा! कुबेर हमारे लिए पिता के समान है। न तुम्हें यह कहना चाहिए न मुझे यह सुनना ही चाहिए।"

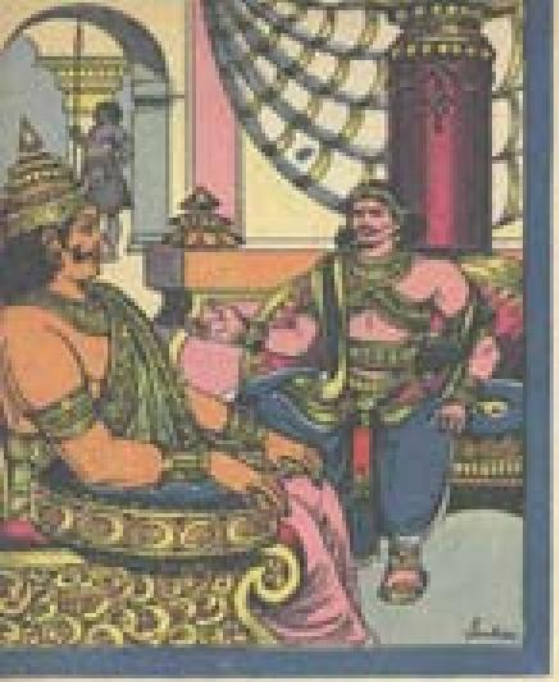

सुमाली और कुछ न कह सका। इसके बाद सुमाली के मन्त्रियों में से एक महल ने एकान्त में रावण के कान इस प्रकार भरे।

"भाई, जो बातें तुमने अपने बाबा से कही हैं, वे ठीक नहीं हैं। दूर के लिए भाई भाई में क्या भेद है! भाई भाई की शत्रुता शुरू से चली आ रही है। अदिति और दिति बहिनें थीं। दोनों सगपन मामा की पत्नियाँ बनीं और एक ने देवताओं को जन्म दिया और दूसरों ने राक्षसों को। परन्तु विष्णु ने राक्षसों को मारकर तीनों लोक देवताओं को दे दिये। यह लंका ही नहीं सभी सारा संसार राक्षसों का था। हम तुमसे कोई मकत काम करने के लिए नहीं कह रहे हैं। यह जन्मजात तो पहिले से ही चला रहा है। इसलिए जैसा मैं कहूँ वैसा करो।"

रावण थोड़ी देर सोचने के बाद मान गया। उसने महल को दूत बनाकर कुबेर के पास भेजा और उससे यह पुछवाया—"भाई अब जो तुम्हारे आधीन लंका है, वह असल में राक्षसों की है। यदि तुमने सीधी तरह लंका राक्षसों को वापिस दे दी, तो तुम न्याय कर रहे होगे और अपने एक छोटे भाई की इच्छा पूरी कर रहे होगे।"

महल ने जब ये बातें रावण की ओर से कहीं, तो कुबेर ने रावण की बातों का दूसरा उत्तर दिया—"भाई, जब मुझे हमारे पिता ने यह लंका नगरी दी थी, तब वहाँ कोई राक्षस न था। मैं और मेरे यक्ष वहाँ रह रहे हैं। मेरा राज्य, मेरी नगरी, मेरा वैभव क्या तुम्हारे नहीं है! जानो। सुख से राज्य करो। हम एक पिता के

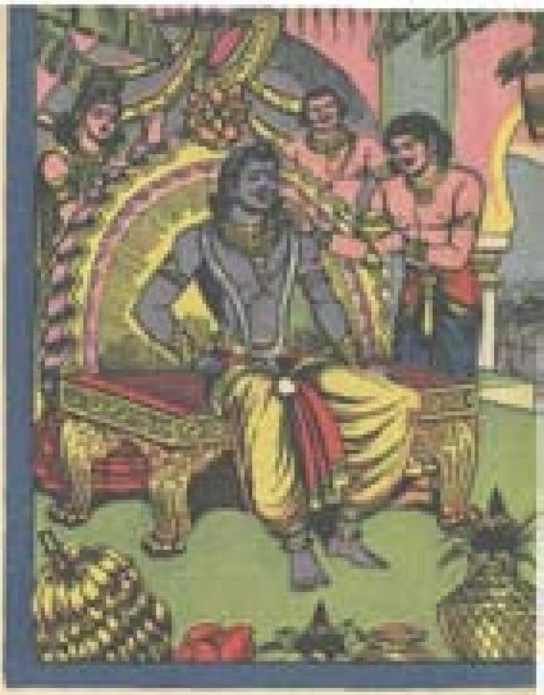

पुत्र हैं। क्यों भला हम में भेदभाव आने! हम भैया से क्यों न रहें!"

यह कहकर प्रहस्त को भेज दिया और कुबेर पुष्पक पर सवार होकर अपने पिता के पास गया और जो कुछ हुआ था, उसे सुनाया।

विश्रवसु ने कुबेर की बातें सुनकर कहा—"बेटा, मैं एक बात कहता हूँ। सुनो। राक्षस से जब यह बात मुझ से कही, तो मैं बड़ा बिगड़ा। अब उसे वर जो मिल गये हैं, इसलिए बड़े घमंड में है। तुम लंका छोड़ दो। कैलास पर्वत में जाओ और वहीं रहो। वहाँ मन्दाकिनी नदी में सोने के कमल हैं। उस पर्वत पर हमेशा देवता, गन्धर्व, अप्सराएँ, किन्नर घूमते रहते हैं। परन्तु खिलाफ तुम राक्षस से वैर न मोल लो।"

कुबेर ने पिता की सलाह का पालन किया। वह अपनी पत्नी, बच्चे और मन्त्री, नौकर चाकर, धन, वाहन आदि लेकर, कैलास पर्वत पर चला गया।

प्रहस्त रावण के पास गया। उसने प्रसन्न होकर कहा—"राक्षस! लंका अब खाली हो गई है। कुबेर वहाँ से चला गया है। वहाँ हम सबको ले जाकर राज्य करो।"

रावण अपने भाइयों और सेना को साथ लेकर लंका गया। वहाँ वैभव के साथ उसका राज्याभिषेक हुआ। राक्षसों के आते ही, लंका में रौनक आ गई। इधर लंका पर रावण शासन कर रहा था और उधर अलका नगर में कुबेर राज्य कर रहा था। रावण जब लंका का राजा हो गया, तो उसने अपनी बहिन शूर्पणखा का, कालकेय वंश के विद्युज्जिह्व से वैभवपूर्वक विवाह कर दिया।

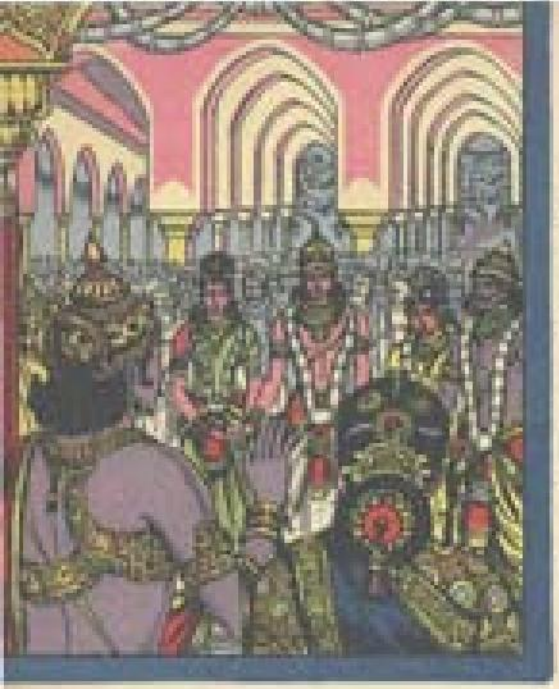

कुछ समय बाद रावण शिकार के लिए गया। जंगल में एक महापुरुष के साथ एक लड़की को देखकर उसने पूछा—"आप कौन हैं? निर्जन वन में आप इस लड़की के साथ क्यों घूम फिर रहे हैं?"

इस पर उस महापुरुष ने कहा।

"बेटा, मैं दिति का लड़का हूँ। मेरा नाम मय है। तुमने हेमा नाम के अप्सरा के बारे में सुन ही रखा होगा। देवताओं ने मेरा हेमा के साथ विवाह किया और यह लड़की हम दोनों की सन्तान है। इसका नाम मन्दोदरी है। चौदह साल पहिले हेमा मुझे छोड़कर स्वर्ग चली गई। इस लड़की के लिए मैं एक लड़का खोजता निकला हूँ। इस लड़की के अलावा मेरे दो लड़के भी हैं। एक का नाम मायावी है। दूसरे का नाम दुन्दुभी है। तुमने मेरे बारे में पूछा, मैंने बता दिया। अब तुम अपने बारे में भी तो बताओ।"

"मैं पुलस्त्य ब्रह्मा का पोता हूँ। विश्रवसु ब्रह्मा का लड़का हूँ। मेरा नाम दशग्रीव है।" रावण ने कहा।

यह जानते ही कि रावण महर्षियों के वंश में पैदा हुआ था, मय अपनी लड़की का उसके साथ विवाह करने के लिए तैयार हो गया। रावण भी मान गया, तुरत उसने वहाँ अग्नि तैयार की, अग्नि के समक्ष मय ने अपनी लड़की का, रावण के साथ पाणिग्रहण करवाया। तब उसने अपने दामाद को एक महाशक्ति दी। वह उसे बहुत तपस्या के बाद मिली थी। उसी से रावण ने युद्ध में लक्ष्मण को मूर्छित कर दिया था।

रावण अपनी पत्नी के साथ लंका गया। और अपने भाइयों के विवाह के प्रबन्ध में लग गया। वैरोचन की बेटी वज्रज्वाला

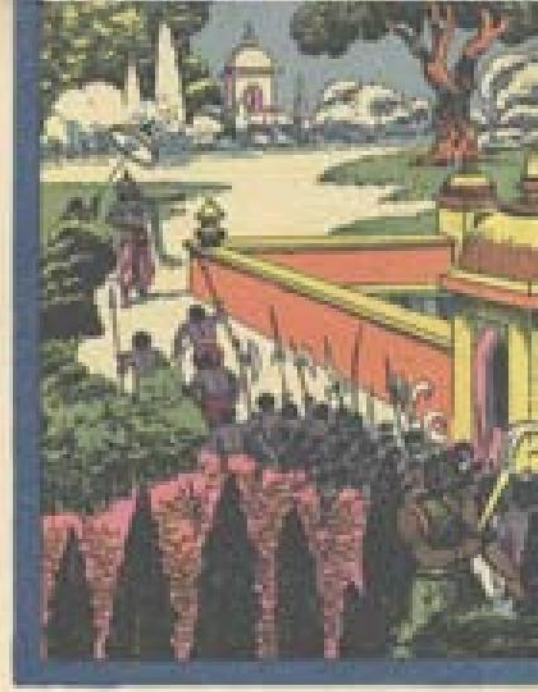

का कुम्भकर्ण के साथ, शत्रुंजय नाम के गन्धर्व राजा की लड़की सरमा का विभीषण के साथ विवाह करवाया।

तीनों भाई लंका में सुख के साथ गृहस्थी बिताने लगे। रावण की पत्नी मन्दोदरी ने मेघनाद को जन्म दिया। यह लड़का ज्योंहि पैदा हुआ, कहते हैं, बिजली की तरह गरजा। इसलिए उसका नाम मेघनाद रखा गया। उस लड़के पर माँ बाप को बहुत प्रेम था। यह मेघनाद ही लक्ष्मण के हाथ युद्ध में मारा गया इन्द्रजित था।

एक दिन रावण जब दरबार में था, कुम्भकर्ण ने ज़ोर से अंगड़ाई ली। उसने कहा—"भैय्या, मुझे नींद आ रही है। मेरे सोने के लिए कोई व्यवस्था करवाओ।" उस सुनकर नींद का कारण ब्रह्मा का वर ही था।

रावण ने कुम्भकर्ण को एक निद्रागृह तैयार करके दिया। वह बड़ा चौड़ा था और उसके दुगना लम्बा था। स्फटिक के शिलास्तम्भ थे, दान्त के तोरण थे। उसमें सोना और मणियाँ जड़ी हुई थीं। कुम्भकर्ण उसमें क्यों सोता रहा।

एक ओर तो कुम्भकर्ण सो रहा था और दूसरी ओर रावण अपने असाधारण बल के बूते पर देवताओं, ऋषियों, यक्षों और गन्धर्वों को सताने लगा। मदोन्मत्त हाथी की तरह रावण ने नन्दनवन आदि देवताओं के उद्यान बिलकुल तहस नहस कर दिए।

कुबेर को यह देख दुःख हुआ कि उसका भाई निन्दनीय कार्य कर रहा था। उसने वंश की मर्यादा के बारे में बताने के लिए रावण के पास एक दूत भेजा। उस दूत ने आकर, पहिले विभीषण को देखा।

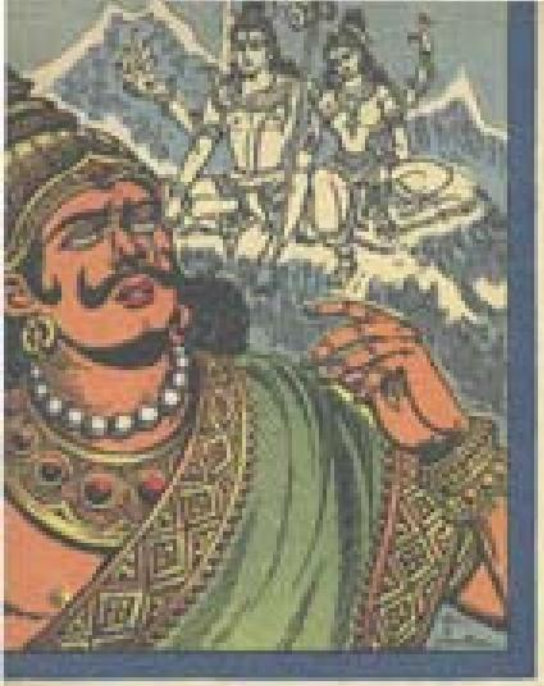

विभीषण ने दूत का यथोचित सत्कार किया। कुबेर आदि का कुशलक्षेम पूछा। फिर उसने जानना चाहा कि दूत किस काम पर आया था। उसने उस दूत का भरे दरबार में रावण से परिचय कराया।

दूत ने कुबेर की बातें रावण को इस प्रकार बताईं।

"भाई, अभी तो, तुम बहुत कीर्तिवान हो। इससे सन्तुष्ट हो जाओ। अब से तुम यथासम्भव उत्तम मार्ग पर चलने की कोशिश करो। मैंने स्वयं वह नन्दनवन देखा है, जिसे तुमने ध्वंस कर दिया था। सुना है, तुमने ऋषियों को भी मरवा दिया है। सुना है, वे देवता जिनको तुमने सताया है, तुम से बदला लेने की सोच रहे हैं। मैं पिछले दिनों रौद्रव्रत को निर्विघ्नपूर्वक करने के लिए हिमालय गया। वहाँ शिव और पार्वती को मैंने देखा। मैं पार्वती के सौन्दर्य का शिकार हुआ। मेरी बाँयी आँख उस पर पड़ी। तुरत मेरी आँख जल गई और विकल वर्ण की हो गई। फिर मैं उस पर्वत से एक और जगह गया और वहाँ मैंने रौद्रव्रत आरम्भ किया। व्रत का नियम पूर्ण होते ही, ईश्वर सन्तुष्ट हुए। उन्होंने कहा कि कभी उन्होंने भी यह व्रत किया था। उसके बाद मैंने ही यह व्रत किया था। इसलिए उन्होंने मुझे अपना मित्र रहने के लिए कहा। मेरा नाम एकाक्षी पिंगल भी रखा। उससे विदा लेकर, जब मैं घर पहुँचा, तो तुम्हारे कारनामों के बारे में सुनना पड़ा। तुम ये काम छोड़ दो। इससे हमारे वंश की बदनामी होती है। मैं यह भी सुन रहा हूँ कि ऋषि और देवता मिलकर तुम्हारा नाश करने की सोच रहे हैं।"

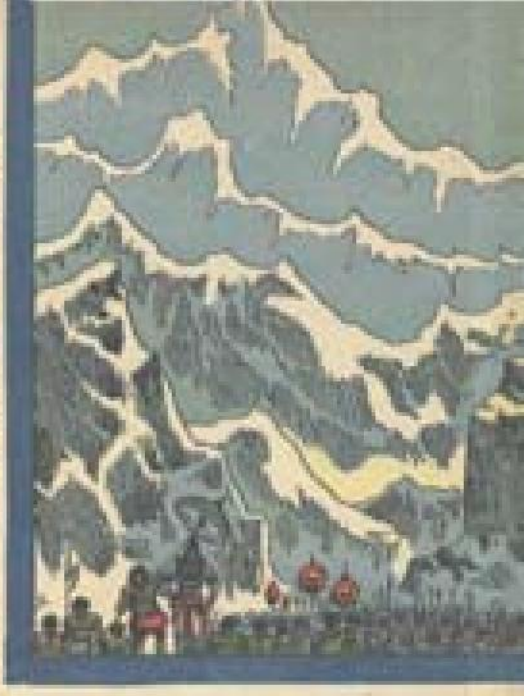

कुबेर की ये बातें सुनकर, रावण ने क्रुद्ध होकर कहा—"देखो दूत इन बातों के कहनेवाले तुम्हारा और सहलानेवाले मेरे भाई का मैं क्या करता हूँ! कुबेर मुझे उपदेश देने निकला है! समाचार भेजता है कि उसे शिव का स्नेह मिला है! बड़ा है। पिता समान है, इसलिए इतने साल मैंने उसे मारा नहीं। तुम्हारी बातें सुनकर मैं तीनों लोकों को जीतना चाहता हूँ। मेरे भाई के कारण जो दिक्पालक बच गये थे, उनको भी जीतूँगा।" कहते हुए उसने कुबेर के दूत को तलवार से काट दिया और उसके टुकड़े राक्षसों को खाने लिए दे दिये। यात्रा के लिए तैयार हो गया। रथ पर सवार होकर तीनों लोकों की विजय के लिए निकल पड़ा।

उसने पहिले पहल कुबेर पर ही आक्रमण करने की ठानी। महोदर, महापार्श्व, मारीच, शुक, सारण, धूम्राक्ष, महासुर मन्त्रियों के साथ निकल पड़ा। थोड़े समय में नदी, पर्वत, वन आदि पार करके कैलास पर्वत पहुँचा। वहाँ रावण और उसके साथियों को देखकर यक्षों ने यह जानकर कि वह कुबेर का भाई ही था, कुबेर को इसकी खबर दी। तुरत कुबेर ने अपने यक्षों को रावण का मुकाबला करने के लिए भेजा। भयंकर युद्ध हुआ और उन्होंने रावण और उसके साथियों को घेर लिया। यति राक्षस मन्त्री ने हजार हजार यक्षों से युद्ध किया और रावण ने यक्षों का उसी प्रकार संहार किया जिस प्रकार आग सूखी घास का करती है। सब में जो यक्ष मरने से बच गये थे, वे भाग गये।

यह सुनकर कुबेर ने कुछ और यक्षों को रावण का मुकाबला करने के लिए

भेजा। उनमें संयोधकंटक एक था। मारीची पर उसने चक्रायुध का उपयोग किया, इस प्रकार प्रहार किया कि वह पहाड़ से लुढ़क जाये। जब सम्भलकर मारीची ने उस पर हमला किया, तो वह भाग गया।

लंका नगरी के प्रवेश द्वार को रोके खड़े हुए पक्ष को राक्षस ने मार दिया। उसके बाद वह मैदान से भाग गये और नदियों और गुफाओं में छुप छुपा गये।

दूसरी बार भेजे गये वक्षों को पराजित देखकर कुबेर ने बलिमद्द नाम के महायक्ष को राक्षसों पर हमला करने के लिए भेजा। वह चार हजार यक्षों को लेकर युद्ध करने लगा। वे सब जब बहुत से वृक्षों को लेकर, राक्षसों पर हमला करने लगे, तो राक्षस भागने लगे। फिर दोनों पक्षों में द्वन्द्व युद्ध हुआ। उस युद्ध में प्रहस्त ने एक हजार, महोदर ने एक और हजार और मारीच ने दो हजार यक्षों को मार दिया। बिचारे यक्ष जो माया-वाया नहीं जानते थे भला कैसे राक्षसों के सामने टिकते!

फिर भी बलिमद्द ने घमासान युद्ध किया। भूधर ने उसे छाती पर मारा, तो उसने अब अपनी गदा घुमा घुमाकर उसके सिर पर मारी, तो भूधर ने चूक चाटी। यह देख रावण ने बलिमद्द पर हमला किया। बलिमद्द ने रावण पर तीन शक्तियों का उपयोग किया, पर उसने उसकी परवाह न की और बलिमद्द के सिर पर उसने प्रहार किया। उस चोट के कारण बलिमद्द का मुकुट एक तरफ टूट गया। इसलिए उसका नाम पार्श्वमौली पड़ा।

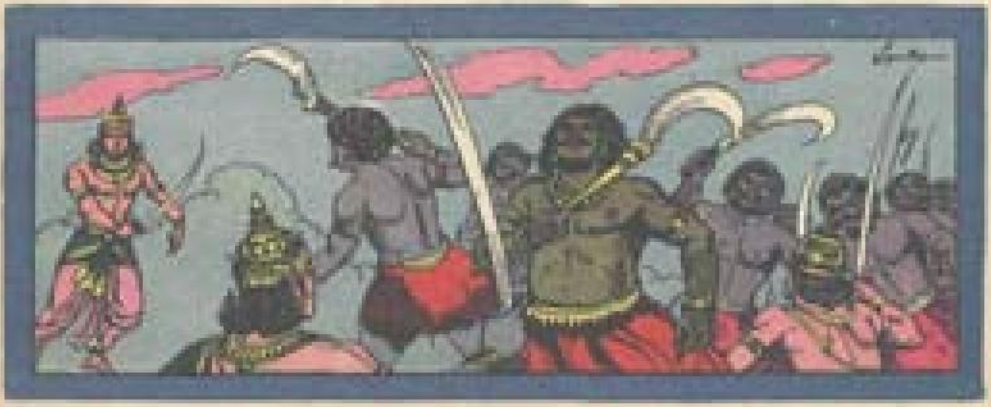

१. एक राजमहल में एक चौकर लड़का हुआ करता था।

२. जब अगले दिन होनेवाली दावत के लिए वह सजावट कर रहा था तो राजसिंहासन कमरे के अन्दर आता दिखाई दिया।

३. मन्त्रिवर ने कोई मन्त्र पढ़ा और कमरे में धुआं ही धुआं भरने लगा।

४. मन्त्रिवर ने उस हीरे को अपनी ओर घुमाया।

५. उसने एक बोतल निकाली, उसमें हीरा भरकर डाट लगा दिया।

६. लड़के को बोतल में एक लड़की की आकृति दिखाई दी। मन्त्रिवर चला गया।

१. राजा चकराया, मालिक को साथ लेकर कमरे में आया। राजकुमारी नहीं दिखाई दी।

२. मालिक ने कहा कि किसी और दुष्ट मालिक ने यह चुराया जो है।

३. "मैंने उस दुष्ट को कल रात को बाहर के बाहर देखा था। कहाँ तो...."

४. मालिक को नज़र चोरी के कारण एक पल के लिए में राजकुमारी का मुख दिखाई दिया। वह कुछ थी।

५. "आपके भाई का हार सलिलाता है, यदि यह मुझे दिया गया, तो मैं राजकुमारी को रक्षा करूँगा।" मालिक ने कहा।

६. राजा हार ले रहा था कि ऊपर से सुनाई दिया—" रुक जाइये...यह सच्ची भी भगवान है।"

१. इतने में बालिक हार कैकर रोहनदत्त से कुश्ती अहाड़ हो गया।

२. लड़का ऊपर से कूदा आया और जो कुछ उसने अपनी आँखों देखा था, वर्ष सुना दिया।

३. राजा ने गुस्से में आकर मन्त्र चलाने वाले को दण्ड देना चाही।

४. एक भूत प्रगट हुआ। भूत होकर उसने अपनी दुखदाता दिखाई, जब राजा ने उसकी महायता माँगी, तो उसने कहा कि यह मनुष्य की सहायता नहीं कर सकता था।

५. "बोड़ा राजकुमारी को राजा नहीं कर सकते। रोहिताश्व पार चाहे, बालिक के लिये एक मुट्ठिका अहाड़ा है।" भूत ने लड़के से कहा।

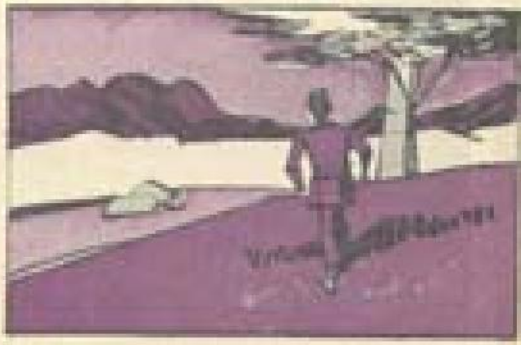

६. लड़का निकल पड़ा। चलते-चलते पहाड़ बच्चों रास्ते में दिखाई दिये।

१. वह पहाड़ पार करने लगा।

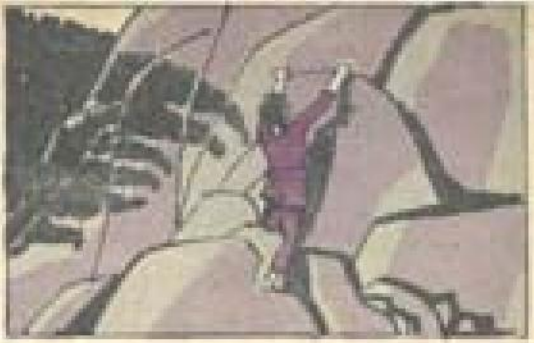

२. जब वह कुछ दूर गया, तो उस पर एक बड़ी छाया पड़ी।

३. एक बड़ी चील उसके पंख कर,

४. पहाड़ पर ले गई।

५. और दूसरी ओर उतार दिया।

६. लड़का घबराया, पर बिना पीछे देखे, वह आगे की ओर भागने लगा।

१. "मैं अपने ही मनुष्यों की सहायता न कर पाऊँ, पर सिंहों से उनकी सहायता करवा सकता हूँ।" पुरु का कहना लड़का न जानता था।

२. आने भयानक है। सूर्य की कसम, उसे कोई नहीं पार कर सकता।

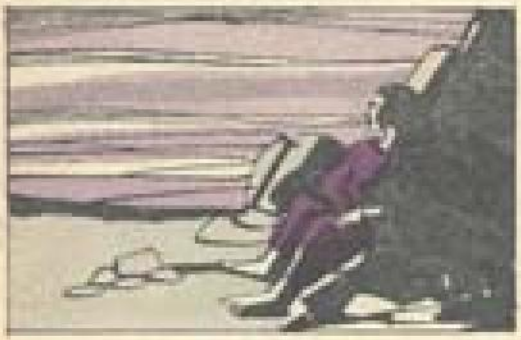

३. लड़का, सूर्यास्त तक रुका रहा। रात के समय निकल पड़ा।

४. सीढ़ी पर चढ़ी कीपकर वह भागने लगा।

५. सूर्योदय के समय, सान्तिक का किला उसे सामने दिखाई दिया।

६. "खोई के काम में सहायता करनेवाली औरतों चाहिये।" लड़के ने कहा।

१. लड़के का काम, मालिक के भोजन को पहिले चखकर देखना था, मालिक से उसे पहिचाना न था।

२. मालिक की शराब में लड़के ने बेहोशी की दवा मिला दी। मालिक बेहोश हो गया।

३. लड़के ने द्वार के छिद्र। उसमें बड़ी शक्ति आ गई।

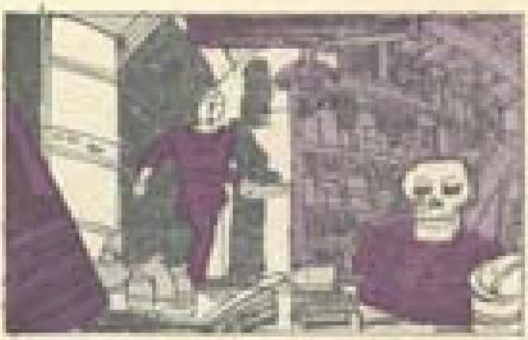

४. तुरत वह मालिक के कारखाने में गया।

५. वह कोठरी दिखाई दी, जिसमें राजकुमारी कैद थी।

६. वह यह जानने के लिए कि उसको छुड़ाने का क्या उपाय था, दुलारे पूछ रहा था कि उसको बाहर कुआँ है।

५. जब मालिक चीखा था, तो वह चोखा साथ गया।

६. लड़का जाकर ले आ गया। इतने में एक चूहे ने कहा—"इस बोतल को तैयार कीजो।"

७. यह चूहा भी मूत का नित्य का। तैयार होने के बाद, लड़का चूहे के बराबर हो गया।

८. "मेरे साथ आओ।" चूहे ने कहा।

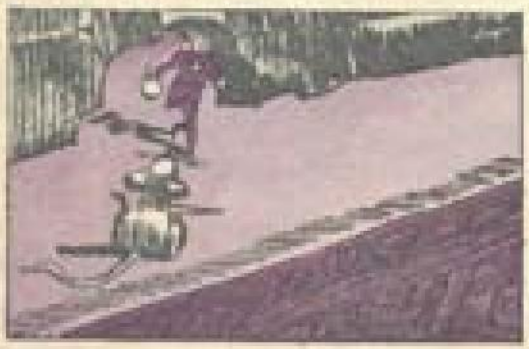

९. वे दोनों एक और कमरे में गये। वहाँ चार की कतीज थी।

१०. फिर लड़का, अपने किसी काम में लग गया और कागज पर लकीर खींच रहा।

१. लड़के ने राजमहल में पहुँचकर

२. राजा को बोतल दी।

३. राजा का हार ज्योंहि बोतल को पहिनाया गया

४. ज्योंहि राजकुमारी फिर कन्या होकर बोतल में से बाहर निकली।

५. राजा ने अपनी लड़की का उस लड़के के साथ विवाह किया, सब सुख से रहने लगे।

भद्रायुकी कथा

दूषार्ण देश का राजा वज्रबाहु था। उसकी मुख्य रानी सुमति थी। वज्रबाहु की सुमति के अलावा और भी पत्नियाँ थीं। कुछ समय बाद, मुख्य रानी सुमति गर्भवती हुई और पत्नियों वह न देख सकीं। उन्होंने उसको कोई दवा दे दी।

सुमति ने एक लड़के को जन्म दिया। चूँकि उनको दवा दी गई थी, इसलिए माँ और पुत्र बीमार हो गये। उनको हमेशा छटपटाते, तड़पते, रोते देख, वज्रबाहु महाराजा सिद्ध गया। इसलिए उसने सुमति और उसके लड़के को, वन में छोड़ आने के लिए सैनिकों को आज्ञा दी।

वन में छोड़ देने के बाद, सुमति अपने लड़के के साथ, जैसे भी हो, वैशपुर पहुँची। वहाँ उसने एक वैश्य के घर आश्रय पाया। वैश्य की पत्नी ने सुमति की कई तरह से मदद की, पर वह भी उसके लड़के को न बचा सकी। वह लड़का, वहीं उस वैश्य के घर पर मर गया। सुमति के दुःख की सीमा न थी।

जब वह दुःखी थी, तो वहाँ एक योगी आया और उसने सुमति को तत्वज्ञान देना चाहा। पर सुमति के कुछ पल्ले न पड़ा। वह पति से छोड़ दिये जाने के कारण बेसहारा हो गई थी। अब लड़का भी न था कि उसके लिए कष्ट उठाती जिन्दगी बसर कर दे। उसे अपना भविष्य बिल्कुल अन्धकारमय लगा। उसने भी अपने लड़के की तरह मरने का निश्चय किया।

योगी को सुमति की हालत देखकर दया आई। उसने थोड़ी-सी भस्म लेकर,

मरे हुए लड़के के शरीर पर लगाई। तुरत वह शिशु यूँ उठ पड़ा, जैसे सोकर उठा हो। योगी ने उस लड़के का नाम भद्रायु रखकर उसको आशीर्वाद दिया।

इसके बाद, वह भद्रायु वैश्य के लड़के के साथ, उसके घर ही बड़ा होने लगा। कुछ दिनों बाद कपन योगी उस लड़के को देखने आया। उसे शिवकवच मन्त्र दिया। चन्द्रहास नाम के लड़का को उसने उपहार में दिया। उसे उसने एक शंख भी दिया।

कुछ और समय बीता। मगध राजा ने दशार्ण देश पर हमला किया। युद्ध में दशार्ण का राजा वज्रबाहु पराजित होकर, राज्यभ्रष्ट हो गया। मगध के राजा ने दशार्ण राज्य पर कब्जा कर लिया।

वैश्यपुर में भद्रायु को भी मालूम हुआ कि उसका पिता, मगध राजा से पराजित होकर, राज्यभ्रष्ट हो गया था। वह चन्द्रहास तलवार और शंख लेकर, रथ पर सवार हो, अपने मित्र वैश्य के लड़के को रथ का सारथी बनाकर, दशार्ण देश गया। उस पर कब्जा किये हुए मगध सेना से, उसने अकेले युद्ध किया। उसने मगध राजा को हरा दिया। अपने पिता को फिर राज्य दिलाकर, स्वयं वैश्यपुर वापिस चला गया। वज्रबाहु को यह भी न मालूम था कि उसका लड़का ही उसका राज्य वापिस दे गया था।

चन्द्रांगद राजा की कीर्तिमालिनी नाम की लड़की थी, उचित वर प्राप्त करके, उसका विवाह करना था। भद्रायु को जिसने बचपन में आयु दी थी, वह कपन योगी चन्द्रांगद के पास गया। भद्रायु का वृत्तान्त बताकर उसने कहा—"तुम अपनी लड़की कीर्तिमालिनी का भद्रायु के साथ विवाह करो।"

इस सलाह के अनुसार, चन्द्रांगद ने अपनी लड़की के विवाह का मुहूर्त निश्चय किया। वैशपुर में रहनेवाले मद्रायु को उसने निमन्त्रण भेजा कि वह आकर उसकी लड़की से विवाह करे। यह निमन्त्रण पाकर मद्रायु गया और उसने कीर्तिमालिनी से विवाह कर लिया। इस विवाह में और राजाओं के साथ वज्रबाहु भी आया। उसने मद्रायु को पहिचानकर, चन्द्रांगद से कहा—"इस लड़के ने ही मेरे शत्रुओं को जीता था, मेरे राज्य को फिर मुझे वापिस दिया था। कौन है यह?"

"आप नहीं जानते! यह आप का लड़का है। आपकी बड़ी पत्नी सुमति भी यहीं है।" कहकर चन्द्रांगद ने सुमति को बुलाया।

अपनी पत्नी सुमति और लड़के के साथ जो अन्याय किया था, उसे सोच वज्रबाहु बड़ा पछताया। वह अपनी पत्नी, पुत्र और वधु को लेकर अपनी राजधानी ले गया। मद्रायु का उसने राज्याभिषेक करवाया और स्वयं राज्य शासन उसने छोड़ दिया।

मद्रायु के राज्य काल में एक विचित्र बात हुई। एक बार मद्रायु, कीर्तिमालिनी

वन विहार करके, एक पेड़ के नीचे विश्रान्ति कर रहे थे कि उनको किसी ब्राह्मण का चिल्लाना सुनाई दिया "बचाओ, बचाओ।"

मद्रायु जब उठा, तो उसने देखा कि एक स्त्री को कोई शेर घसीटकर ले जा रहा था और वह स्त्री भय से चिल्ला रही थी।

"मेरी पत्नी को शेर पकड़कर ले जा रहा है। बचाओ।" ब्राह्मण कह रहा था।

मद्रायु ने धनुष पर बाण चढ़ाकर शेर पर मारे। परन्तु उस शेर का बाल कुछ न बिगाड़ सके। वह ब्राह्मण की स्त्री को घसीटती किसी तरफ ले गया।

"तुम भी क्या राजा हो, जो एक स्त्री की रक्षा न कर सके। तुम्हारा चन्द्रहास कहाँ है! शंख कहाँ है!" ब्राह्मण ने मद्रायु की निन्दा की।

मद्रायु ने उस ब्राह्मण से कहा—"क्षमा कीजिये। आपकी क्षति की मैं कल्पना न कर सका। आप ही बताइये कि आप क्या क्षति पूर्ति चाहते हैं। यह है मेरी पत्नी और यह है मेरा देह और यह है मेरा देश। जो आप चाहें, आप ले लीजिये।"

ब्राह्मण ने बहुत सन्तुष्ट होकर कहा—"बेटा, तुम में कितना साहस है! यह सब मैंने तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए ही माया रची थी। मेरी पत्नी को कोई शेर नहीं ले गया है। वह यहीं है।" कहते हुए उसने अपनी पत्नी को बुलाया। वह राजा के सामने आयी। फिर उस ब्राह्मण दम्पति ने राजा और रानी को आशीर्वाद दिया और वे अपने रास्ते चले गये।

४७. साना नगर का द्वार

प्राचीन समय में येमेन में बहुत बड़ी सभ्यता थी। साना उनका मुख्य नगर था। इस नगर के आठ द्वार थे। उनमें से एक यहाँ चित्रित है। राजमहलों को इस द्वार द्वारा ही जाया जाता था। इस नगर पर शासन करनेवाली मलिका रानी का सालमेन से मिलने की कथा बाईबल में मिलती है।

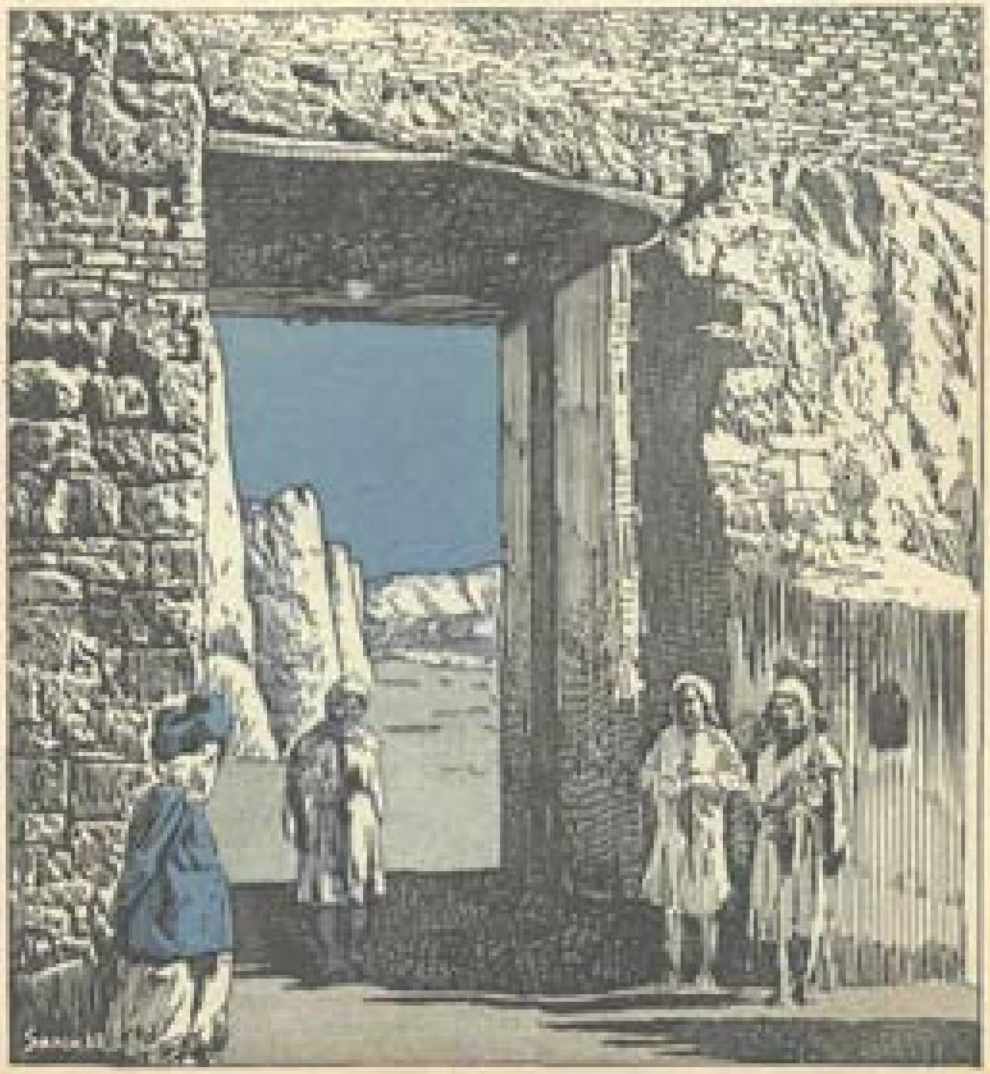

Photo by Bhalchandra Kadne

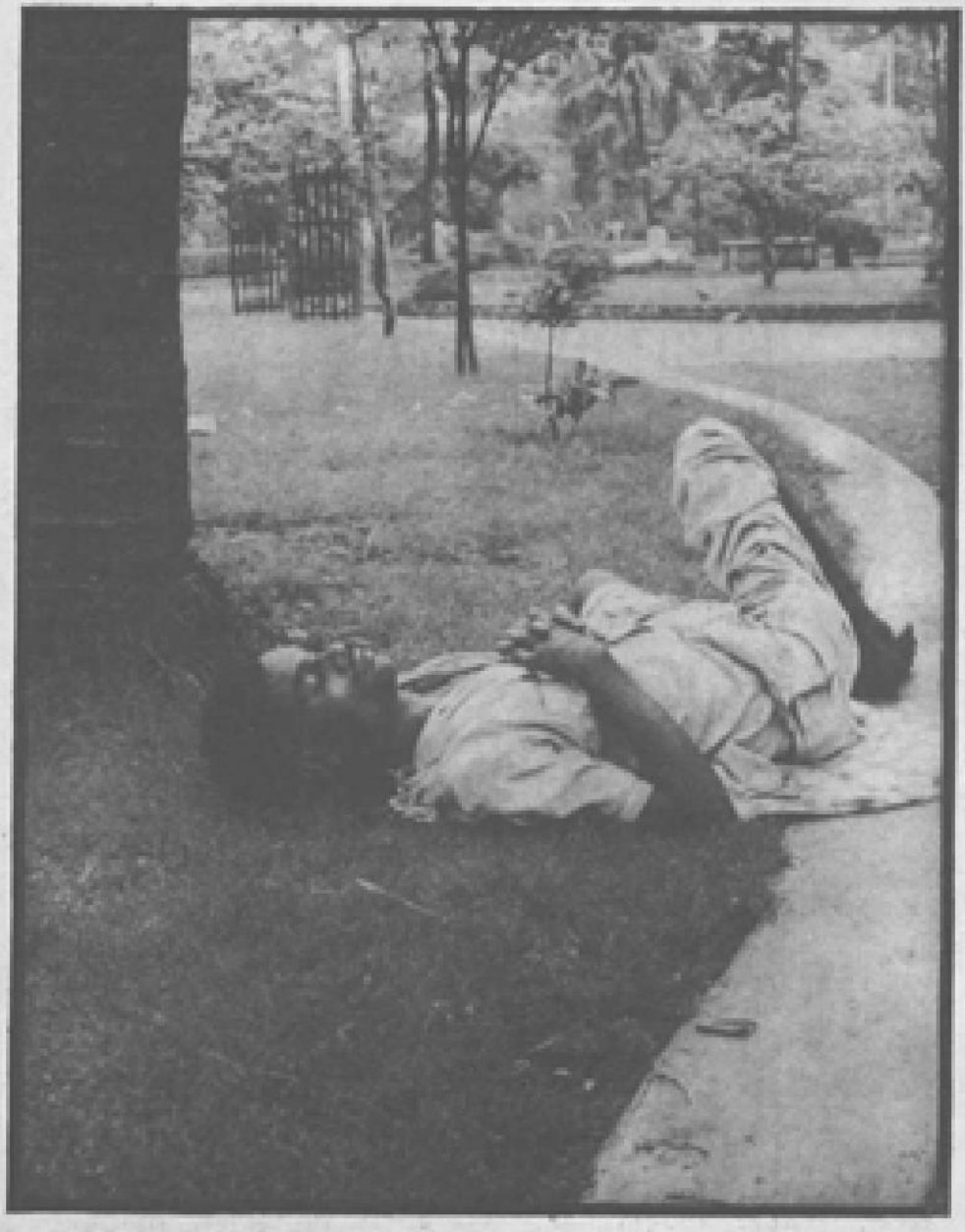

पुरस्कृत
पत्रिकायोक्ति

इस वले है सुप्त पथिक!

प्रेषक:
प्रवीण नौटियाल - देहरादून

Photo by Devidas Kasbekar

पुरस्कृत
छविकथोक्ति

सो जा तू चुपचाप श्रमिक !!

प्रेषक :
प्रवीण नौटियाल - देहरादून